अमरावती

कुछ वर्ष पहले की बात है। पूस के महीने में एक दिन देवराज इन्द्र अपनी बैठक में बैठे हुए वरुण से बातचीत कर रहे थे। जाड़े के दिनों में पृथ्वी पर वर्षा की इतनी आवश्यकता नहीं पड़ा करती, शायद इसी लिए या अन्य किसी कारण से जल के स्वामी वरुण कुछ दिनों के लिए रुखसत लेकर घर आये हुए थे। घर पर कोई काम-काज था नहीं, इसलिए मनोविनोद की इच्छा से वे इन्द्र के यहाँ प्रतिदिन ही आया करते और गप-शप तथा ताश या पाँसा आदि के खेल में घंटों व्यतीत किया करते। आज कोई खेल नहीं जम सका था, केवल गप-शप हो रहा था, और जल्दी-जल्दी पान-तम्बाकू के बीड़े पर बीड़े उड़ रहे थे। बात ही बात में इन्द्र ने कहा—देखो वरुण, सत्य, त्रेता तथा द्वापर आदि तीन युग बीत गये। चौथा कलि भी बराबर बीतता ही जा रहा है। प्राचीन काल के राजा अश्वमेध आदि यज्ञों के उपलक्ष में हम लोगों का आह्वान किया करते थे। इसलिए समय-समय पर मृत्युलोक देखने का अवसर हमें मिल जाया करता था। परन्तु आजकल वे यज्ञ आदि होते नहीं, इसलिए हमारा भी वहाँ का आना-जाना एक प्रकार से बन्द हो गया है। आजकल तो लोग साधारण से साधारण कार्यों के उपलक्ष में "ॐ प्रजापतये", "ॐ इन्द्रादिदशदिक्पालेभ्यः" कहकर हमें स्मरण किया करते हैं अवश्य, परन्तु यह सोचकर कि कदाचित् वहाँ जाने पर मुनक्का-छुहारा आदि न पा सकूँ, वहाँ जाने की इच्छा मुझे कभी नहीं हुई। कुछ पता, पृथ्वी पर क्या होता है। सुनते हैं वहाँ आजकल बम्बई में कितने ही खेल और तमाशे हैं, जब उनमें बिना पैसेवाले दूर-दूर आदमी भी आनन्द-

लोहे की पटरियों पर भाप के बल से चला करता है। इस वाष्पीय रथ को लोग रेलवे ट्रेन भी कहा करते हैं। ट्रेन में पहली, दूसरी, तीसरी तथा मध्यम श्रेणी की बहुत-सी गाड़ियाँ होती हैं और जो जितना पैसा खर्च कर सकता है, उसी हिसाब से उत्तम या निम्न श्रेणी में यात्रा भी कर सकता है। बोझा इस पर जितना अधिक हो, उतना ही यह खींच सकती है।

वाष्पीय रथ या रेलवे-ट्रेन का वर्णन सुनकर देवराज इन्द्र मुग्ध हो गये। उन्होंने कहा—आहा, इतना अद्भुत रथ भी अँगरेजों ने बना रक्खा है? तब तो किसी न किसी दिन मृत्युलोक में चलकर अवश्य अपने नेत्रों को सार्थक कर आना चाहिए। चलो, ब्रह्मलोक में चलकर पितामह को भी चलने पर सहमत करने का उद्योग किया जाय। हम लोगों को तो फिर भी देखने-सुनने के लिए अभी बहुत समय है। परन्तु पितामह उस अवस्था में आ पहुँचे हैं कि दो दिन में यदि कूच करके उनके प्राण निकल गये तो कलकत्ता-जैसा सुन्दर स्थान उन्हें देखने को रह जायगा। यह खेद मेरे मन से फिर कभी दूर न होगा। इसलिए किसी कौशल से ब्रह्मा को मृत्युलोक में ले ही चलना चाहिए। वहाँ पहुँचने पर वे जब यह देखेंगे कि मेरी सृष्टि के भीतर भी एक आश्चर्यजनक सृष्टि हुई है तब दंग रह जायँगे। अन्त में मातलि को रथ सजाने की आज्ञा देकर वज्र को लिये हुए इन्द्र अन्तःपुर में गये और स्नान-पान आदि से निवृत्त होकर ब्रह्मलोक की ओर चले।

ब्रह्मलोक

ब्रह्मा के [illegible] में बहुत भीड़ भाड़ कम नहीं थी। इधर कई वर्षों से नयी सृष्टि न होने के कारण [illegible] की आय का द्वार बन्द था और बहुत-सी [illegible] बेरोजगार रही थीं। इस [illegible] हुए

इन्द्र ने कहा—पितामह, आपको कौन-सी ऐसी सतोषप्रद बात मालूम पड़ी, जिसके कारण आप इस प्रकार हँस रहे है ?

ब्रह्मा ने कहा—भाई, अँगरेजों के राजत्व-काल में पतित-पावनी गङ्गा को मैं फिर अपने कमण्डलु में प्राप्त कर सकूँगा। आहा, मेरी प्यारी गङ्गा को भगीरथ जब मृत्युलोक में ले गये है तब से वह कितने क्लेश में है । उसके विछोह के कारण मैं भी बहुत दुखी हूँ । अब इतने दिनों के बाद मेरा दुख दूर होगा । गङ्गा कुछ ही वर्ष और नर-लोक में है ।

वरुण ने कहा—निस्सन्देह मा के दुख की सीमा नहीं है। उन्हें कलकत्ता का मल-मूत्र बहाने का कार्य करना पड़ता है । पहले जिस प्रवाह को धारण करने में ऐरावत नहीं समर्थ हो सके, वही प्रवाह आज अँगरेजों से परास्त हो गया है । अँगरेज लोग उसे खोदकर इच्छानुसार कहीं भी ले जाते हैं । इधर हावड़ा और हुगली के पास उसे बाँध भी दिया है। जब कभी मैं उनके समीप जाता हूँ तब कल-कल शब्दों से रोते-रोते वे कहती हैं—वरुण, शायद मेरे भाग्य फूट गये हैं । पिता जी शायद अब जीवित नहीं हैं, अन्यथा मेरी यह दुःसमय अवस्था देखकर वे कभी निश्चिन्त नहीं रह सकते थे। अन्त में वरुण ने बहुत ही आग्रह के साथ एक बार मृत्युलोक में चलकर गङ्गा को देख आने के लिए ब्रह्मा से निवेदन किया। ब्रह्मा ने रोते हुए स्वर में कहा—मेरी भी बड़ी इच्छा है एक बार पुत्री को देख आने की। परन्तु मुझमें अब इतना सामर्थ्य कहाँ है कि नर-लोक में जा सकूँ ? एक तो निद्रा के कारण परेशान हूँ, दूसरे शरीर में मेरे इतना बल नहीं है कि एक पग भी सुखपूर्वक चल सकूँ ।

इन्द्र ने ब्रह्मा जी से अँगरेजों के वाष्पीय रथ का गुण बखान किया और कहा कि आपको पैदल चलने की आवश्यकता न पड़ेगी । बड़े आराम से स्थान-स्थान पर विश्राम करते हुए हम आपको ले चलेंगे।

देवराज के इस प्रकार आश्वासन देने पर पितामह मृत्युलोक में चलने को तैयार हो गये और नारायण को बुला लाने के लिए उन्हें वैकुण्ठ भेजा।

वैकुण्ठ

भोजन करने के बाद लक्ष्मी अपने कमरे में पलंग पर बैठी हुई दरी बुन रही थीं। वेणी खोलकर अपने बाल उन्होंने लटका दिये थे। शरीर पर उनके खूब बारीक और आकर्षक किनारे की साड़ी थी, हाथ में नई से नई डिजाइन का कङ्कण था और कानों में इयरिंग थी। शरीर का रङ्ग साड़ी के बीच से निखरा पड़ रहा था। एक तो उनके अधर में स्वभाव से ही लालिमा थी, दूसरे वे पान खाये हुए थीं, इससे वह लालिमा और भी अधिक बढ़ गई थी। नारायण उनके समीप ही तकिया की टेक लगाये तथा फर्शी का नर्चा मुंह में लगाये हुए समाचार-पत्र पढ़ रहे थे और बीच-बीच में नारायणी के मुंह की ओर ताक-ताककर कुछ सोचने लगते थे। इतने में नौकर ने आकर सूचित किया कि आपके पास इन्द्र भगवान् और वरुणदेव आये हुए हैं।

यह समाचार पाकर नारायण बहुत उत्सुक हुए और नारायणी से कुछ क्षण के लिए अवकाश लेकर वे बाहर आये। पन्द्रह मिनट के बाद ही लौटकर उन्होंने कहा—प्रिये, मुझे आज्ञा दो, कुछ समय के लिए मैं मृत्युलोक में जाना चाहता हूँ। वहां जाकर कल की गाड़ी पर सवार होने तथा कलकत्ता देखने की मेरी बड़ी इच्छा है।

नारायण की यह बात सुनते ही नारायणी आग-बबूला हो उठीं। उनके हाथ में दरी का जो अंश था, उसे दूर फेंककर आँखें लाल-लाल किये हुए वे कहने लगीं—साथियों ने मिलकर ही तुम्हें खराब कर डाला है। भला कौन-सा मुंह लेकर तुम मृत्युलोक में जाना चाहते हो? क्या मृत्युलोक का नाम लेने में तुम्हें लज्जा नहीं आती? वहाँ जान

में तुम्हें डर भी न मालूम पड़ेगा? जरा सोचो तो कि सत्य, त्रेता तथा द्वापर-आदि युगों में मृत्युलोक में जाकर तुमने कितने उपद्रव किये हैं! वहाँ कितनी उथल-पुथल मचाई है! मुझे भी कितना क्लेश दिया है! क्या वह सब तुम्हें भूल गया जो मृत्युलोक का नाम ले रहे हो?

नारायण ने कहा—कलकत्ता देखने और कल की गाड़ी पर सवार होने की मुझे उत्कट इच्छा है, इसी लिए मैं वहाँ जा रहा हूँ और प्रतिज्ञा करके जा रहा हूँ कि तीन दिन से अधिक न लगाऊँगा।

नारायणी ने कुछ समय तक धैर्य रखने का अनुरोध किया और कहा कि कल्कि अवतार धारण करने के बाद खूब जी भरकर कल की गाड़ी पर सवारी करना और कलकत्ता की सैर भी कर लेना। इस समय तुम वहाँ मत जाओ। परन्तु नारायण जब बार-बार आग्रह करने लगे और अवधि के भीतर लौट आने का आश्वासन देने लगे तब नारायणी ने कहा—नाथ, क्यों मेरा जी जलाते हो? यह मैं लिखे देती हूँ कि वहाँ जाने पर तुम तीन दिन क्या तीन वर्ष में भी लौटकर न आ सकोगे। यदि वहाँ तुम्हें कोई आमंत्रित वेश्या मिल गई तो फिर तुम्हें मेरी याद आवेगी या स्वर्ग की ओर तुम लौटकर झाँकोगे? तब तो शायद तुम उसी के साथ मुर्गी, अंडा, शराब, कबाब, बिस्कुट, पावरोटी आदि खाकर जाति-धर्म तथा लोक-परलोक दोनों नष्ट कर दोगे। साथ ही हाथ में जो कुछ धन-सम्पत्ति है, वह सब भी कुछ दिनों में गँवा बैठोगे। या कहीं ब्राह्म-समाज में नाम लिखाकर विधवा-विवाह कर लोगे। कलकत्ता में थियेटर आदि और भी ऐसे कितने प्रलोभन हैं जो धनाढ्यों को दीवाला और फकीर बना देते हैं और मुझे भी उनका घर छोड़ देने के लिए बाध्य होना पड़ता है।

इतना कहकर नारायणी सिसक-सिसक कर रोने लगीं। परन्तु नारायण ने सोचा कि यदि मैं नारायणी के मोह में पड़कर इनकी इच्छा के अनुसार चलने लगूँ तब तो [illegible] का इतना बड़ा

न तो दिन है और न रात्रि। इसमें यात्रा उत्तम ही हुई है। आप निश्शंक अपने मन में दुविधा न आने दीजिए।

वरुण—हरिद्वार के दोनों ओर पर्वतश्रेणी है। बीच से तीन धाराओं में विभक्त होकर गङ्गा जी बह रही हैं। ये तीनों धारायें आकर कनखल में मिली हैं। पर्वतों में वास करने योग्य बहुत-सी गुफायें हैं। उनमें साधु लोग निवास किया करते हैं। हरिद्वार में साधुओं के कई मठ आदि भी हैं, किन्तु यहाँ गृहस्थ कोई नहीं रहता।

हमारे देवगण मकर-संक्रान्ति के दिन हरिद्वार में आकर पहुँचे थे। एक तो जाड़े की ऋतु थी, दूसरे पहाड़ी देश था। ऐसी दशा में वहाँ उस समय कितने कड़ाके का जाड़ा पड़ रहा था, इस बात का अनायास ही अनुमान किया जा सकता है। इसमें सन्देह नहीं कि देवतागण साथ में काफी गरम कपड़े लेकर आये थे, किन्तु वृद्ध ब्रह्मा को जाड़े के मारे बड़ा क्लेश मिला और वे कहने लगे—क्यों वरुण, यह हरिद्वार है या हिमद्वार है? ज़रा आग जलाओ, नहीं तो मैं अब न जीवित रह सकूँगा।

ब्रह्मा की यह दशा देखकर नारायण बहुत दुःखी हुए। उन्होंने कहा—आपको क्या पड़ी थी ऐसे जाड़े में मृत्युलोक में आने की?

ब्रह्मा ने कहा—क्या मुझे शौक लगा था मृत्युलोक में आने का? परन्तु गङ्गा को बाँध जो रक्खा है अँगरेज़ों ने।

वरुण ने कहा—हम लोगों ने अच्छा समझकर ही शीतकाल में मृत्युलोक की यात्रा की है किन्तु भाग्यवश हो गया उल्टा। यहाँ से थोड़ी ही दूर पर कुछ कुटीर दिखाई पड़े। उनमें से एक में जाकर देवताओं ने आश्रय लिया और बड़ी कठिनाई से आग जलाकर ब्रह्मा को तपाया। अब आग जल जाने के कारण देवताओं की ठिठक भी घट गई।

दो-चार चिलम तम्बाकू पीने के बाद जब कुछ चैन-सी आई तब वरुण ने कहा—सरकार, अभी हाल में हरिद्वार का कुम्भ-मेला हुआ है। [illegible]

की तपस्या से संतुष्ट होकर भगवती भागीरथी जब मृत्युलोक में
तब पहले-पहल इसी स्थान पर गिरी हैं। इसलिए यहाँ प्रत्येक बारह
के अन्तर पर एक अद्भुत बड़ा मेला हुआ करता है। यह मेला कुम्भ
के नाम से विख्यात है। महाप्रभु संक्रान्ति के दिन हरिद्वार में कु
योग होता है और उस अवसर पर यहाँ स्नान करनेवालों की ब
बड़ी भीड़ होती है। भारत के विभिन्न प्रान्तों के अगणित रा
महाराजा, सेठ-साहूकार तथा साधारण स्थिति के लोग कुम्भस्नान क
आते हैं और यथाशक्ति दान करते हैं। देश भर में जितने ना
सन्यासी, शैव, शाक्त, दण्डी, महन्त, परमहंस, अवधूत और वै
आदि होते हैं, वे सभी इस कुम्भमेला में सम्मिलित होते हैं, केवल
सम्प्रदाय के ही अनुयायी गङ्गा जी को साधारण नदी कहकर
इनकी अवज्ञा किया करते हैं और मेले में योगदान करने के लिए
नहीं आया करते। कुम्भ के समय यह स्थान एक नगर के रूप में
परिणत हो जाया करता है और चारों ओर आनन्द-उत्सव तथा नृत्य
गीत की बाढ़-सी आ जाया करती है।

ब्रह्मा—तो इसका अर्थ यह है कि पृथ्वी पर अभी गङ्गा का कुछ
कुछ मान है।

वरुण—इसी लिए तो पृथ्वी रुकी भी है। जनता के हृदय में जो
यह थोड़ी-सी भक्ति है, उसका अन्त होते ही पृथ्वी भी न रह सकेगी।

ब्रह्मा—मेले में आकर यात्री लोग किस स्थान पर स्नान किया करते हैं?

वरुण—पर्वत को तोड़कर गङ्गा जी जिस स्थान पर पहले-पहल
गिरी थीं, वह ब्रह्मकुंड कहलाता है। यात्री लोग इसी कुंड में स्नान
किया करते हैं। इस स्थान का वास्तविक नाम है मायापुरी* । इसके
अधीश्वर थे दक्ष-प्रजापति। इस मायापुरी की गणना आपकी सप्तपुरियों
में की जाती है।

---

*मायापुरी के पूर्व में नीलपर्वत, पश्चिम में विल्वकेश्वर,
दक्षिण में पिछोड़नाथ और उत्तर में लक्ष्मण-झूला है।

ब्रह्मा की आज्ञा के अनुसार सब लोग ब्रह्मकुण्ड * में स्नान करने निमित्त चले। वहाँ जाकर स्नान तथा सन्ध्या-पूजा-आदि करने बाद उन लोगों ने बेग से फल-फूल तथा रसगुल्ला आदि निकाल-कर गङ्गादेवी की मूर्ति † को नैवेद्य लगाया, बाद में वे लोग स्वयं भोजन करने लगे। क्षुधा निवृत्त होने पर देवतागन ने तमाल-पत्र का सेवन किया। तब वे लोग नारायण-शिला के दर्शन के निमित्त चले।

वरुण ने कहा—हे पितामह, नारायण की इस मूर्त्ति की पूजा जो आपके समीप है, दक्ष-प्रजापति किया करते थे। यहाँ गोदान और अन्न-दान करनेवाला विष्णुलोक को प्राप्त होता है।

नारायण-शिला से देवतागण कुशावर्त्त घाट की ओर चले।

ब्रह्मा—यह घाट इतना प्रसिद्ध क्यों है?

वरुण—कोई ऋषि समाधिस्थ होकर यहाँ योग-साधन कर रहे थे। उस समय गङ्गा जी हिमालय से गिरकर अपनी धारा में उनका कुश बहा ले गईं। ध्यान भंग होने पर मुनि को जब कुश नहीं दिखाई पड़ा तब क्रोध में आकर उन्होंने अपने कुश के सहित गङ्गा जी को आक-र्षित किया। पतितपावनी भगवती गङ्गा जी प्रसन्नभाव से मुनि के समीप आईं। उन्होंने उनका कुश लौटा दिया उन्हें और वर दिया कि आज से इस स्थान का नाम कुशावर्त होगा। यहाँ आकर जो व्यक्ति अपने पितरों के निमित्त श्राद्ध-तर्पण करेगा, उसके पितर विष्णु के समान होकर विष्णुलोक में वास करेंगे। इसलिए आज भी सर्वसा-धारण यहाँ पर श्राद्ध-तर्पण किया करते हैं।

ब्रह्मा—यहाँ मछलियाँ कितनी दिखाई पड़ रही हैं?

वरुण—ये तीर्थस्थान की मछलियाँ हैं, इसलिए इन पर कोई किसी प्रकार का अत्याचार नहीं करता। मछलियाँ भी मनुष्य को

---

* ब्रह्मकुण्ड के पासवाले मन्दिर में विष्णु का चरण-चिह्न और गङ्गा जी की मूर्ति है।

† हरिद्वार से आध कोस दक्षिण।

क्लेश मिलता है? पति की निन्दा सहन करने में असमर्थ होने के ही कारण सती ने प्राण-त्याग किया था। यह क्या कोई साधारण बात है? आज भी ऐसा दुष्कर कार्य करनेवाली स्त्री कहीं देखने में आती है? भैया को दूसरा विवाह न करके सती के ही प्रेम में आजन्म मग्न रहना चाहिए था। परन्तु वे तो बराबर अधःपतन की ओर जा रहे थे। विवाह किये बिना सांसारिक कार्यों में उनका मन ही नहीं लग सकता था। वे तो अर्थ को अनर्थ समझने लग पड़े थे। एक तो गाँजा पी-पीकर वे अपना शरीर ही सुखाये डालते थे। इन वर्तमान भगवती ने उन्हें बहुत कुछ सँभाल रक्खा है, अन्यथा जिस समय वे सती का निर्जीव शरीर मस्तक पर लादे-लादे पागल की तरह घूमा करते थे, उस समय क्या इस बात का विश्वास होता था कि वे फिर कभी संसार के काम-काज में मन लगा पावेंगे?

अब देवतागण कनखल की ओर चले। वहाँ पहुँचकर वरुण ने कहा कि विदुर ने इसी स्थान पर योग-साधन किया था। विदुर और मैत्रेय का संवाद भी यहीं पर हुआ था। यहाँ पर जो कुण्ड आप देख रहे हैं, उसमें सात रविवार कोई भी नहीं स्नान कर पाता।

अब वरुण ब्रह्मा, विष्णु और इन्द्र को लेकर भीमगदा देखने के लिए चले। वहाँ पहुँचकर उन्होंने सबको बतलाया कि स्वर्गारोहण के समय भीम ने यहीं पर अपनी दुर्जेय गदा का परित्याग किया था। यह जो बहुत बड़ी गदा के आकार का पत्थर दिखाई पड़ रहा है, लोग कहते हैं कि यही भीम की गदा है।

ब्रह्मा—कुरुक्षेत्र यहाँ से कितनी दूर है?

वरुण—अधिक दूर नहीं है। क्या उधर चलिएगा?

ब्रह्मा—अभी नहीं। हरद्वार से लौटने पर जो कुछ हो सकेगा, वह किया जायगा।

वरुण—देखिए! भीमगोड़ा, भीम की गदा के ठोकर मारने पर

से एक का नाम गौरीशंकर है और दूसरी का बिल्वकेश्वर। इस स्थान से कोस भर पश्चिम बिल्वकेश्वर नामक एक महादेव हैं। वे इस मायापुरी के क्षेत्रपाल देवता हैं। इनके अतिरिक्त नारायण-शिला से बारह कोस दक्षिण पिठोड़नाथ महादेव हैं। वहाँ जाने का मार्ग बड़ा ही दुर्गम है।

देवगण इस प्रकार बातचीत कर ही रहे थे, इतने में खड़खड़ाते हुए कई इक्के उपर से आ निकले। इन नवीन ढंग के रथों को देखकर ब्रह्मा को बड़ा कौतूहल हुआ। वरुण ने इक्के के सम्बन्ध की बहुत-सी बातें बतलाईं। अन्त में छः-छः आने पर चार इक्के ठीक करके देवतागण एक-एक पर सवार हो लिये सब सारथी के चाबुक का आघात बार-बार, ज़ोर-ज़ोर से सहते हुए अश्विनीकुमारगण किसी प्रकार खड़-खड़ करके चलने लगे।

इन्द्र—क्यों वरुण, भला इनसे भी बढ़कर पापी पृथ्वी पर हैं?

वरुण—हाँ।

इन्द्र—वे कौन हैं?

वरुण—जो लोग आफिसों में क्लर्की का काम करके जीविका का सम्पादन किया करते हैं और जो लोग बड़े आदमियों की मुसाहबी किया करते हैं।

इक्के पर सवार होकर जाते-जाते एकाएक एक नहर पर ब्रह्मा की दृष्टि गई। वरुण से उन्होंने उसका विवरण पूछा और गङ्गा को इस प्रकार काटकर उनकी इच्छा के विरुद्ध स्थान-स्थान पर ले जाने का हाल सुनकर वे बहुत दुखी हुए। चलते ही संध्या लगभग तीन बजे देवताओं के इक्के सहारनपुर के बाजार में आ पहुँचे। वहाँ के बाजार में कुछ समय तक घूमने के बाद वे लोग स्टेशन गये और वहाँ टिकट खरीदकर दिल्ली की गाड़ी में आ बैठे।

दिल्ली

ट्रेन से उतरकर देवगण ने गेट पर विश्राम किया। बाहर निकलने पर उन्होंने देखा तो बहुत-सी गाड़ियाँ खड़ी थीं। गाड़ीवाले चिल्ला-चिल्लाकर अपनी-अपनी गाड़ी पर जाने के लिए यात्रियों का आग्रहपूर्वक आह्वान करने लगे। देवगण एक गाड़ी पर जाकर बैठ गये। वह गाड़ी उन्हें लेकर तेजी के साथ नगर की ओर चली। यमुना के तट पर जाकर उन सबने स्नान तथा सन्ध्या-पूजा आदि किया। मध्याह्न काल व्यतीत हो जाने पर वे सब भ्रमण के लिए नगर की ओर चले रास्ते में ब्रह्मा ने कहा—वरुण, भला इस नगर में तीन प्रकार के मन्दिर क्यों दिखाई पड़ रहे हैं?

वरुण ने कहा—इस दिल्ली नगर को क्रम से हिन्दू, मुसलमान और अँगरेज, इन तीन जातियों की राजधानी बनने का सौभाग्य मिला है। इसलिए पहले यहाँ मन्दिर बने, बाद को मस्जिदें बनीं और सबसे अन्त में चर्च बना।

इन्द्र—किस हिन्दू राजा ने यहाँ राज्य किया था?

वरुण—पहले इस नगर को लोग इन्द्रप्रस्थ कहा करते थे। राजा युधिष्ठिर ने यहीं पर राज्य किया था।

ब्रह्मा—इन्द्रप्रस्थ किस स्थान को कहते हैं?

नारायण—वह स्थान यमुना नदी के दक्षिण में था।

वरुण—वर्त्तमान दिल्ली से एक कोस की दूरी पर है वह स्थान। चलिए, आपको दिखला ले आवें, यह कहकर सब लोग उसी ओर चले।

ब्रह्मा—ये घरों के जो ध्वंसावशेष आदि हैं, वे सब कहाँ के हैं?

वरुण—यह इन्द्रप्रस्थ का रास्ता है। राजा धृतराष्ट्र ने पाँचों पाण्डवों को पाणिपत, सेनपत, इन्द्रपत, ढिलपत तथा भागपत नामक …च खण्डभूमि प्रदान की थी, उनमें से दो खण्ड, ढिलपत और भागपत भी वर्त्तमान हैं और वे ये ही हैं। शेष तीन खण्ड यमुना के गर्भ

में लीन हो गये हैं। इस स्थान के चारों ओर परिखा से घिरा हुआ एक पुराना क़िला था। इस क़िले में मुसलमानों ने इतनी कुशलता के साथ परिवर्तन किया है कि इसे देखकर कोई यह कह ही नहीं सकता कि यह पहले का बना हुआ है। पितामह, यह जो आप हुमायूँ की मस्जिद देख रहे हैं, यहीं महावीर अर्जुन का किला था। इधर शेरशाह का राजप्रासाद दिखाई पड़ रहा है। यह वह स्थान है, जहाँ नारायण तथा महर्षि व्यास आदि ने पाण्डु के पुत्रों को सुरक्षित कर रक्खा था। जिस स्थान पर आकर अङ्ग, बङ्ग तथा कलिङ्ग आदि देशों के राजा राजसूय-यज्ञ में सम्मिलित होने के लिए एकत्र हुए थे, उसका अब चिह्न तक नहीं है। पुरानी दिल्ली उसी स्थान पर बनी हुई है। जिस घाट पर युधिष्ठिर ने अश्वमेध-यज्ञ का होम किया था, वह घाट आज भी वर्तमान है और उसे लोग निगमबोध का घाट कहा करते हैं।

ब्रह्मा—इस स्थान का नाम क्या है? क्या यहाँ पर शेरशाह के राजभवन बनवा लेने के बाद इस स्थान के नाम में परिवर्तन करने का कोई उद्योग किया गया था?

मदन—शेरशाह ने इसे अपने नाम के आधार पर शेरगढ़ के नाम से प्रख्यात करने के लिए बहुत अधिक उद्योग किया था, किन्तु इसका कोई परिणाम नहीं हुआ। आज भी यह 'पुराना क़िला' या 'इन्द्रपत' के नाम से ही प्रसिद्ध है। मुग़ल बादशाह हुमायूँ इसी स्थान पर कोठे पर से गिरकर मरा था।

किसी-किसी का कथन है कि यह भीम की हाथ में लगाने की छडी है। कोई-कोई कहते हैं कि यह स्तम्भ वासुकि के मस्तक तक गड़ा हुआ है। अस्तु, इसके ऊपर जो लेख है, वह पढ़ा नहीं जाता, इससे आज तक यह नहीं निर्णय किया जा सका कि यह क्या चीज है।

घूमते-घूमते देवतागण लालकोट के पास पहुंचे। वरुण ने ब्रह्मा आदि को बतलाया कि इसका नाम लालकोट है। द्वितीय अनङ्गपाल ने इसका निर्माण करवाया है। इसकी परिधि ढाई मील है। चहारदीवारी इसकी ६० फुट ऊँची थी और यह चारो ओर से खाई से घिरी हुई थी। तीन ओर की खाई आज भी वर्तमान है, दक्षिण ओर की भठ गई है। लालकोट में कई फाटक है, जिनमें से पश्चिम ओर के फाटक को लोग 'रणजित्' फाटक कहते हैं।

यह लालकोट देखकर देवतागण आगे बढ़े। थोड़ी दूर चलने के बाद ब्रह्मा ने कहा कि इस तालाब का क्या नाम है?

वरुण ने कहा—इसका नाम अनङ्गपाल-तालाब है। १६९ फुट यह लम्बा है और १५२ फुट चौडा। यह राजा द्वितीय अनङ्गपाल का बनवाया हुआ है। इन्हीं द्वितीय अनङ्गपाल के पुत्र तृतीय अनङ्गपाल के शासनकाल में मुहम्मद ग़ोरी ने भारत पर आक्रमण किया था। आक्रमण के भय से राजा अनङ्गपाल ने परिवार-सहित लालकोट दुर्ग में आश्रय ग्रहण किया था। इस किले को लोग आज भी 'राय पृथुराज का किला' कहा करते हैं। किले के जिस फाटक से मुसलमानों ने प्रवेश किया था, वह ग़जनी-गेट कहलाता है।

फिर सब लोग चलने लगे। कुछ दूर चलने के बाद इन्द्र ने कहा—वरुण, इस स्थान का नाम क्या है?

वरुण ने कहा—इसका नाम है भूतखाना। पृथुराज की राजधानी में २७ बहुत सुन्दर-सुन्दर मन्दिर थे। उन्ही सब मन्दिरो के माल-मसाले से यह भूतखाना तैयार हुआ है।

सब लोगों ने उसमें प्रवेश किया।

ब्रह्मा—इसमें ये सब जो मूर्तियाँ हैं, वे किसकी हैं?

वरुण—पर्य्यङ्क पर ये जो महापुरुष सोये हुए हैं, जिनके नाभि-देश से कमल का फूल निकला है और मस्तक तथा चरण के पास एक-एक आदमी बैठे हुए हैं, ये हमारे वर्त्तमान नारायण हैं।

नारायण—मुझे लाकर अन्त में भूतखाना में बैठाल दिया है! दुष्ट कहीं का!

वरुण—बचने कोई नहीं पाया है। यह देखिए, ऐरावत की पीठ पर समासीन हमारे देवराज हैं। देखिए पितामह, हंस की पीठ पर आप भी विराजमान हैं। उधर देखिए, बैल की पीठ पर नन्दी-सहित हमारे देवाधिदेव महादेव वर्त्तमान हैं।

नारायण—यह मस्जिद किसकी है?

वरुण—यह सबसे पहले मुसलमान बादशाह कुतुब इस्लाम की मसजिद है। इसमें प्रवेश करने के तीन द्वार हैं। हिन्दुओं के देव-मन्दिर तोड़ने पर जो मसाला मिला है, उसी से यह मसजिद तीन वर्ष में बनाकर तैयार की गई है। एक समय इस मसजिद में इतनी भव्यता थी कि तैमूरलंग ने इसी नमूने की एक मसजिद समरकन्द में बनवाने का विचार किया था।

अब देवतागण कुतुबमीनार की ओर चले। वहाँ पहुँचकर ब्रह्मा ने कहा—वाह, यह सचमुच डराने योग्य वस्तु है। इसमें पाँच ताक में लाल, सफ़ेद तथा श्यामवर्ण के पत्थर लगे हुए हैं।

वरुण ने कहा—पितामह, यह मीनार १५२ हाथ ऊँचा है और इसकी परिधि है ९५ हाथ। ये जो विभिन्न रंगों की पाँच थाकें हैं, वे पाँच कोठरियाँ हैं। इन कोठरियों में से कोई तो चौकोर है, कोई तिकोनी है, कोई गोल है, कोई कुछ अर्द्धचन्द्राकार है और कोई पूर्ण रूप से अर्द्धचन्द्राकार है। इसमें ऊपर चढ़ने के लिए ३७६ सीढ़ियाँ हैं।

इन्द्र—इसके निर्माण के सम्बन्ध की बहुत-सी बातें अरबी अक्षरों में लिखी हुई हैं। कुछ लोगों का मत है कि इसे किसी हिन्दू राजा ने

हुए कहा—हनू, लङ्का के दुर्जय समर में तुमने विजय प्राप्त की है और अपनी पीठ पर गन्धमादन पर्वत को उठा लाये हो। परन्तु आज तुम दिल्ली के अन्धकारमय घर में क्यों बैठे हो? यह कहकर और देवताओं के साथ वरुण आगे बढ़े।

इन्द्र—वरुण, सामने जो दिखाई पड़ रहा है, वह क्या है?

वरुण—उसका नाम है जहाँपनाह। उसमें बावन फाटक और सात क़िले हैं, इसलिए वह बावन क़िला सात दरवाज़ा कहलाता है। उसके नाम के अनुसार लोग आज भी कहा करते हैं कि दिल्ली सात क़िले का शहर है। यह कहकर आगे बढ़ते-बढ़ते वरुण ने कहा—यह जो क़ब्र दिखाई पड़ रही है, वह शाहज़ादी जहाँनारा की है। जहाँनारा शाहंशाह शाहजहाँ की बेटी थी। कारावास के समय पिता की सेवा करने के विचार से उसने स्वयं भी कारावास का जीवन स्वीकार किया था। इससे दिल्ली में उसका नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है।

देवगण एक बहुत बड़े कूप के पास पहुँचे। तब ब्रह्मा ने कहा—वरुण, यह कूप किसका है?

वरुण—लोग इसे 'निजामुद्दीन का कूप' कहते हैं। यहाँ प्रतिवर्ष एक बहुत बड़ा मेला होता है और यात्री लोग बड़ी अधिक संख्या में आकर यहाँ स्नान किया करते हैं। उधर देखिए, यह फिरोजाबाद है। फिरोज़शाह ने इसे बसाया था। यहाँ जेल, रामभवन, हनुमान रोड, पार्क तथा कालिज, अस्पताल आदि हैं। यह जो बहुत ऊँचा शिखर दिखाई पड़ रहा है, फिरोज़शाह की लाट कहलाती है। यह इतना ऊँचा है कि अनेक कोस की दूरी से दिखाई पड़ता है।

अब वरुण ब्रह्मा आदि को लिये हुए गारस्टन बाँध देखने के लिए चले। रास्ते में उन्हें एक दीर्घ आकार की स्त्री दिखी जो मनुष्य थी कि बुर्के से सिर से पैर तक ढके हुए तेज कदमों चली जा रही थी। उसे देखकर देवता लोग विस्मित हो गये और मार्ग छोड़कर हटे।

वरुण ने कहा—आप लोग उन्हें देखकर डर क्यों गये? वे स्त्रियां

सफेद पत्थर से बंधे हुए हैं। यह नहर पांच फुट गहरी और तीन मील लम्बी है। इस पर कई पुल बने हुए हैं और उसके किनारे-किनारे धनिकवर्ग की सुन्दर-सुन्दर अट्टालिकायें हैं।

अलीमर्दन नहर के पास से चलकर ब्रह्मा आदि हजारीबाग में पहुँचे। तब वरुण ने कहा—देखो जनार्दन, इस स्थान पर मुहम्मदशाह नामक एक बादशाह की बेगम की क़ब्र है।

नारायण—जहाँ देखो वहीं क़ब्र! दिल्ली में कितने भूतों और चुड़ैलों का अड्डा है, यह कहा नहीं जा सकता।

वरुण—मुहम्मदशाह के समय में नादिरशाह ने दिल्ली पर आक्रमण किया था। आजम खां और सादतखां नामक दो व्यक्ति उसे यहाँ ले आये थे। अन्त में नादिरशाह ने उन दोनों विश्वासघातकों को डाढ़ी-मूछ तथा सिर के बाल बनवाकर मुंह में कालिख लगवाकर नगर से निकलवा दिया था। अन्त में मारे घृणा और लज्जा के विष खाकर उन दोनों ने प्राणत्याग कर दिया था। नादिरशाह दिल्ली में राज्य करने के विचार से नहीं आया था। उसने पहले नगर-वासियों के ऊपर किसी प्रकार का अत्याचार भी नहीं किया। परन्तु एकाएक नगर में यह अफ़वाह फैल गई कि नादिरशाह की मृत्यु हो गई। इससे दिल्ली गेट से लेकर लाहौर गेट तक के आदमी बहुत उत्तेजित हो गये और नादिरशाह के दो-तीन आदमियों को मार डाला। इससे क्रोधान्ध होकर उसने भी एक ही दिन में बीस हजार आदमियों के प्राण हरण कर लिये। यह हत्याकाण्ड प्रातःकाल से लेकर दोपहर तक बराबर होता रहा, बच्चा-बूढ़ा कोई भी बचने नहीं पाया। अन्त में आग लगवाकर नगर का बहुत सा अंश उसने जलवा दिया। मृत्यु की इस विभीषिका से व्याकुल होकर मुहम्मदशाह नंगे-पांव नादिरशाह के पास पहुँचा और उसके चरणों पर गिर पड़ा। उसकी अनुनय-विनय से नादिरशाह का क्रोध कुछ शान्त हुआ। तब वह मयूर-सिंहासन और कोहेनूर हीरा लेकर चला गया।

ब्रह्मा—कोहिनूर हीरा क्या है ?

वरुण—यह वही मणि है जिसे राजा सत्राजित ने सूर्य की आराधना करके प्राप्त की थी। बाद को उसी मणि की चोरी श्रीकृष्ण को लगी थी।

ब्रह्मा—यह मणि इन लोगों के हाथ में कैसे आयी ? आजकल वह कहाँ है ? बात यह है कि एक परिवार में वह अधिक समय तक रह न सकेगी।

वरुण—मिरजुमला नामक एक सेनापति ने यह मणि गोलकुण्डा से लाकर शाहजहाँ को भेंट की थी। बाद को वहाँ से उसे नादिरशाह ले गया। नादिरशाह के बाद महम्मदशाह और उसके बेटे शाहशुजा के पास वह रही। शाहशुजा के समय में उसे रणजीतसिंह ले आये। अब वह मणि इंग्लैंड के राजमुकुट में सुशोभित है। आपका कथन है कि वह अधिक समय तक एक परिवार में नहीं रहती कदाचित् इसी लिए अब यह काट-कूट डाली गई है, क्योंकि अँगरेज लोग तो बडे ही दूरदर्शी हैं।

इसके बाद सब लोग गाजीउद्दीन कालेज देखने के लिए चले। सडक के किनारे पर एक टूटी हुई मसजिद थी। किसी मुसलमान ने उसके द्वार पर एक मुर्गी का गला काटकर फेंक दिया। यन्त्रणा से छटपटाती हुई वह मुर्गी आकर पितामह के चरणों के पास पडी। उसे देखकर पितामह स्तम्भित हो गये। श्री विष्णु श्री विष्णु कहते हुए वे हटकर जरा कुछ दूर खडे हुए।

नारायण—विधाता, आपकी रची हुई सृष्टि का एक जीव आपकी शरण में आया है, इसकी रक्षा कीजिए।

विधाता—उसके भाग्य में जो था, वह हुआ। भाग्य में जो कुछ लिखा होता है, उसे कौन मेट सकता है ?

अब वरुण ने सबको गाजीउद्दीन कालेज दिखलाया। उन्होंने कहा—महाराष्ट्रों ने यहाँ उपद्रव किया है। यह सोचकर कि कब्र में

रुपया रहता है, उन लोगों ने बहुत-सी अच्छी-अच्छी क़ब्रें खोद डालीं। रुहेलों ने भी दिल्ली में कम उपद्रव नहीं किया। नादिरशाह यहाँ का हीरा-मोती लूट ले गया। महाराष्ट्र लोग सोना-चाँदी ढो ले गये। रुहेलों को जब यहाँ कुछ नहीं मिला तब ये चहारदीवारी के अच्छे-अच्छे पत्थर ही खोदकर उठा ले गये।

अब वरुण देवताओं को नई दिल्ली दिखलाने के लिए चले। वहाँ जाकर वाइसराय-भवन, कौंसिल-भवन तथा अँगरेज़ी सरकार के समय के अन्यान्य महत्त्वपूर्ण भवनों तथा कार्यालयों और लोकोपयोगी संस्थाओं का अवलोकन किया। बाद को ये सब स्टेशन की ओर चले। कुछ दूर तक चलने के बाद ब्रह्मा ने कुछ मुल्लों को काँछ खोले हुए खड़े-खड़े चिल्लाते देखा। ब्रह्मा की दृष्टि में यह बात बिल्कुल नई थी। इससे हँसते-हँसते उन्होंने वरुण से पूछा कि ये लोग क्या कर रहे हैं?

वरुण—ये लोग मुल्ला हैं। ये ईश्वर को पुकार रहे हैं।

ब्रह्मा—किन्तु ये काँछ क्यों खोले हुए हैं?

वरुण—ऐसा किये बिना तो ये प्रसन्न ही नहीं होते।

इतने में नारायण ने वरुण के कान के पास मुँह ले जाकर कहा—दिल्ली की वेश्याओं की बड़ी प्रशंसा सुनी थी। किन्तु बरामदे में बैठी-बैठी इस तरह तम्बाकू पी रही थीं, कि देखकर मुझे घृणा हो गई।

इस तरह गप-शप करते-करते देवगण स्टेशन पहुँच गये। इधर गाड़ी का समय भी हो गया था। वरुण ने कहा—नारायण, जल्दी से रुपये निकालो, टिकट ले आऊँ। परन्तु नारायण ने बड़ी [illegible] में विलम्ब कर दी। इससे क्रुद्ध होकर वरुण ने कहा—अब मुझसे न हो सकेगा, तुम्हीं जाकर टिकट ख़रीद लाओ।

"लाओ यह कौन-सी बड़ी बात है," यह कहते हुए नारायण टिकटघर के पास गये। वहाँ बहुत-से मुसलमान और [illegible] खड़े थे। नारायण इन सब [illegible] [illegible] के मुँह के पास मुँह ले जाकर

जैसे ही बोले—चार टिकट दे दो, वैसे ही था-था करते हुए नाक में कपड़ा ठूंसकर किसी प्रकार भाग आये। उन्हें इस तरह व्याकुल-भाव से भागकर आते देखकर ब्रह्मा उनकी ओर बढ़े और बोले—कहो नारायण, क्या बात है?

नारायण—बाप रे! लहसुन-प्याज खा-खाकर इस तरह डकार रहे हैं ये लोग कि तबीअत एकदम से घबरा उठी। इतने जोर की डकारें होने जा रही थी कि मानो 'छठी' तक का दूध गिर जायगा।

यह देखकर हंसते-हंसते वरुण टिकटघर की ओर बढ़े और किसी प्रकार हाथरस के लिए चार टिकट लेकर लौट आये। इतने में गाड़ी भी आगई और सबके सब एक डिब्बे में बैठ गये। गाड़ी वहां से चलकर अलीगढ़ पहुंची।

वरुण ने देवताओं को अलीगढ़ का परिचय देते हुए कहा—पहले यहां कोल नामक एक असभ्य जाति निवास किया करती थी। इस जाति के लोग बड़े जबर्दस्त डाकू थे। अपने जामाता कंस के निधन के समाचार से क्रुद्ध होकर राजा जरासन्ध ने जब कृष्ण के ऊपर आक्रमण करने के लिए धावा बोला था तब यहीं पर उसने अपनी शिविर बनाई थी। बहुत-सी सुविशाल अट्टालिकाओं के अतिरिक्त यहां मिट्टी का एक बहुत ही प्रसिद्ध दुर्ग भी था। सन् १८०३ ई० में लार्ड लेक ने उस दुर्ग पर अधिकार किया था। नगर से दो मील की दूरी पर उस दुर्ग का ध्वंसावशेष आज भी वर्त्तमान है। मुस्लिम विश्वविद्यालय अलीगढ़ की एक महत्त्वपूर्ण संस्था है।

अलीगढ़ से छूटकर गाड़ी हाथरस पहुंची। वहाँ से उतरकर देवगण ब्राच लाइन की गाड़ी में विराजमान हुए। उस गाड़ी की गति बहुत कुछ मन्द थी। अस्तु, क्रमशः वे लोग मथुरा स्टेशन पर पहुंच गये। टिकट देकर देवगण फाटक से बाहर निकले। इतने में दल के दल चौबे पण्डों ने आकर इन सबको मधुमक्खी की तरह घेर लिया। उनमें से हर एक के मुंह में यही एक बात थी कि

मेरे साथ चलो बाबू। परन्तु इतने ही से शान्ति नहीं थी। ये लोग हाथ पकड़-पकड़कर अपनी-अपनी ओर घसीटने भी लगे। देवता-गण किसके यजमान हैं, इस विषय में पण्डों में बड़ा झमेला खड़ा हो गया। इतने में एक पण्डा ने कहा बाबू, आपका निवास कहाँ है? आपके पिता का नाम? इसके उत्तर में ज़रा-सा कुछ सोचकर विधाता ने कहा—मेरा निवास शून्य में है और मेरे पिता का नाम यथानाम-चन्द्र था। यह सुनकर वह आदमी बोल उठा—हाँ, हाँ, एक बार यथानामचन्द्र महोदय शून्य से दर्शन करने के लिए वृन्दावन आये थे। उस समय मैं बहुत छोटा था। मेरे पितामह ने उन्हें दर्शन कराया था। यह कहकर उसने एक बहुत पुरानी बही दिखलाई और वृद्ध विधाता का हाथ पकड़कर घसीटता हुआ वह उतावली के साथ चला। विवश होकर अन्य देवताओं को भी पीछे-पीछे चलना पड़ा। पुल के ऊपर से ही मथुरा का दृश्य देखकर देवगण मुग्ध हो गये।

मथुरा

मथुरा में प्रवेश करने पर मदन ने कहा—देखिए पितामह, पहले इस स्थान पर बहुत ही सघन वन था। उस समय दैत्यगण यहाँ पर राज्य किया करते थे। वे राम-लक्ष्मण के समकालीन थे। दैत्य-वंश का अन्तिम राजा लवण था। उसके बाद यहाँ शत्रुघ्न ने राज्य किया था।

ब्रह्मा—बुर्जों और कलशों से परिपूर्ण सामने जो एक टीला दिखाई पड़ रहा है वह क्या है?

मदन—यह किले का पहाड़ है। यहाँ इस प्रकार के किले के पहाड़ों का कोई ऐसा अभाव नहीं है। यह जो आप देख रहे हैं, कंसटीला कहलाता है। इसी के ऊपर श्रीकृष्ण ने कंस का वध किया था। यह सुनकर सब लोग उसी ओर बढ़े।

थोडी दूर तक चलने के बाद इन्द्र ने कहा—वरुण, यह मन्दिर और तालाब किसका है?

वरुण—यह मन्दिर देवकी का कारागार है। कंस ने जब नारद से सुना कि देवकी के आठवें गर्भ से जो सन्तान उत्पन्न होगी, उसी के हाथ से तुम्हारा वध होगा, तब उसने इसी स्थान पर वसुदेव और देवकी को छाती पर पत्थर रखवाकर कैद कर लिया था। यह जो पत्थरों का स्तूप-सा दिखाई पड रहा है, वही पर कारागार था। मुसलमानो ने उसे तोडकर वहां पर मसजिद बना ली है। आप यह जो तालाब देख रहे हैं, इसी में देवकी ने सूतिका-स्नान किया था। ग्वालियर के महाराज ने इस तालाब में आवश्यक सुधार करके इसे पक्का करवा दिया है। इस टूटे हुए घर में देवकी और श्रीकृष्ण की मूर्त्ति है।

इन्द्र—दैत्यो के लिए सब कुछ सम्भव था।

ब्रह्मा—तुम्हारी यह बात न्याय-विरुद्ध है। देवता ही लोग क्यों नही सब कुछ कर सकते? वृत्र-सहार के समय तुम्हीं ने निरपराध दधीचि मुनि की हड्डियां क्यो ले ली थीं? कंस ने भी इसी तरह आत्म-रक्षा के लिए जो कुछ कार्य्य किया था, उसके लिए उसको न्यायत. दोषी नहीं ठहराया जा सकता। अच्छा, अब समय हो गया है, इसलिए चलकर स्नान-भोजन की व्यवस्था करनी चाहिए।

अब देवतागण यमुना जी के तट पर पहुँचे। वरुण ने कहा—यहीं यमुना पार करके वसुदेव श्रीकृष्ण को गोकुल में रख आये थे।

ब्रह्मा—आहा! कितने उत्तम-उत्तम बँधे हुए घाट दोनो तटो पर हैं।

वरुण—उधर उस पार जो घाट दिखाई पड़ रहा है, वहीं पर पूतना जलाई गई थी। यह पूतना राक्षसी श्रीकृष्ण को मार डालने के विचार से स्तन में विष लपेटकर उन्हें दूध पिलाने के लिए वृन्दावन आई थी। श्रीकृष्ण ने भी इतने जोर से उसका स्तन खीचा कि उसी के प्राण-

पखेरू उड़ गये। यह घाट, जिस पर हम लोग स्नान कर रहे हैं विश्राम-घाट कहलाता है। कंस का वध करने के बाद श्रीकृष्ण और बलराम ने आकर इसी घाट पर विश्राम किया था। सांझ होने के बाद यहाँ आकर ब्रजवासी लोग जब यमुना जी की आरती करने लगते हैं तब घाट की शोभा देखते ही बनती है।

नारायण—यहाँ तो जल में कछुए बहुत अधिक हैं। स्नान किस तरह किया जाय? मैंने सुना है कि कछुआ जब किसी को पकड़ लेता है तब मेघ की गरजना सुने बिना वह नहीं छोड़ता।

इन्द्र—तुम आनन्दपूर्वक स्नान करो, यदि यहाँ किसी कछुए ने पकड़ा तो बहुत-से मेघ एकत्र कर दूंगा मैं।

वरुण—परन्तु जिस स्थान पर वह पकड़ेगा, वहाँ खून जो बहने लगेगा?

इन्द्र—उसके लिए चिन्ता करने की कौन-सी बात है? ऊपर बहुत-सा पत्थर का कोयला पड़ा हुआ है। उसी को लेकर जरा-सा रगड़ देना, तुरन्त बन्द हो जायगा।

वरुण—अच्छा पितामह, भला वृन्दावन में इतने कछुए क्यों हैं?

ब्रह्मा—तीर्थ करने के अभिप्राय से यहाँ आकर जो लोग पाप करते हैं, वे ही कच्छप योनि को प्राप्त होते हैं।

देवगण ने यमुना जी के जल में डुबकियाँ लगा-लगाकर उसी तरह शरीर को पोंछकर स्नान समाप्त कर लिया। स्नान से निवृत्त होने पर [illegible] बैठकर वे लोग वृन्दावन को चले। जितनी देर से उनके [illegible] खड़े रहे थे, उतनी ही तेजी से [illegible] [illegible] का भी एक [illegible] है जो, [illegible] एक [illegible] है जो, [illegible] हुआ [illegible] के साथ ही [illegible] चला। वृन्दावन के [illegible] पर [illegible] पहुँचे [illegible] ब्रह्मा ने कहा—[illegible] [illegible] बैठे [illegible]।

नारायण—यही न जान लिया जाय कि ये पाजी लोग कितनी दूर तक दौड़ सकते हैं ?

ब्रह्मा—छि नारायण तुम इतने निष्ठुर क्यों होते जा रहे हो ? यदि दौड़ते-दौड़ते ये लोग मर ही गये, तब तो इस पाप का प्रायश्चित्त तुम्हें ही भोगना पड़ेगा।

दूर से ही उन लोगो को सेठों के ठाकुरद्वारे के ऊपर बने हुए सोने का ताड़वृक्ष दिखाई पड़ा। ब्रह्मा के पूछने पर वरुण ने मथुरा के सेठों के धन-विभव का हाल बताया और कहा कि मथुरा की सड़क के पास ही इन्द्र-भवन के समान जो मकान दिखाई पड़ रहा है, वह इन सेठों का ही है।

वृन्दावन

वृन्दावन पहुँचकर देवगण ने गोविन्द जी के मन्दिर के समीप वर्तमान बाबा चैतन्यदास जी के कुञ्ज में स्थान ग्रहण किया। बाबा चैतन्यदास की अवस्था सत्तर-पचहत्तर वर्ष की थी। उनकी लम्बी दाढ़ी सन की तरह बिलकुल सफेद थी। बाबा जी वहाँ साठ-सत्तर सेवा-वासियों के साथ विराजमान थे। उनसे बातचीत होने पर देवगण को बहुत ही असन्तोष हुआ। बात यह थी कि वे थे तो वैष्णव, किन्तु भागवत के सम्बन्ध का एक भी विषय उन्हें मालूम नहीं था। बातचीत भी इतनी खराब थी कि सुनने पर ऐसा जान पड़ता, मानो यह व्यक्ति पहले कोई नीच जाति का डाकू था। पकड़े जाने के भय से यह वृन्दावन भाग आया है और वेश बदलकर बाबा जी बन गया है। देवराज ने कहा—क्या बाबा जी को चैतन्यदेव के सम्बन्ध की कुछ बातें मालूम हैं ?

बाबा जी ने कहा—मालूम क्यों नहीं है ? चैतन्यदेव माता शची के बेटे थे। सन्यासी होकर जब वे नवद्वीप से भाग आये तब

उन्होंने मालवा के घाट पर एक मछुए से चार मछलियाँ माँगीं। परन्तु धीवर ने मछलियाँ दीं नहीं। इसी पाप से जब वह नदी में जाल लगाने गया तब उसे एक घड़ियाल खा गया।

बाबा जी के मुंह से चैतन्य महाप्रभु के सम्बन्ध का यह वृत्तान्त सुनकर देवगण बहुत प्रसन्न हुए और वे नगर में भ्रमण करने के लिए निकले। वरुण ने देवगण को गोविन्द जी का पुराना मन्दिर दिखलाया। यह मन्दिर नगर के और सब मन्दिरों से अधिक ऊँचा है। इस मन्दिर की चूड़ा दिल्ली से दिखाई पड़ा करती थी, इसलिए सम्राट् औरंगजेब ने उसे तोड़वा दिया था। आजकल देवमूर्तियाँ उस ओर बने हुए नये मन्दिर में हैं।

ब्रह्मा ने कहा—आहा! यह कितना बड़ा अत्याचार है! यवनों ने प्रायः सर्वत्र ही इस प्रकार का नृशंसतापूर्ण कार्य किया था। यवन लोगों ने यदि और कुछ दिनों तक भारतवर्ष पर आधिपत्य किया होता तो निस्सन्देह हिन्दुओं का नाम तक लुप्त हो जाता।

मन्दिर के द्वार पर आठ आने भेंट देकर देवगण ने भीतर प्रवेश किया। गोविन्द जी राधा और ललिता के साथ मन्दिर में विराजमान हो रहे हैं। दिन भर में समय-समय पर कई बार इनका वेश बदल दिया जाया करता है। परन्तु वंशी सदा ही इनके हाथ में रहा करती है।

वरुण—महमूद के भय से यह मूर्ति गर्त में छिप गई थी। बलराम आचार्य ने इसे निकाला है। अन्त में [illegible] उत्सव ग्रहण करने के उपरान्त औरंगजेब के भय से यह मूर्ति द्वारका भागी। यह वही मूर्ति आज भी वर्तमान है और द्वारकानाथ के नाम से प्रसिद्ध है। जिस मन्दिर में यह मूर्ति है, वह नाग-मन्दिर कहलाता है। [illegible] का यह बहुत बड़ा और विशाल मन्दिर है। गोविन्द जी आज भी जयपुर के महाराज की देख-रेख में हैं। [illegible] [illegible] के अत्य-धिक प्रेमी थे, यहाँ तक कि [illegible] पर वे [illegible] पर [illegible]

हुई मटकियो मे चुराकर मक्खन खाया करते थे, इसलिए उनकी सेवा में मक्खन अधिक मात्रा में समर्पित किया जाता है। ये यदुकुल के पूर्व-पुरुष हैं, इसलिए राजपूत लोग इनके प्रति बहुत ही भक्ति करते हैं। जयपुर-नरेश ने इनकी सेवा के लिए वृन्दावन की आय का एक तृतीयांश दान कर दिया है। इनके भक्त वैरागी हैं।

ब्रह्मा—वैरागी कैसे होते हैं?

वरुण—इनका माथा ऊन की तरह मूँडा रहता है। मध्यभाग में तरबूज की ढिपुनी की तरह की चूंदी होती है। हाथ में ये कमण्डलु लिये रहते हैं, सारे शरीर में राम-नाम का तिलक लगाये रहते हैं, कटिदेश में कापीन धारण किये रहते हैं और गले में तुलसी की माला पहने रहते हैं। ये बातें हो ही रही थीं कि थोड़े-से वैरागी "जय राधा" कहते हुए चले गये। देवगण उन्हें देखकर हँसने लगे। क्रमशः साँझ हो गई। देवगण नगर में भ्रमण करने के निमित्त अब नहीं गये। स्थान पर ही बैठे-बैठे लोग सुख-दुःख की बहुत-सी बातें करने लगे। इतने में पद्मयोनि ने अफीम का डिब्बा खोला। उसमें से थोड़ी-सी अफीम निकालकर उन्होंने उसे जम्हुआई लेकर नर्म कर लिया। तब गोली बनाते-बनाते उन्होंने कहा—सुनता हूँ कि पटना में अफीम सस्ती मिलती है। वहाँ से थोड़ी-सी खरीद लेनी होगी। यह कहकर उन्होंने गोली मुँह में डाल ली और निगल गये। तब उन्होंने कहा—देखो नारायण इतना दूध मैं पीता हूँ किन्तु मङ्गला (ब्रह्मा की गाय का नाम) के दूध की-सी मिठास इसमें नहीं आती। आजकल वह ढाई सेर के हिसाब से दूध दे रही है।

नारायण—मङ्गला का एक बच्चा आपने मुझे देने को कहा था न?

ब्रह्मा—हाँ, दूँगा, किन्तु अभी नहीं। इस बार का बच्चा भरणी को देना होगा। वह बहुत दिनों से माँग रही है।

इसी प्रकार बातें करते-करते रात बीत गई। प्रातःकाल उठकर इन लोगों ने देखा तो एक दुःखिनी बंगालिन आकर उनका घर-द्वार

साफ कर रही थी। उसे देखकर पितामह ने कहा—मा, तुम कौन हो? हमारा घर-द्वार तुम किसलिए साफ कर रही हो?

बंगालिन ने उत्तर दिया—बाबा, मैं एक दुःखिनी वङ्ग-रमणी हूँ। किसी समय मुझे स्वामी-पुत्र तथा धन-सम्पत्ति आदि किसी वस्तु का अभाव नहीं था। परन्तु विधाता मेरे पीछे पड़ गये। स्वामी-पुत्र से मैं वञ्चित हो गई। सम्पत्ति मेरे पास जो थी उसे पट्टीदारों ने छीन लिया। आजकल मैं वृन्दावन में निवास कर रही हूँ। जो महानुभाव यहाँ तीर्थ-यात्रा के निमित्त आया करते हैं, उनका काम-काज कर दिया करती हूँ। स्वेच्छा से वे लोग जो कुछ पैसा-दो पैसा दे देते हैं उसी से मैं अपनी जीविका चलाती हूँ।

इतने में एक बाबा जी ज़ोर से रोते-रोते आये और जिस कुञ्ज में देवगण ठहरे हुए थे, उसके स्वामी जो बाबा जी थे, उनसे कहने लगे—बाबा जी शीघ्रतापूर्वक उठकर बाहर आइए, मेरा सर्वनाश हो गया।

यह सुनकर बाबा चैतन्यदास जी ने विस्मितभाव से आकर कहा—क्या हुआ है?

"कलकत्ता से कुछ लोग यात्री आये थे न?"

"हाँ, आये तो थे।"

"(भर्राई हुई आवाज से) मेरी छोटी सेवारानी को लेकर वे लोग भाग गये।"

"गोविन्द! गोविन्द! तो अब क्या किया जाय?"

"अभी वे अधिक दूर न गये होंगे, चलो उनका पीछा करें और छीन लाएँ।"

"गोविन्द की जो इच्छा थी, वह हुआ। मैं तो अब उनके पीछे दौड़ना आवश्यक नहीं समझता हूँ।"

बाबा चैतन्यदास जी की यह बात सुनकर दूसरे बाबा कुछ शान्त हुए तो अवश्य, किन्तु [illegible] वैरागियों का [illegible] आदि [illegible] की

उन्हें जितनी ही याद आती उतना ही वह आंसुओं से भूमि को भिगोता जाता।

यमुना जी में स्नान करके देवगण नगर में भ्रमण करने के लिए चले। बाबा चैतन्यदास जी की सेवा-दासियों का दल भी भिक्षा के लिए निकल पड़ा।

ब्रह्मा—वृन्दावन में जो इतने मन्दिर हैं, ये किसके हैं?

वरुण—यहां पर जयपुर, सिन्धिया, होल्कर तथा वर्द्धमान आदि स्थानों के महाराजाओं तथा बहुत-से जमींदारों ने मन्दिर बनवाकर उनकी प्रतिष्ठा की है। प्रत्येक मन्दिर में सौ रुपये से दस रुपये तक प्रतिदिन की पूजा का व्यय निश्चित हुआ है। बहुत-से यात्री तो यहां प्रसाद खाते-खाते ही पेट भर लेते हैं और इस तरह उनका आजन्म निर्वाह हो जाता है। इस प्रकार बातें करते-करते वे लोग गोपीनाथ के मन्दिर के द्वार पर पहुंच गये। द्वार पर आठ आने भेंट देकर उन सबने भीतर प्रवेश किया।

वरुण—श्रीकृष्ण गोपियों के स्वामी थे, इसलिए उनका नाम गोपीनाथ पड़ा है। जिस वेश में गौओं के बीच में जाकर वे कालिन्दी-तट के वनों में श्री राधिका का हाथ पकड़े हुए घूमा करते थे, इस मन्दिर में उनकी उसी वेश की मूर्त्ति स्थापित है। कालिन्दी-तट के वे वन आज भी वर्त्तमान हैं, किन्तु दुःख का विषय है कि वंशी नीरव है।

गोपीनाथ को देखकर देवगण केशिघाट पर जाकर उपस्थित हुए।

वरुण—श्रीकृष्ण ने इस घाट पर केशि नामक दैत्य का संहार किया था। इसी घाट पर वे नाव चलाया करते थे।

इन्द्र—वृन्दावन में जन्म-ग्रहण करके नारायण ने अनेक प्रकार की क्रीडायें की थीं।

वरुण—इसमें उनका दोष नहीं है। यह तो कुसंग का फल है। चरवाहों के साथ में पड़कर वे खराब हो गये थे, नहीं तो उनकी बुद्धि बड़ी अच्छी थी। आजकल की तरह यदि उनके समय में भी गांव-गांव

में पाठशालायें होतीं तो ये खूब पढ़-लिखकर मथुरा में राज्य कर सकते थे। अस्तु, जो बात बीत गई, उसके लिए पश्चात्ताप करना निरर्थक है। उधर जो घाट देख रहे है, उसी पर श्रीकृष्ण ने बकासुर का वध किया था। इस वृक्ष को लोग चीर-हरण का वृक्ष कहा करते हैं।

इन्द्र—द्वापर का वृक्ष इस समय जब इतना छोटा है, तब तो उस समय शायद वह अंकुर के ही रूप में रहा होगा !

ब्रह्मा—यह भी सम्भव है कि यह वृक्ष इतने से बड़ा ही न सकता होगा। जैसे तब था, वैसे ही अब भी है।

वरुण—जी नहीं। असली वृक्ष यह नहीं है। यह नकली वृक्ष है। पैसा कमाने के लिए पण्डा लोग यात्रियों को इसे दिखा दिया करते हैं।

ब्रह्मा—चीर-हरण क्या है ?

नारायण ने आँख के इशारे से वरुण को बतलाने से रोक दिया।

वरुण—ये ठीक स्नान के समय इस वृक्ष पर चढ़कर पत्तियों की आड़ में छिप रहते। गोपियाँ आकर नंगी हो जातीं और घाट पर वस्त्र रखकर स्नान करने के लिए जल में प्रवेश करतीं। उस समय ये धीरे-धीरे उतरकर सारे कपड़े पेड़ पर उठा ले जाते। वृक्ष की डालियों पर उन सब कपड़ों को टाँगकर बंसी बजाते हुए ये अपनी बहादुरी का विज्ञापन किया करते थे। अन्त में उन बेचारियों के बहुत ही अनुनय-विनय करने के बाद उनके वस्त्र देकर ये हँसते-हँसते घर आया करते। उस ओर देखिए, वह कालीदह है। उस घाट पर श्रीकृष्ण ने कालिया नामक नाग का दमन किया था। यह जो कदम्ब का वृक्ष आप देख रहे हैं, उसका नाम है कालीकदम्ब। इसी के ऊपर से जल में कूदकर श्रीकृष्ण ने नाग को नाथ लिया था। यहीं प्रतिवर्ष एक मेला लगा करता है। उस समय बहुत-से यात्री आकर मेले में योगदान किया करते हैं।

देवगण वहाँ से आगे बढ़े। चलते-चलते एक स्थान पर पहुँचकर वरुण ने कहा—पिताजी, आपको स्मरण होगा कि एक बार श्रीकृष्ण

को छकाने के लिए आप पक्षी के वेश में आये और यहाँ से बहुत-सी गोवों, वछड़ो तथा वालकों को उठा ले गये। यह देखकर श्रीकृष्ण ने ठीक उसी प्रकार की गौओं, वछड़ों तथा वालकों की सृष्टि कर ली। श्रीकृष्ण की करामात देखने के बाद आपने उन सभी गौओं, बछड़ों तथा वालकों को लौटाल दिया। उस समय से उस स्थान का नाम ब्रह्मकुण्ड हो गया है। यहाँ हरहरि की मूर्त्ति की ही तरह की एक मूर्ति स्थापित है जिसे लोग गोपेश्वर कहा करते है। विख्यात हरिदास गोस्वामी के समाज तथा समाधि का भी स्थान यही है। एक वार वादशाह अकवर नौका पर बैठा हुआ यमुना की सैर कर रहा था। दूर से उसने उक्त गोस्वामी जी का सङ्गीत सुन लिया और गुप्त वेश में उनके सामने पहुँचा। अपना परिचय देकर उसने उन्हे वहुत-सा धन देने का लोभ दिखाया और दिल्ली चलने का आग्रह किया। परन्तु गोस्वामी जी इस पर तैयार नही हुए। उन्होने अकवर को समझाया कि धन एक बहुत ही निरर्थक वस्तु है और इसका लोभ मुझे प्रभावित नही कर सकता। अन्त में गोस्वामी जी ने तानसेन नामक अपने एक शिष्य को अकवर के साथ कर दिया। तानसेन पटना का निवासी था और उस समय उसकी अवस्था उन्नीस-वीस वर्ष की थी। दिल्ली में जाकर तानसेन ने मुसलमान-धर्म ग्रहण कर लिया।

इसके वाद सव लोग जाकर पुलिन में पहुँचे। पद्मयोनि ने पूछा—भला श्रीकृष्ण ने यहाँ कौन-सी लीला की थी ?

वरुण—यहाँ वे गोपियो के साथ केलि किया करते थे।

अव देवगण निधुवन देखने के लिए चले। वहाँ पहुँचने पर वरुण ने कहा—इस वन में आकर श्रीकृष्ण वन के वृक्षो से फूल तोड़कर माला गूँथते और उसे गले में डालकर कदम्ब के वृक्ष पर चढ़ जाते। उसी पर से पैर हिला-हिलाकर वे वशी वजाते। वशी का शब्द सुनते ही व्रजनारियाँ जल भरने के बहाने से आकर उनसे मिल जाया करतीं। इसी वन में श्रीकृष्ण राधिका को राजा वनाकर स्वय कोतवाल

बने थे। यह जो तालाब दिखाई पड़ रहा है, उसे लोग ललिता-कुण्ड कहते हैं।

इतने में कुछ बन्दर आ पहुँचे। उन सबने देवगण के हाथ से जोर से खींचकर गुड़गुड़ी के नैचे छीन लिये और पास ही के एक बरगद के वृक्ष पर चढ़ गये। पितामह 'तू-तू' करके कुत्ते लुहलुहावे और बन्दरों को मारने दौड़े। इससे क्रोध में आकर नैचों को बन्दरों ने नाखून से खण्ड-खण्ड करके नीचे फेंक दिया और वे दाँत किट-किटाने लगे।

ब्रह्मा ने कहा—आहा, ऐसे अच्छे-अच्छे नैचे थे, एकदम से नष्ट कर डाला इन दुष्टों ने। बाँध-बूँधकर भी काम में ले आने के योग्य न रह गये थे। घर पहुँचने पर फर्शी में लगाकर यदि एक चिलम भी बढ़िया तम्बाकू पी लेते तो इतना अफसोस न होता। निरर्थक ही हम गुड़गुड़ी खरीदने के विचार से इन नैचों को हाथ में लगाये आये थे।

वरुण—इन सबको मारने का उद्योग करके युद्ध कर देना उचित नहीं था। कुछ खाने को दे दिया जाता तो ये अपने आप खाकर दे जाते। वृन्दावन में बन्दरों का बड़ा उत्पात है। माधव जी सिन्धिया इन सब बन्दरों की सेवा के लिए बहुत-सा रुपया जमा कर गये हैं। यहाँ कोई बन्दरों को तंग नहीं करता।

इन्द्र—तुम्हारे ही मुँह से तो सुना था कि अँगरेज लोग शिकार के बड़े प्रेमी होते हैं। परन्तु ये तीर्थ के बन्दर हैं, शायद यही सोचकर वे लोग इनकी हत्या नहीं करते।

ब्रह्मा—बन्दर का मांस तो ये खाते नहीं, मारकर ही क्या करेंगे?

वरुण—जी नहीं। पहले मथुरा में कम से कम राजपुरुष यहाँ आकर बन्दर, मयूर और हिरन का शिकार किया करते थे। राजा राधाकान्तदेव बहादुर आदि ने एक भारी रकम में इकरारनामा लेकर यहाँ बन्दर मारने की मुमानियत करवा दी है। इन्होंने यहाँ मन्दिर आदि भी बनवाये हैं।

इन्द्र—वरुण उधर जो बड़ा विशाल मन्दिर दिखाई पड़ रहा है, उसकी स्थापना किसने की ?

वरुण—उस मन्दिर की प्रतिष्ठा जयपुर के महाराज ने की है। वृन्दावन का यह सबसे बड़ा मन्दिर है। मन्दिर के समीप रूप गोस्वामी का आश्रम है।

इन्द्र—मन्दिर में मूर्ति कौन-सी है ?

वरुण—गोविन्द-मण्डल में गोविन्द देव थे जो वन में छिपे हुए थे। गौएं प्रतिदिन जाकर उन्हें दूध पिला आया करती थीं। अन्त में स्वप्न देखकर रूप-सनातन ने देवता को निकाला।

यहाँ से देवगण मदनमोहन देखने गये और वहाँ उपस्थित होकर वरुण ने कहा—कुब्जा इसी मूर्त्ति की पूजा किया करती थी। मथुरा का ध्वंस होने पर यह मूर्त्ति भी अदृश्य हो गई। रूप-सनातन ने एक चौबाइन के घर से इन्हें निकाला था। चौबाइन ने देव-मूर्त्ति को खिलौना समझकर अपने लड़के को खेलने के लिए दे रक्खा था। नौका जब चट्टान में अटक जाती है, तब मदनमोहन की पूजा करने की मनौती कर देने पर जल में फिर तैरने लगती है। इस कारण सौदागरों ने इनका यह मन्दिर तथा धर्मशाला बनवा दिया है और मन्दिर में बहुत-सी सम्पत्ति भी लगा दी है।

ब्रह्मा—रूप-सनातन कौन थे ?

वरुण—रूप और सनातन, ये दोनों भाई थे। पहले ये मुसलमान थे। बाद को चैतन्यदेव ने इन्हें वैष्णव-धर्म में दीक्षित कर लिया। तब से इनकी उपाधि रूप-गोस्वामी की हुई। वृन्दावन में इनका समाज बहुत बड़ा और विख्यात है। इनके समाज के समीप ही चैतन्यदेव का पद-चिह्न आज भी देखने में आता है।

ब्रह्मा—रूप-गोस्वामी को संसार से वैराग्य हो जाने का कारण क्या है ?

वरुण—कहा जाता है कि रूप नवाब के दरबार में कार्य किया

करते थे। एक दिन बरसात की अँधेरी रात में उनके मालिक ने उन्हें बुलवा भेजा। पानी में भीगते हुए कीचड़ में चलते-चलते जिस समय वे नवाब के पास जा रहे थे, उस समय एक मेहतर और मेहतरानी अपने कुटीर में बैठे हुए बातें कर रहे थे। मेहतरानी ने मेहतर से पूछा—भला ऐसे अँधेरे में कीचड़ में छपछप करता हुआ कौन चला जा रहा है? इसके उत्तर में मेहतर ने कहा—कुत्ता होगा। मेहतरानी ने कहा—नहीं, ऐसे अँधेरे में कुत्ता नहीं निकल सकता। यह अवश्य कोई नौकर है। बात यह है कि कुत्ते को भी थोड़ी-सी स्वाधीनता है। वह इच्छानुसार कार्य कर सकता है। परन्तु बेचारे नौकरों के भाग्य में यह स्वाधीनता नहीं बदी है।

मेहतरानी की इस बात से रूप-गोस्वामी को बड़ी आत्मग्लानि हुई। वे सोचने लगे कि सचमुच मेरा यह जीवन कुत्ते के जीवन से भी अधम है। अन्त में घर-गृहस्थी आदि का परित्याग करके वे वैरागी हो गये।

देवगण वहाँ से निकुंज वन की ओर चले। वहाँ पहुँचकर यम ने कहा—इसी निकुंज वन में श्रीकृष्ण राधिका को वामभाग में बैठा कर आनन्द में मग्न होकर गाया करते थे।

ब्रह्मा—यह छोटा-सा कमरा कैसा बना हुआ है? इसमें एक पलंग भी बिछा हुआ है।

यम—इस पलंग पर प्रतिदिन फूलों की शय्या लगाई जाती है। सवेरे देखने पर जान पड़ता है कि मानो कोई व्यक्ति इस शय्या पर सोया हुआ था। ऐसा क्यों होता है, रात्रि में आकर यह देखने का साहस कोई नहीं करता। एक बार एक गोसाईं जी यह देखने के लिए रात भर यहाँ पर बैठे रहे, किन्तु सवेरे देखने में आया कि वे गूँगे हो गये हैं। उनकी बोलने की शक्ति जाती रही।

इतने में "साहब आ रहे हैं, साहब आ रहे हैं" कहते हुए देवगण सारा ठाठ छोड़कर अलग खड़े हो गये। वे बारबार साहब के मुँह की ओर

उस वृक्ष की ओर ताकने लगे। समीप आकर साहब ने कहा—हिण्डास्तानी तुम लोग क्या देखता है? यह कहकर वह चला गया।

इन्द्र—वाह, साहब तो खूब हिन्दी बोलता है। मानो मैना टव टाँव कर रहा था।

वरुण—पितामह! आप उस पेड़ की ओर इतना क्या देख रहे थे?

ब्रह्मा—पत्थर का? इसकी छाल है। किस चीज का यह पेड़ है, यही देख रहा था मैं।

वरुण—यह बिल्कुल नये ढंग का पेड़ है। परन्तु यह है बहुत दिन का पुराना। यह कहकर वरुण बङ्कु-विहारी की ओर सबको लेकर चले। वहाँ पहुँचकर उन्होंने कहा—ये ही बङ्कु-विहारी हैं। वृन्दावन की सभी मूर्त्तियों में यह बड़ी है। व्रजवासियों के ये ही उपास्य देवता हैं।

इन्द्र—इनके वाम भाग में राधा क्यों नहीं है? कृष्ण को तो राधिका को आधे तिल के बराबर की भी दूरी पर रखना सह्य नहीं था।

वरुण—व्रजवासियों ने तीन-चार बार राधिका की मूर्त्ति लाकर इनके वाम भाग में रक्खी थी, किन्तु लज्जित होकर इन्होंने उस मूर्ति को खींचकर फेंक दिया। बहुत-से लोगों का कहना है कि रात्रि में ये वास्तविक राधिका के साथ विहार किया करते हैं, अतएव वाम-भाग में कृत्रिम राधिका को ये नहीं रखते। प्रातःकाल नौ बजे से पहले इनकी निद्रा भङ्ग नहीं होती, इसलिए उससे पहले मन्दिर का द्वार भी नहीं खोला जाता। कौवों की काँव-काँव से कहीं इनकी निद्रा भङ्ग न हो जाय, इस भय के कारण कौवे साँझ होने से पहले ही वृन्दावन छोड़कर मथुरा चले जाते हैं।

यहाँ से देवगण राधारमण देखने गये। बाद को सीधे गोवर्द्धन पर्वत पर पहुँचे। वरुण ने बतलाया कि यही गोवर्द्धन पर्वत है। लालाबाबू नामक बंगाल के एक सुप्रसिद्ध वैष्णव ने, जिन्होंने वृन्दावन में बहुत-से उत्तम-उत्तम कार्य्य किये हैं, अन्तिम अवस्था में यहीं आकर निवास किया था और यहीं गिरकर वे अकाल मृत्यु को प्राप्त हुए थे।

ब्रह्मा—क्यों? ऐसा क्यों हुआ? इस प्रकार के महान् पुरुष के भाग्य में भी अकाल मृत्यु लिखी हुई थी?

वरुण—कारण यह था कि वैष्णव-धर्म ग्रहण करने के बाद वे नौका से वृन्दावन आ रहे थे। चलते-चलते जब वे काशी के घाट पर पहुँचे तब नौका में परदा डलवा दिया।

इन्द्र—परदा क्यों डलवा दिया?

वरुण—वे वैष्णव थे। भला वे शैव-तीर्थ का दर्शन कर सकते थे?

ब्रह्मा—यही तो उनकी भूल थी। ईश्वर-भाव से उपासना करते समय भी लोग दलबन्दी कर बैठते हैं। ऐसा करने से बड़ा पाप होता है। ईश्वर क्या भिन्न है? देश-काल के भेद से वे केवल भिन्न भिन्न आकार भर धारण किया करते हैं, मूलतः वास्तव में सब एक हैं।

वरुण—गोवर्द्धन पर्वत के सम्बन्ध में लोग कहा करते हैं कि हनुमान् जिस समय विशल्यकरणी के सहित गन्धमादन पर्वत को कन्धे पर लिये हुए लक्ष्मण की प्राण-रक्षा के लिए आ रहे थे उस समय भरत के तीर के बाण के आघात से यहीं पर गिरे थे। पर्वत का यों एक छोटा-सा अंश अन्धकार में दिखाई न पड़ने के कारण वे छोड़कर चले गये थे, उसी को लोग गोवर्द्धन पर्वत कहा करते हैं। कुछ लोगों का यह भी कहना है कि एक बार निरन्तर वर्षा करते-करते वृन्दावन को नष्ट कर देने का उद्योग देवराज ने किया था। उस समय श्रीकृष्ण ने इसी पर्वत को छाते के समान कनिष्ठा अँगुली पर धारण कर रक्खा था। वृन्दावन के निवासी उसी के नीचे आनन्दपूर्वक बैठे हुए थे। पर्वत के ऊपर गोवर्द्धन देव की मूर्ति है।

ब्रह्मा—यह कैसी मूर्ति है?

वरुण—यह श्रीकृष्ण के बाल्यकाल की गोपाल मूर्ति है। वल्लभाचार्य ने इस मूर्ति की स्थापना की थी। गोवर्द्धनदेव मथुरा के भय से यहीं पर्वत पर भाग आये थे। आज भी कार्तिक के महीने में यहाँ मेला लगा करता है। उस समय यहाँ हजारों यात्री [illegible] आते हैं।

यहां से देवगण वृकभानु-पर्वत की ओर चले। इस पर्वत पर राधिका के पिता वृकभानु निवास किया करते थे। पर्वत के ऊपर और नीचे बहुत-सी मूर्त्तियां हैं। वहां से वे लोग अपने स्थान की ओर लौटे और विस्तर लगा-लगाकर लेट गये। अब गपशप शुरू हुई।

वरुण ने कहा—पहले यहां कुल वन ही वन था। वृन्दा नाम की एक बहुत ही दुश्चरित्रा स्त्री थी। वह गांव के समस्त बालकों तथा बालिकाओं को यहां लाया करती और उनके साथ खूब उछलती-कूदती, तरह-तरह के खेल मचाया करती। उसी के नाम के अनुसार इस स्थान का नाम वृन्दावन पड़ा है। क्योंकि वृन्दावन का अर्थ है वृन्दा का वन। उसी स्त्री ने हमारे कृष्ण को भी खराब कर डाला था।

नारायण—वरुण, चुप रहो भाई, यह सब तुम क्या बक रहे हो? तुम्हें और कोई विषय ही नहीं सूझता बातचीत करने के लिए?

वरुण—उन सब स्त्रियों की संख्या कुल मिलाकर एक सौ आठ थी। उनमें से ललिता, विशाखा, चन्द्रावली आदि आठ सखियां मुख्य थीं। चन्द्रावली उन सबकी अपेक्षा अधिक सुन्दरी थी, इसलिए कृष्ण बहुधा राधिका के पास से चुपके से खिसक जाया करते और उसी के साथ विहार करते।

किसी-किसी दिन तो चन्द्रावली के ही कुंज में रात बिता देने के बाद सवेरा होते-होते कृष्ण राधिका के पास पहुंचते। उस समय उन्हें इतनी डांट खानी पड़ती, जिसका कोई ठिकाना न था। राधिका कितना अवाच्य-कुवाच्य कहने के बाद घूंघट खींचकर मानिनी बन जातीं।

इन्द्र—मानिनी बन जातीं, तब क्या होता?

वरुण—राधिका के रूठ जाने पर कृष्ण जब उन्हें किसी प्रकार न शान्त कर पाते तब और कोई उपाय न देखकर वृन्दा की शरण में जाते। वृन्दा दुष्ट स्त्री तो थी ही, वह उन्हें सिखा देती कि जाओ, उसके पांव पकड़कर, विनती करो। परन्तु इतने पर भी राधिका का मान भंग न होता। तब मन में दुःखी होकर कृष्ण कभी कहते—सन्यासी होकर काशी जाऊंगा। कभी वे कहते—वैष्णव होकर द्वार-द्वार की फेरी

लगाऊँगा। अन्त में विदेशिनी का या और कोई वेश बनाकर वे राधिका के पास पहुँचते। तब वही वृन्दा बीच में पड़कर विवाद का अन्त करती और दोनों में मेल करा देती। वे सब स्त्रियाँ एकत्र होकर हमारे कृष्ण को न जाने कितने प्रकार के नाच नचाया करती थीं।

प्रातःकाल वे लोग काम्यवन देखने को गये। वहाँ पहुँचने पर वरुण ने कहा—पितामह, पासे के खेल में अपना सर्वस्व हार चुकने के बाद राजा युधिष्ठिर इस स्थान पर निवास किया करते थे। यहीं श्रीकृष्ण से उनकी मुलाक़ात हुई थी।

काम्यवन से चलकर वे लोग नन्दनवन में पहुँचे। तब ब्रह्मा ने कहा—नन्दनवन में क्या हुआ था?

वरुण—कंस के भय से श्रीकृष्ण इसी नन्दनवन में छिपे हुए थे। यहाँ नन्द और यशोदा की मूर्त्ति है। श्रीकृष्ण जिसमें से चुरा-चुराकर मक्खन खाया करते थे वह मटकी तथा उनके मस्तक की चूड़ा और उनका पीताम्बर आज भी वर्तमान है।

इन्द्र—ऊपर यह द्वार के आकार का जो दिखाई पड़ रहा है, यह क्या है?

वरुण—यह गोकुल है। गोकुल में श्रीकृष्ण कंस के भय से छिपे हुए थे। यहाँ एक घर में उनके बाल्यकाल के खिलौने तथा दूसरे घर में वसुदेव और देवकी की मूर्तियाँ सुरक्षित हैं। मुसलमानों के भय से गोकुलनाथ यहीं आकर छिपे थे। बाद को वल्लभाचार्य ने उन्हें निकाला था। [illegible] औरंगज़ेब के समय में गोकुलनाथ फिर यहाँ से भाग गये, [illegible] है।

इसके बाद देवगण एक बाज़ार में गये। [illegible] खिलौने की ही [illegible] थीं। यहाँ की [illegible] एक दुकान पर राधा-कृष्ण [illegible] की [illegible] के [illegible] हुआ [illegible] है। [illegible] ब्रह्मा ने

एक नामावली खरीदी। उन्होंने सोचा कि चलो, अच्छा है, प्रातः काल स्नान करके म इसे धारण किया करूंगा।

दिन को एक बजे लौटकर आने पर देवगण ने देखा तो बाबा चैतन्यदास जी उस समय तक शय्या छोडकर उठे नहीं थे। वे पलंग पर पडे ही थे। भिक्षा करके लौटने पर सेवादासियों ने उन्हें उठाया। कोई पैर दाबने लगी, कोई तेल लगाने लगी, कोई चिलम भर ले आई। दो-एक सेवादासियां रसोई के प्रबन्ध में भी लग गईं। उत्तम-उत्तम व्यञ्जन तैयार करके सेवादासियों ने बाबा जी को भोजन कराया, फिर स्वय उसी थाल पर प्रसाद ग्रहण करने के लिए बैठ गईं। चैतन्यदास का यह सुख देखकर नारायण ने मन ही मन स्थिर कर लिया कि अब मैं स्वर्ग न जाऊंगा। वैरागी बनकर थोडी-सी सेवादासिया रख लूंगा और यहीं वृन्दावन में ठाट से रहूंगा।

अन्त में "जय हरी" बोलकर देवगण ने अपनी-अपनी गठरी उठाई। किन्तु नारायण बैठे ही रह गये। तब इन्द्र ने कहा—नारायण, उठो भाई, हम लोगों को कलकत्ता चलना है। तुम इस तरह उदास होकर बैठे क्यो रह गये? वरुण ने जो तुम्हारे सम्बन्ध की बहुत-सी बातें बतला दी हैं, क्या उन्हीं के कारण तुम अप्रसन्न हो गये हो?

वरुण—विष्णु, क्या तुम मुझसे रुष्ट हो गये हो?

नारायण—देवराज, अब मैं स्वर्ग न जाऊंगा।

इन्द्र—क्यो भाई, क्यो? भला स्वर्ग क्यो न जाओगे?

नारायण—किस सुख की आशा से जाऊं भाई? मैं तो समझता हूं कि स्वर्ग में अब कोई सुख ही नहीं है। वहां सबसे बढकर चिन्ता तो है पेट की। दिन भर दौड़-धूप करने के बाद बोझा आदि ढोकर यदि चार पैसे ले भी आये तो घर में सुख से नहीं रहने मिलता, स्त्रियां समस्त दिन परस्पर विवाद ही छेडे रहती हैं। वे आपस में बराबर बक-झक लगाये रहती हैं, कभी-कभी तो हाथा-पाई तक का अवसर आ जाता है। और कहां तक कहूं, मेरा घर क्या है, मानो

अमरावती का बाजार है। तिस पर भी कभी सुनने में आता है पारिजात चाहिए, यह लाओ, वह लाओ। इस तरह विभिन्न प्रकार की माँगें सामने रखकर स्त्रियों तथा घरवालों ने झगड़ा कराने का सामान बराबर तैयार किये रहती हैं। इन सब झञ्झटों से छुटकारा पाने के लिए मैंने तो यही स्थिर किया है कि वैष्णव होकर कुञ्ज में वास करूँगा।

ब्रह्मा—देखो भाई, चाहे देवता हो, गन्धर्व हो, मनुष्य हो, या किन्नर हो, बहु-विवाह सभी के लिए कष्टकर होता है। जो व्यक्ति बहुत-सी स्त्रियों का पाणिग्रहण कर लेता है, उसे कहीं सुख नहीं मिलता। चाहे वह स्वर्ग में रहे, पाताल में रहे या मृत्युलोक में रहे। ऐसी दशा में बहु-विवाह करके तुमने स्वयं ही अपना सुख नष्ट कर डाला है। अब उसके लिए परिताप का अनुभव करना अनुचित है। अब तुम अपने दुष्कर्म के लिए पश्चात्ताप करो और विवाहिता पत्नियों को सुखी करने के लिए प्रयत्न करो। अन्यथा तुम्हारे लोक-परलोक दोनों ही बिगड़ जायँगे।

इन्द्र—नारायन, तुम्हारे कुञ्ज के दिन अब बहुत थोड़े रह गये हैं। सुना है कि रुक्मी अपना सर्वस्व अब तुम्हारे ही नाम लिख कर देनेवाले हैं।

नारायण—उनके पास अब है ही क्या? लोग कहा करते हैं कि सपत्नियों से त्रस्त होकर उन्होंने अपना सर्वस्व मृत्युलोक के कुछ धनवानों को बाँट दिया है।

इन्द्र—सो भी हो भाई! गृहस्थी में जब रहना है तब सभी प्रकार के सुख-दुःख भोगने पड़ते हैं। इसीलिए इसके लिए मन में दुःख मानना अनुचित है। अब उठो, देर करने से यदि गाड़ी न मिल सकी तो मामला आगे न हो सकेगा।

कुछ देर तक अन्य बातें कर नारायण ने इन्द्र से विदा ली और [illegible]

हमारे लिए भोजन तैयार कर रखता तो झटपट थोड़ा-सा खाकर घूमने निकल चलते और समस्त दिन इधर-उधर घूम-फिरकर देखते-भालते।

वरुण—अँगरेजी राज्य में बना-बनाया भोजन भी पाया जाता है। जहाँ यह भोजन बनाया जाता है, उस स्थान को लोग होटल कहते हैं। वहाँ पैसे देकर सस्ता-महँगा हर प्रकार का भोजन प्राप्त किया जा सकता है। वहाँ सोने की भी उत्तम व्यवस्था होती है।

ब्रह्मा—वहाँ भोजन बनाते कौन हैं?

वरुण—ब्राह्मण लोग। वहाँ ऐसे ब्राह्मण नौकर रहा करते हैं जो भोजन बनाने में कुशल होते हैं।

नारायण—अच्छी बात है। अब हम लोग होटल में ही भोजन किया करेंगे। प्रतिदिन हाथ जला-जलाकर भोजन बनाना तो बहुत कष्टकर मालूम पड़ा करता है।

देवगण स्नान के निमित्त यमुना जी की ओर चले।

वहाँ पहुँचकर वरुण ने कहा—पितामह, यमुना-तट की इस बालुका के ऊपर व्यासदेव ने जन्म ग्रहण किया था।

नारायण—आहा! कितना सुन्दर पुल बनाया गया है यह! वरुण, उस पार जो वाटिका दिखाई पड़ रही है, उसका क्या नाम है?

वह अकबर बादशाह का लगवाया हुआ इमदाद बाग है। इसके समीप ही रामबाग नाम का एक और भी बहुत ही सुन्दर बगीचा है, जिसमें अकबर ने एक बहुत ही अच्छी बैठक भी बनवाई थी।

देवगण स्नान करके सन्ध्या-वन्दन कर रहे थे, इतने में घूँघट से मुँह ढके हुए एक स्त्री मूर्ति आई और ब्रह्मा के चरणों में प्रणाम करके रोने लगी।

उसे देखकर विधाता ने कहा—हे दुखिया, तुम कौन हो?

स्त्री-मूर्ति ने कहा—विधाता, अब मुझे भला आप क्यों पहचान पावेंगे? परन्तु मूर्तिका-गृह में इतना अधिक बोझ भरना मेरे भाग्य में लिख देना भला आपको उचित था? मेरा क्या कसूर महाराज! मैं [illegible]

मस्तक की रेखा खूब अच्छी तरह रोये आ रही हैं, जरा इस कलम ठीक से चला दो। अब नहीं सहा जाता ! आह मा ! प्राण निकलने चाहते हैं !

ब्रह्मा ने कहा—अरे यमना हो तुम ? कहो बहन, तुम्हारी यह दशा आज कैसे हुई ? तुम्हारा दुःख देखकर तो मेरा हृदय विदीर्ण होता जा रहा है !

यमना ने कहा—हे विधाता देखा तुम्हारे बनाये हुए मनुष्य मेरी कितनी दुर्दशा कर रहे हैं। उन लोगों ने मुझे प्रयाग आदि स्थानों में ऐसे ढंग से बाध दिया है कि मुझमें करवट बदलकर लेटने की शक्ति ही नहीं रह गई है। इस प्रकार बन्धन में पड़ी-पड़ी मैं अधमरी हो उठी हूँ रात-दिन रोते-रोते अपने आसुओं से जल की वृद्धि कर रही हूँ। ओह मा ! प्राण निकलने चाहते हैं। अब नहीं सहा जाता !

ब्रह्मा ने कहा—हे यमुना महाप्रलय तक तुम्हें इसी अवस्था में रहना पड़ेगा। इतने समय तक तुम रही कहा हो ?

यमुना—प्रयाग से आकर आजकल मैंने इस पुल के नीचे एक गह्वर तयार कर लिया है। उसी में बैठी हुई दिन-रात केवल रोती रहती हूँ। कौन-सा स्थान भग्न होने पर मुझे आघात सहन करना होगा, इस चिन्ता से न तो मेरी आख लगती है और न पेट में अन्न जाता है।

ब्रह्मा—देखो बहन, तुम्हारे भाई यम मेरे मनुष्यों पर बड़ा अत्याचार किया करते हैं। इसी लिए मनुष्य भी तुम्हारी इस प्रकार की अवस्था कर रहे हैं। यम के अन्याय से मन का बड़ा क्लेश होता है। माता-पिता की गोद से वे उनका सर्वस्व धन, एकमात्र पुत्र, छीन लेते हैं। परिवार भर में जो व्यक्ति सबसे उत्कृष्ट होता है, पहले मानो उसी की ओर उनकी दृष्टि घूमती है। जिसे वे देखते हैं कि यह व्यक्ति बहुत बड़े परिवार का पालन कर रहा है, सबसे पहले उसी को लेकर वे निश्चिन्त होते हैं। कितने नन्हें-नन्हें बालकों तथा बालिकाओं के माता-पिता में से पिता को पहले ही झपट लेने में वे आनन्द का

अनुभव किया करते हैं। जो पति-पत्नी एक दूसरे से पृथक होने पर एक क्षण को एक युग के बराबर समझते हैं, जो रात-दिन एक दूसरे का मुँह ताकते रहने पर भी तृप्ति का अनुभव नहीं कर पाते, ऐसे कृत्रिमता से हीन प्रेम के बन्धन को अपने कुठार के आघात से काटकर ये दोनों में सदा के लिए वियोग कर देते हैं। अतएव हे बहन, यह मनुष्य-जाति तुम्हारे भाई का अन्याय और अत्याचार नहीं सहन कर सकी, इसी लिए लोग तुम्हारी यह दुर्दशा कर रहे हैं।

इन्द्र—यम के अन्याय के कारण यमुना को बन्धन में पड़ना पड़े यह कैसा न्याय है?

वरुण—भाग-भागकर खेत चरनेवाली गायों के अपराध से कपिला को बन्धन में डालने में जिस प्रकार के न्याय का उपयोग किया गया था, उसी प्रकार के न्याय का उपयोग यहाँ भी किया गया है।

इसके बाद देवगण होटल को चले। यमुना ने भी जल में प्रवेश करके अपने गह्वर में आश्रय ग्रहण किया। देवगण के होटल में प्रवेश करते ही एक बंगाली बाबू तेजी से पैर बढ़ाते हुए पितामह के पास आये और उनका हाथ पकड़कर बाहर ले आये। यह देखकर दूसरे देवता भी साथ-साथ चले आये।

ब्रह्मा—आप मेरा हाथ पकड़कर बाहर क्यों लाये?

बंगाली—आप भी क्या बहू रंग हैं बाबू साहब? होटल में क्या भले आदमी भोजन किया करते हैं? यहाँ के पाचक [illegible] हैं। हिन्दुओं की जाति नष्ट करने के लिए यहाँ मैनेजर साहब ने [illegible] रख गये हैं। आप लोग कालीघाट में आइए।

ब्रह्मा—कालीघाट क्या है?

बंगाली—[illegible] में [illegible] अधिक अत्याचार होते हैं, इसी लिए हिन्दुओं ने [illegible] कालीघाट [illegible] है। वहाँ [illegible] द्वारा मनुष्यता के [illegible]

के लिए तरह-तरह की खाद्य सामग्रियां बनाई जाती हैं, और वह प्रसाद भोजन के निमित्त यात्रियों को दिया जाता है।

देवगण को कालीबाड़ी में बड़े आदर के साथ रहने के लिए स्थान मिल गया। भोजन-आदि से निवृत्त होकर सांझ को वे लोग नगर में भ्रमण करने के लिए निकले। सबसे पहले वे लोग किले के पास पहुंचे।

वरुण—देखिए पितामह, यही आगरा का किला है। क़िले में प्रवेश करने के लिए जो यह दरवाज़ा है, इसी का नाम है दर्शन-दरवाज़ा। इस दर्शन-दरवाज़े से बेगमें मल्ल-युद्ध आदि देखा करती थीं।

ब्रह्मा—दरवाज़े के मेहराब-आदि तो बहुत ही सुन्दर मालूम पड़ते हैं।

यह प्राय. तीन सौ वर्ष का है, परन्तु देखने में आज भी बिलकुल नया मालूम पड़ता है।

किला में प्रवेश करके सब लोग चले जा रहे थे, इतने में ब्रह्मा ने कहा—वाह, इतना सुन्दर द्वार तो मैंने और कभी देखा ही नहीं। इसकी मेहराब भी बहुत सुन्दर बनी है। यह द्वार किस नाम से प्रसिद्ध है वरुण ?

वरुण—इसका नाम है बुख़ारागेट। इसे आजकल लोग उमराव-सिंह का फाटक कहा करते हैं।

इन्द्र—इसके भीतर तो बहुत उत्तम-उत्तम घर बने हुए हैं। उस छत पर क्या हुआ करता है वरुण ?

वरुण—वह बादशाह का नौबतख़ाना है। इस स्थान पर दिन के प्रत्येक प्रहर में प्रत्येक स्वर में नौबत बजा करती थी। यह नदी की ओर जो स्थान दिखाई पड रहा है, जिसमें कि सफ़ेद पत्थर के अगणित मेहराब बने हुए हैं, उसका नाम है दीवान-ए-ख़ास। इस स्थान पर बैठकर बादशाह अकबर बंगाल, बिहार और

काश्मीर आदि देशों पर आक्रमण करने का कार्यक्रम बनाया करता था। वृद्ध हो जाने पर बादशाह शाहजहाँ यहीं पर क़ैद था। यह काले रंग के संगमरमर का एक सिंहासन है। यह सिंहासन बारह फुट चौड़ा और दो फुट ऊँचा है। इस पर बैठकर अकबर गर्मी की ऋतु में वायु-सेवन किया करता था।

नारायण—आहा! इन्हीं लोगों ने यथार्थ में सुख-भोग किया था। देवता होकर हम लोगों ने क्या किया है?

सब लोगों के शीशमहल के पास पहुँचने पर वरुण ने कहा—देखिए पितामह, इस स्थान की दीवारें काँच की बनी हुई हैं।

इन्द्र—यहाँ क्या होता था?

वरुण—इस घर में बेगमें स्नान किया करती थीं। बादशाह लोग ऐसे अवसर पर इन दीवारों की आड़ से उन्हें देखकर विनोद का अनुभव किया करते थे।

नारायण—शौक़ तो बुरा नहीं था।

ब्रह्मा—यह क्या है जो भिन्न-भिन्न रंग के पत्थरों के टुकड़ों से सजाया हुआ है?

वरुण—यह एक फ़र्श है। उधर बादशाह के अन्तःपुर का बगीचा देखिए! इस बगीचे जैसे सुन्दर पुष्प देवताओं ने कभी स्वप्न में भी नहीं देखे।

यहाँ से देवगण दीवानख़ाना देखने के लिए चले। चलते समय वरुण ने कहा—देखिए पितामह, यह जो आप सुरंग देख रहे हैं, लोगों का कहना है कि इससे होकर भीतर ही भीतर आगरा से दिल्ली तक आदमी चला जा सकता है।

ब्रह्मा—आह, अद्भुत शक्ति थी उन लोगों को! आगे बढ़कर देवगण दीवानख़ाने में पहुँच गये। उसका लम्बा-चौड़ा स्थान देखकर वे लोग आश्चर्य में आ गये। वरुण ने कहा कि यह स्थान लम्बाई में १८० फुट है और चौड़ाई में ६० फुट है। इस कमरे में कुछ

सिंहासन था। उसी पर बैठकर अकबर दरबार किया करता था। सोमनाथ के मन्दिर का जो बहुत प्रसिद्ध चन्दन का दरवाजा था, उसका अपहरण करके डाकू लोग यहीं ले आये थे।

ब्रह्मा—आहा! इस दरवाजे के लिए सदाशिव आज भी मेरे सामने बीच-बीच में दुःख प्रकट किया करते हैं।

वरुण—देखिए, उस ओर मोती मसजिद है। अच्छे से अच्छा संगमरमर पत्थर मोती से मिला-मिलाकर यह मसजिद बनाई गई है। इसी लिए इसका नाम मोती मसजिद पड़ा है। समीप जाकर ब्रह्मा ने कहा—हाँ, निस्सन्देह इसका मोती मसजिद नाम सार्थक है।

वरुण—इस मोती मसजिद में संगमरमर पत्थर के केवल एक टुकड़े से बना हुआ एक सिंहासन था, जिसकी परिधि चालीस फुट थी। उस पर बैठकर अकबर बादशाह प्रतिदिन स्नान किया करता था। उस सिंहासन की सुन्दरता पर मुग्ध होकर इँगलैंड के राजा चौथे जार्ज को उपहार देने के लिए लार्ड हेस्टिंग्ज़ ने उसे विलायत भेज दिया।

इन्द्र—किसका धन किसने किसे उपहार में दिया! अच्छा, यहाँ और क्या-क्या है?

वरुण—यहाँ और कुछ नहीं है। परन्तु एक समय जहाँगीर का शराब पीने का प्याला, जिसकी बड़ी प्रशंसा थी, यहीं पर था। वह प्याला बहुत-सी उत्तम-उत्तम मणियों तथा मुक्ताओं से सुसज्जित था। अँगरेज़ी राज्य के अधिकारी उस प्याले को कलकत्ते के म्युज़ियम में उठा ले गये और वहीं वह रक्खा हुआ है। यहाँ एक बहुत बड़ी तोप थी। लोगों का कहना है कि वह तोप महाभारत के वीर योद्धाओं की थी। वह तोप भी विलायत भेज दी गई है।

इन्द्र—दो-एक चीज़ें देखने से क्या विलायतवालों के कौतूहल की निवृत्ति हो सकती है? यह सारा का सारा मोती मसजिद यदि भेज दिया जाता तो वे कुछ चक्कर में भी आते और भारतवासियों

की कारीगरी तथा उनके बुद्धि-कौशल का उन्हें कुछ परिचय भी मिल सकता।

मोतीमहल देखने के बाद देवगण स्थान पर लौट आये। लौटते समय वरुण ने कहा—देखिए पितामह, किले का जो वह स्थान दिखाई पड़ रहा है, उसके ऊपर से नीचे की ओर एक भयंकर खोह चली गई है। उस खोह का पेंदा कहाँ है, इस बात का निर्णय आज तक नहीं हो पाया है। जब कभी किसी व्यक्ति के विरुद्ध हत्या का अपराध प्रमाणित हो जाता तब बादशाह लोग उसे इसी खोह में डलवा दिया करते थे।

इसके बाद स्थान पर जाकर देवगण लेट गये। लेटे-लेटे वे लोग बहुत-से घरेलू विषयों पर बातें करने लगे। ब्रह्मा ने कहा—हलवाहों को मैं खेतों की ऊँची-नीची जगहों को बराबर करके बीज बोने को कह आया था। यदि वैसा कर दिये होंगे तो अच्छा ही है। अन्यथा बड़ा नुकसान होगा। विचार है कि मृत्युलोक से लौटने के बाद घण्डी के मण्डप को थोड़ा-सा और ऊँचा करके उठावेंगे।

देवगण जहाँ ठहरे हुए थे, उनके पास ही एक मुसलमान के यहाँ विवाह था। बजनियों ने सारी रात एक ही ढंग से बाजे बजाते-बजाते देवगण को परेशान कर डाला।

नारायण ने कहा—इन दुष्टों की टोली का जितना नखरा है, यह सब हमी लोगों के लिए है। विवाह या पूजा के समय जब इन्हें बाजा बजाने के लिए बुलाया जाता है तब पूरे समाज के सामने ये जाते हैं और ढोल पर लकड़ी ही नहीं धरना चाहते। पैसा दो, कपड़ा दो, इनाम दो, जितना भी दो, इनको संतोष नहीं होता। सोचें ये लोग मुसलमानों के ही होते हैं। एक स्वर से रात भर बजाते-बजाते इन लोगों ने दिमाग चौपट कर डाला।

दूसरे दिन सबेरे विश्वविख्यात ताजमहल देखने के लिए रवाना हुए। उसके समीप पहुँचकर ब्रह्मा ने कहा—वरुण, यह क्या है?

मेरे मन में तो ऐसी बात आती है कि मैं अपने चारो मुख और तीनों नेत्र बाहर निकालकर देखूं और खूब देखूं। यह सुनकर इन्द्र ने कहा—मेरी भी इच्छा होती है कि अपने सहस्र लोचन निकाल लूं। परन्तु इस बात का भय होता है कि कहीं नये ढग का जीव समझकर लोग मुझे चिड़ियाखाने में न बन्द कर लें।

नारायण ने कहा—जिसने यह ताजमहल बनाया था, वह हमारे विश्वकर्मा के बाबा का भी बाबा है।

वरुण—देखिए, इसकी पांचो चूड़ायें कितनी ऊंची है। ताजमहल यमुना जी के बिलकुल ऊपर बना हुआ है, इसलिए नौका पर से देखने में यह बहुत ही सुन्दर मालूम पडता है। इसकी जितनी ऊँची मसजिद भूमण्डल में दूसरी नहीं है। बाइस हजार आदमियो ने मिलकर बाइस वर्ष में इसे बनाया था। आगरा ताजमहल के ही कारण प्रसिद्ध है।

ब्रह्मा—दीवार पर पुष्प-लता तथा वृक्ष आदि जो बने हुए हैं, वे पहले देखने में ऐसे जान पड़ते है कि मानो ये बिलकुल असली हैं।

वरुण—एक समय था जब कि ये पुष्प-लता और वृक्ष आदि हीरा और मणि के द्वारा सजाये गये थे। मरहठे डाकू वे सब हीरा-मणि दीवारो से खोदकर निकाल ले गये।

मसजिद में प्रवेश करके चकित-भाव से सब लोग चारो ओर देखने लगे। एक कब्र देखकर इन्द्र ने कहा—वरुण, यह कैसा स्थान है?

वरुण—इसे लोग मुमताजमहल कहते है। यहीं पर शाहजहाँ को दफनाया गया है।

ब्रह्मा—इस ओर जो कब्र दिखाई पड़ रही है, वह किसकी है? इसके सिवा इस ताजमहल के बनवाने का उद्देश्य क्या है?

वरुण—उधरवाली कब्र शाहजहां की प्यारी बेगम मुमताज की है। एक दिन सम्राट् के साथ ताश खेलते-खेलते बेगम ने कहा—नाथ मेरे मरने पर तुम क्या करोगे? इसके उत्तर में सम्राट् ने कहा—प्यारी,

मैं ऐसे स्थान पर तुम्हारी कब्र बनाऊँगा जो कि समस्त भूमण्डल में विख्यात होगा। उसके बाद से ही शाहजहाँ ने यह ताजमहल बनवाना आरम्भ कर दिया। इसके बनवाने में बहुत-से राजाओं से बड़ी सहायता मिली थी। जयपुर के राजा ने बहुत-से बहुत ही उत्कृष्ट पत्थर दिये थे। ये सब पत्थर अस्सी कोस की दूरी से गाड़ी पर लादकर लाये गये थे।

नारायण—इसके भीतर और क्या है?

यवन—नूरजहाँ की लड़की अजबजा की भी यहीं पर क़ब्र है। शाहजहाँ के साथ अजबजा का भी विवाह हुआ था। ताज से लगा हुआ जो बग़ीचा है, वह भी बहुत ही मनोरम है। बग़ीचे के भीतर को जानेवाले रास्ते के दोनों किनारों पर थोड़ी-थोड़ी दूर पर पानी के बहुत ही अच्छे अच्छे फ़ौवारे बने हैं, जो बहुत ही उत्तम श्रेणी के हैं। इन फ़ौवारों की संख्या ८३ है। इसके पूर्व में कई एक मसजिदें हैं। अन्य दिशाओं में बहुत-सी गिरी-पड़ी अट्टालिकाओं की दीवारें आदि देखने में आती हैं। यहाँ संगमरमर का बना हुआ एक पुल भी है। इस पुल का बनना जब आरम्भ हुआ तब शाहजहाँ तथा उनके किसी पुत्र में युद्ध आरम्भ हो गया, इससे इस पुल का बनना स्थगित हो गया।

ब्रह्मा—वास्तविक आगरा कौन-सा स्थान है?

यवन—आगरा यमुना के दोनों तटों पर बसा हुआ है। आगरा के चौक की प्रशंसा सुनकर वे लोग चौक देखने के लिए चले।

चौक में पहुँचने पर मणि-मुक्ता तथा अन्यान्य प्रकार की सामग्रियों की दूकानें देखकर वे लोग बहुत ही आह्लादित हुए। [illegible] ने अपने पौत्र के विवाह के अवसर पर उसकी वधू को देने के लिए पत्थर का बना हुआ पाँच रुपये का एक ताजमहल ख़रीदा। ब्रह्मा ने [illegible] था [illegible] रखा था [illegible] था। इसके [illegible] आगरा में एक नया [illegible]। पूरा करके

मेरे मन में तो ऐसी बात आती है कि मैं अपने चारों मुख और आठों नेत्र बाहर निकालकर देखूं और खूब देखूं। यह सुनकर इन्द्र ने कहा—मेरी भी इच्छा होती है कि अपने सहस्र लोचन निकाल लूं। परन्तु इस बात का भय होता है कि कहीं नये ढंग का जीव समझकर लोग मुझे चिड़ियाखाने में न बन्द कर लें।

नारायण ने कहा—जिसने यह ताजमहल बनाया था, वह हमारे विश्वकर्मा के बाबा का भी बाबा है।

वरुण—देखिए, इसकी पाँचो चूडायें कितनी ऊँची हैं। ताज-महल यमुना जी के बिलकुल ऊपर बना हुआ है, इसलिए नौका पर से देखने में यह बहुत ही सुन्दर मालूम पड़ता है। इसकी जितनी ऊँची मसजिद भूमण्डल में दूसरी नहीं है। बाइस हजार आदमियों ने मिल-कर बाइस वर्ष में इसे बनाया था। आगरा ताजमहल के ही कारन प्रसिद्ध है।

ब्रह्मा—दीवार पर पुष्प-लता तथा वृक्ष आदि जो बने हुए हैं, वे पहले देखने में ऐसे जान पड़ते हैं कि मानो ये बिलकुल असली हैं।

वरुण—एक समय था जब कि ये पुष्प-लता और वृक्ष आदि हीरा और मणि के द्वारा सजाये गये थे। मरहठे डाकू वे सब हीरा-मणि दीवारों से खोदकर निकाल ले गये।

मसजिद में प्रवेश करके चकित-भाव से सब लोग चारो ओर देखने लगे। एक कब्र देखकर इन्द्र ने कहा—वरुण, यह कैसा स्थान है?

वरुण—इसे लोग मुमताजमहल कहते हैं। यहीं पर शाहजहाँ को दफनाया गया है।

ब्रह्मा—इस ओर जो कब्र दिखाई पड़ रही है, वह किसकी है? इसके सिवा इस ताजमहल के बनवाने का उद्देश्य क्या है?

वरुण—उधरवाली कब्र शाहजहाँ की प्यारी बेगम ममताज की है। एक दिन सम्राट् के साथ ताश खेलते-खेलते बेगम ने कहा—न थ मेरे मरने पर तुम क्या करोगे? इसके उत्तर में सम्राट ने कहा—प्यारी,

बगी सींचनी होगी। इसलिए तुम जब तक जीवित रहो, तब तक जरा-जरा-से दाना-पानी से संतोष करके इस कार्य में लगे रहो। किसलिए व्यर्थ में डंडे की चोट खा-खाकर यन्त्रणा सहन कर रहे हो? जब तक यमराज का निमन्त्रण तुम्हारे पास तक न पहुँच पावेगा तब तक तुम्हारा पिंड छूटने का नहीं है।

क्रमशः देवगण त्रिवेणी के तट पर पहुँच गये। वहाँ पहुँचकर उन्होंने देखा कि क्षेत्र की बालुका-राशि पर एक सुन्दर-सा नगर बसा हुआ है। नाई लोग बगल में किस्बत दबाये और हाथ में लोटा लिये हुए प्रसन्न-भाव से इधर-उधर दौड़ रहे हैं। उन्हें देखकर ब्रह्मा ने कहा—वरुण, ये लोग कौन हैं? इतने प्रसन्न ये क्यों दिखाई पड़ रहे हैं?

वरुण ने कहा—ये सब प्रयाग के नापित हैं। माघ मास में इन लोगों की खूब बन आती है। यात्रियों के मस्तक पर छूरे चला-चलाकर ये लोग इस एक महीने में काफी रुपये कमा लेते हैं। इस वर्ष यात्री कुछ अधिक संख्या में आगये हैं, इससे ये लोग अधिक प्रसन्न हैं।

संगम के समीप ही बने हुए प्रयाग के सुप्रसिद्ध क़िले की ओर संकेत करके देवराज ने कहा—वरुण, यह क्या दिखाई पड़ रहा है?

वरुण—यह इलाहाबाद-फोर्ट—क़िला है। सिपाही-विद्रोह के समय यह क़िला बहुत ही विकराल रूप का हो गया था। अंगरेज लोग इस क़िले की बहुत ही प्रशंसा किया करते हैं।

इन्द्र—इसका निर्माण किसने करवाया था?

वरुण—बहुत दिन पहले हिन्दू राजाओं के द्वारा इसका निर्माण हुआ था। बाद को इसका ध्वंस हो गया था। केवल चहारदीवारी ही बची हुई थी। अन्त में अकबर ने नये सिरे से इसका निर्माण करवाया। आजकल यह अंगरेजों के अधिकार में है। इस प्रकार हिन्दू, मुसलमान और अंगरेज, इन तीन जातियों का इस पर आधिपत्य रहा और

इसके निर्माण में तीनों ही जातियों की रुचि का योग है। क़िले के भीतर अक्षय-वट और एक शिव-लिंग है।

चलो, हम लोग अक्षय-वट देख आवें, यह कहकर विधाता देवगण को लिये हुए क़िले की ओर चले। रास्ते में उन्हें एक साहब दिखाई पड़ा। जिसके पीछे-पीछे कई हिन्दुस्तानी चले आ रहे थे। पूछ-ताछ करने पर मालूम हुआ कि साहब एक पादरी है और जो लोग उसके पीछे-पीछे चल रहे हैं, वे सब अभी हाल में ईसाई-धर्म की दीक्षा ग्रहण करने के बाद अन्धकार से प्रकाश में आये हैं। ये हिन्दुस्तानी या नव-दीक्षित ईसाई अर्थाभाव के कारण मैले-कुचैले कपड़े पहने हुए थे। शरीर में भी इनके ऐसा लावण्य नहीं था। बग़ल में ये सब थोड़ी-थोड़ी-सी किताबें दबाये हुए थे। देखने पर जान पड़ता था कि शायद ये फेरी-वाले हैं और किताबें बेचने के लिए निकले हुए हैं। ये पुस्तकें खूब उदारतापूर्वक वितरित की जा रही थीं। नारायण भी दौड़कर एक पुस्तक माँग ले आये।

वरुण—नारायण, फेंक दो यह पुस्तक, फेंक दो। इसे फेंककर प्रयाग में मस्तक मुंडवाओ। ईसाई-धर्म की पुस्तक तुमने कैसे छू ली? जानते हो तुम? देवतागण यदि यह बात जान पायेंगे, तो तुमसे प्रायश्चित्त करवाये बिना न रहेंगे।

नारायण—यह क्या ईसाई-धर्म की पुस्तक है? मुझे तो मालूम नहीं था। कल रात्रि में तम्बाकू लपेटने में असुविधा मालूम पड़ रही थी, इससे मैंने इसे ले लिया था।

ब्रह्मा—नहीं, तुम इसे फेंक दो। क्यों वरुण, क्या वे लोग गङ्गा-स्नान के निमित्त आये हैं?

वरुण—जी नहीं। ये लोग मेले में प्रायः दिखाई पड़ते हैं और हिन्दू-धर्म की निन्दा करके लोगों को ईसाई बनाने का प्रयत्न किया करते हैं।

देवगण के क़िले में प्रवेश करने पर वरुण ने कहा—यह किला नगर से दूर मैदान में बना हुआ है और मैदान के ऐसे कोने पर बना

हुआ है, जहाँ पर गङ्गा और यमुना एक-दूसरे से मिलती हैं। उधर देखिए, यह बादशाह अकबर का राजभवन है। उस राजभवन में स्नान के निमित्त जल में उतरने के लिए जो सीढ़ी बनी थी, वह आज भी बनी हुई है। इसी सीढ़ी पर बैठकर पहले मुग़ल-रमणियाँ स्नान किया करती थीं। अक्षयवट देखकर ब्रह्मा ने कहा—इस वृक्ष को देखकर मुझे सन्देह होता है कि पण्डों ने एक बनावटी पेड़ लगा रक्खा है।

इन्द्र—इसमें कोई आश्चर्य नहीं है। मृत्युलोक के निवासी आजकल धन के इतने लोभी हो गये हैं कि पुण्य का लोभ दिखलाकर दूसरों से पैसे ऐंठना उनके लिए कोई ऐसी बात नहीं रह गई है। भीड़ की गर्दा देखकर देवगण त्रिवेणी जी के क्षेत्र में लौट आये।

क्षेत्र में अगणित नाई, पंडे, पांडिया, भिक्षुक आदि यात्रियों के काटने तक छील लेने पर उतारू थे। सभी पंडे थोड़ा-थोड़ा-सा स्थान अपने अधिकार में किये हुए बैठे थे और अपनी-अपनी चौकी के पास अपना-अपना झंडा गाड़े हुए थे। देखने में ऐसा जान पड़ता कि मानो यह स्थान कोई बन्दरगाह है और अँगरेजों, जर्मनों तथा जापानियों आदि के व्यापारिक जहाज खड़े होकर अपनी-अपनी पताका उड़ा रहे हैं। घाट पर भी बड़ा कोलाहल था। कोई-कोई लोग तो स्नान से निवृत्त होकर पूजा कर रहे थे, कोई मुण्डन करा रहे थे और किसी-किसी की पंडों के साथ दक्षिणा के सम्बन्ध में वाद-विवाद के साथ ही साथ हाथापाई तक की नौबत आ रही थी। किसी-किसी के हाथ से भिक्षुकगण पैसे ही छीने ले रहे थे।

भीड़ में होकर त्रिवेणी तट के पास आकर उपस्थित हुए और ऊँचे स्वर से बोले—भाई, [illegible], [illegible] जी, एक बार फिर मेरे कमण्डलु में जल भर लो।

इतना कहकर [illegible] लगे। यह देखकर इन्द्र ने कहा—यह क्या कर रहे हैं नारद? क्या आप जानते हैं कि [illegible] के कानून

हो जाय कि आप कौन हैं? आप घबराते क्यों हैं? जहाँ कहीं भी सम्भव होगा, मैं आपसे उनकी मुलाकात करा दूंगा।

नारायण—इनके कारण तो मामला बडा ही गड़बड हो रहा है। कही पुलिसवाले पकडकर इन्हे पागलखाने में न डाल दें।

इतने में नाई आया और छुरा चमकाने लगा। विधाता ने कहा—तुम लोग मुण्डन करवाकर स्नान कर लो।

नारायण—मस्तक के वाल तो मुझसे न बनवाये जायँगे।

ब्रह्मा—नारायण क्या कह रहे हो तुम? मृत्युलोक की हवा में आकर क्या तुम भी नास्तिक हो गये हो? तीर्थ का जो माहात्म्य है, उसके अनुसार कार्य करो।

नारायण—मुझसे तो भाई यह न हो सकेगा। आप ज्येष्ठ हैं, आपने मुण्डन करवा लिया तो समझ लीजिए कि हमने भी करवा लिया। दक्षिणा के रूप में नापित महोदय को कुछ दे देने में अवश्य मुझे कोई आपत्ति नहीं है।

'तुम लोगो की जो इच्छा हो, वही करो। इसी प्रकार तो उत्तरोत्तर हिन्दुत्व का नाश होता जा रहा है।"

इतना कहकर ब्रह्मा मुण्डन कराने लगे। गङ्गा के वियोग के कारण उनके दोनो नेत्रों से आँसू बह रहे थे। इतने में पादरी साहब भी अपना दल लिये हुए उनके पास आ पहुँचे। उन्होंने कहा—बुड्ढा, टुम गङ्गा-गङ्गा करके रोटा है! कितना अफसोस है! वह टो पानी है। वह क्या टुमको डर्शन डेगा। इतना कहकर वह चला गया।

इन्द्र—साहब तो अच्छा रग झाड गया। अच्छा वरुण, इस कीचड में किसकी मूर्त्ति पड़ी है?

वरुण—यह हनूमान् की मूर्त्ति है। जान पड़ता है कि हनूमान् के मन में अहङ्कार बहुत अधिक था। उन्होंने यह सोच रक्खा था कि ससार में मेरे समान कोई और वीर नहीं है, मेरे सिवा और कौन इतना शक्तिशाली हो सकता है जो इस अजेय समुद्र पर सेतु का निर्माण कर सके।

परन्तु जब से उन्होंने यमुना का पुल देखा है, तब से उनकी बुद्धि ठिकाने पर आई है। अब उन्होंने अनुभव किया कि संसार में मैं ही सब कुछ नहीं हूं, मेरे भी दादा हैं। इसलिए व्यर्थ का अहङ्कार करके मैंने जो पाप किया है, उसके प्रायश्चित्त के लिए प्रयाग में मुण्डन करवाना चाहिए। अन्त में मुण्डन करवा चुकने पर भी जब उनके मन की ग्लानि न दूर हुई तब यहीं कीचड़ में वे पड़ गये। इस प्रकार पड़े-पड़े वे पश्चात्ताप कर रहे हैं।

स्नान से निवृत्त होकर तट पर आने पर देवगण ने देखा तो पादरी साहब खड़े होकर व्याख्यान दे रहे थे और बहुत-से अशिक्षित आदमी उन्हें घेरकर खड़े थे। साहब कह रहे थे—हाय, इससे बढ़कर अफ़सोस की बात और क्या हो सकती है कि जो जल एक साधारण जल है, उसे तुम हिन्दू लोग देवता मानकर पूजते हो, उसके सामने माथा मुंड़ाते हो। यह गुनाह है। अब तुम लोग इस अन्धकार से निकलो। रोशनी में आओ। प्रभु यीशु से क्षमा मांगो। वे तुम्हारा उद्धार करेंगे।

समीप ही कोई हिन्दू युवक खड़ा था। उतावली के साथ बढ़कर उसने एक ईसाई का हाथ पकड़ लिया और बोला—भाई साहब, क्या तुम लोग रोशनी में आगये हो?

मस्तक हिलाते हुए ईसाई ने कहा—हुं-हुं।

नारायण—साहब हिन्दी अच्छी बोलता है। भूल केवल इतनी करता है कि त के स्थान पर ट और द के स्थान पर ड कह जाता है।

पादरी—भाइयो, ईश्वर ने इस जगत् पर इतना प्रेम किया कि अपने अकेले बेटे यीशु को भी जगत में भेज दिया। जो कोई अपने पापों के लिए मन में दुःखी होकर उसकी शरण में आवेगा, [illegible] उद्धार कर देंगे। यीशु ने जगत के पाप के लिए अपने प्राण दिये। अपना [illegible] उन्होंने जगत का उद्धार किया। तुम लोग उन्हीं प्रभु का भजन करो। उनको छोड़कर तुम [illegible] और कहीं न हो सकता। और [illegible]—

[illegible] हिन्दू [illegible]

दक्ष-प्रजापति के यज्ञ के अवसर पर पति की निन्दा सुनकर सती ने जब प्राण-त्याग कर दिया तब देवाधिदेव महादेव विक्षिप्त-से होकर वह मृत शरीर मस्तक पर लादे हुए तीनों लोकों में भ्रमण करने लगे। यह देखकर नारायण ने अपने चक्र से उस शव को बावन खण्डों में विभक्त कर दिया। बाद को एक-एक करके ये सभी खण्ड भिन्न-भिन्न स्थानों पर गिरे और ऐसे प्रत्येक स्थान पर आज भी देवी की एक-एक मूर्ति विराजमान है। प्रयाग में उनके दाहिने हाथ की उँगली गिरी थी, इसलिए यहाँ अलोपीदेवी हुईं।

अलोपीदेवी का दर्शन करने के बाद देवगण भरद्वाज आश्रम की ओर चले। सड़क के दोनों किनारों पर क़तार के क़तार वृक्ष लगे होने के कारण सन्ध्या के पूर्व एक अपूर्व छटा आ गई थी। आश्रम में कई एक शिव-मन्दिर हैं। देवगण के वहाँ पहुँचने पर पण्डों की युवती कन्याएँ पैसों के लिए इतना तंग करने लगीं कि वे लोग भाग आने के लिए बाध्य हुए।

दूसरे दिन बी० एन० डब्ल्यू रेलवे के पुल के समीप दशाश्वमेध घाट पर स्नान करके देवगण वेणीमाधव के मन्दिर में गये। उसके बाद वे वासुकि के दर्शन के लिए गये। राजा वासुकि का मन्दिर एक बँधे हुए घाट पर बना हुआ है। मन्दिर को लपेटती हुई सर्प की एक बहुत बड़े आकार की मूर्ति बनाई गई है। राजा वासुकि का घाट एक बहुत ही उत्तम घाट है और नगर का सम्भवतः यह सर्वश्रेष्ठ घाट है, यद्यपि गङ्गा जी घाट से प्रायः दूर बहा करती हैं।

अब देवगण शिवकोटी की ओर चले। कहा जाता है कि वन जाते समय श्री शिव की आराधना करके रामचन्द्र जी ने इनकी पूजा की थी। इनका पूजन करने से कोटि शिव के पूजन का फल प्राप्त होता है, इसलिए ये शिवकोटी महादेव के नाम से प्रसिद्ध हैं।

शिवकोटी महादेव का दर्शन करने के बाद गङ्गा जी पर बना हुआ [illegible] ब्रिज देखकर देवगण ऐसे अपूर्व पुल का [illegible] करने। पुल के आगे बढ़े होकर वे [illegible]

आलफ्रेड पार्क में बने हुए थार्नहिल मेमोरियल, विशेषत पब्लिक लाइब्रेरी की, प्रशसा किये बिना वे न रह सके, यद्यपि लाइब्रेरी में अंगरेजी भाषा की पुस्तको की तुलना में देवभाषा संस्कृत की पुस्तकें नहीं के बराबर ही मालूम पडीं। हाईकोर्ट से विश्वविद्यालय की ओर आते समय उन्होने मेयोहाल भी देख लिया था।

देवगण तांगे पर सवार होकर जब आलफ्रेड पार्क से निकलने लगे, तब तांगेवाले ने पूछा—बाबा जी, क्या मिंटोपार्क भी ले चलूं ? किले के समीप यमुना जी के तट पर बना हुआ होने के कारण यह पार्क बहुत ही मनोरम है। इस पार्क में एक स्तम्भ पर महारानी विक्टोरिया की घोषणा खुदी हुई है। परन्तु समयाभाव के कारण वे वहां न जाकर सीधे स्टेशन गये। यथा-समय टिकट लेकर देवगण मिर्जापुर की गाडी पर सवार हुए। प्रयाग से चलते समय देवगण को इस बात का खेद रहा कि गमनागमन की सुविधाजनक व्यवस्था न होने के कारण वे शृङ्गवेरपुर, पाण्डेश्वर महादेव, दुर्वासा-आश्रम तथा सुजावन देवता और कौशाम्बी आदि महत्त्वपूर्ण स्थानो को न देख सके।

मिर्ज़ापुर

प्रयाग से चलकर देवगण मिर्जापुर पहुंचे। स्टेशन पर उतरकर पत्थर के एक किले के पास से होते हुए वे लोग जाकर चौक पहुंचे और वहां अगणित दूकानें देखकर स्नान के निमित्त गङ्गा जी की ओर चले। गङ्गा जी के तट पर पहुंचकर उन्होने देखा कि पत्थर के कई अच्छे-अच्छे घाट बने हुए है। जल में उस समय कई नौकायें तैर रही थीं। उन नौकाओ में से किसी-किसी पर बैठकर मुसलमान मल्लाह भात खा रहे थे। किसी-किसी नौका का कड़कड शब्द करके पाल खोला जा रहा था और किसी-किसी का आधा खुला हुआ पाल हवा के वेग से फटाफट कर रहा था। नारायण एक दृष्टि से

उन नौकाओं की ओर देखते रहे। अन्त में वरुण से उन्होंने विभिन्न आकार-प्रकार की नौकाओं का विवरण पूछा।

ब्रह्मा ने कहा—नारायण, तुम इस प्रकार एक दृष्टि से नौकाओं की ओर क्यों ताक रहे हो? चलो, जल्दी से स्नान से निवृत्त हो लें।

इन्द्र—यहां काष्ठ इतनी अधिक मात्रा में क्यों रक्खा हुआ है?

वरुण—काष्ठ की बिक्री का यह एक बहुत बड़ा केन्द्र है। यहां खरीदने पर दाम में भी किफायत होती है।

इन्द्र—मुझे अपनी बैठक की छत बदलवानी है। इसलिए दस-बीस कड़ियों की आवश्यकता पड़ेगी। क्या यहां से ले जाने में कुछ सुविधा होगी?

स्नान के निमित्त जल में प्रवेश करते समय वरुण ने कहा—मिर्जापुर में चोरों का बड़ा उपद्रव है। इसलिए यह अधिक अच्छा होगा कि हम लोगों में से कोई आदमी सामान आदि देखता रहे, और लोग स्नान करें।

पितामह ने कहा—घाट पर आदमी तो कोई बैठा है नहीं, क्या एक बार डुबकियां लगाने भर में ही कोई सामान उठा ले जायगा? इतना कहकर वे स्नान के निमित्त आगे बढ़े कि आंखें मूंदकर ध्यान लगाये हुए एक संन्यासी की ओर उनकी दृष्टि गई। तब उन्होंने सारी चीजें उस संन्यासी के पास रखकर वस्त्र आदि को आगे करके कहा—महाराज, हमारी इन चीजों की ओर भी जरा दृष्टि रखियेगा। कुछ मुस्कराहट के साथ मस्तक हिलाकर संन्यासी ने अपनी स्वीकृति प्रकट की। तब देवगण जल में प्रवेश करके निश्चिन्त भाव से डुबकियां ले लेकर स्नान का आनन्द लेने लगे। [illegible] [illegible] हो [illegible] [illegible] गया। [illegible] [illegible] बहुत प्रसन्न हुआ।

स्नान से निवृत्त होने पर देवगण ने देखा तो संन्यासी वहां नहीं था। सामान की ओर ध्यान जाने पर मालूम हुआ कि आवश्यक

आगरा से जो दरी, ग़लीचा आदि ख़रीद ले आये थे, वह सब नहीं हैं। इससे वे दग रह गये। क्रोध में आकर उन्होंने कहा—इस पाजी ने मेरे ही ऊपर हाथ साफ कर दिया ?

आश्चर्य में आकर ब्रह्मा ने कहा—वरुण, यह कैसी बात है? सन्यासी के वेश में भी चोर! साधु के वेश में भी असाधु!! इस तो आदमी को पहचानना बडा कठिन है।

वरुण ने कहा—भाग्य से ही रुपयोंवाले वस्त्र में उसने हाथ नहीं लगाया, अन्यथा कलकत्ता जाने की बात हवा हो जाती।

यहाँ से देवगण भोगमाया के दर्शन के निमित्त चले। वहाँ पहुंचते ही कई एक सड-मुसड पडो ने आकर इन्हें घेर लिया। उन्हें देखते ही देवगण की आत्मा सूख गई। उन्होंने मन में यही स्थिर किया कि ये सब पूरे डाकू हैं।

वरुण ने कहा—पितामह, पीतल के खम्भो से घिरे हुए इस सङ्कीर्ण गृह में देवी की जो मूर्त्ति है, वह भोगमाया की है। देखिए, मन्दिर के चारों ओर देवी की और भी कितनी मूर्तियां हैं।

पडे लोग पैसे के लिए बहुत परेशान कर रहे थे, इससे देवगण ने मन्दिर में नहीं प्रवेश किया। किराये की एक गाडी पर बैठकर वे लोग विन्ध्याचल में अधिष्ठित योगमाया के दर्शन के निमित्त चले।

विन्ध्याचल

प्रयाग से आते समय देवगण मिर्ज़ापुर न जाकर विन्ध्याचल में ही उतरना चाहते थे, परन्तु जिस गाड़ो से वे आये थे, वह वहां नहीं रुकती थी, इससे मिर्ज़ापुर में ही उतरने के लिए बाध्य होना पडा। अब मिर्ज़ापुर से चलने पर दूर से ही विन्ध्यपर्वत देखकर ब्रह्मा ने कहा—वरुण, यदि इस पर्वत पर योगमाया रहती है तब आग न

बढ़कर यहीं से लौट चलना ठीक होगा। इतना जीर्ण शरीर लेकर देव-दर्शन के निमित्त पर्वत पर तो मुझसे चढ़ा न जायगा।

वरुण—जी नहीं, चढ़ने में किसी प्रकार का क्लेश न होगा। देवी जी के एक भक्त ने बहुत-सा रुपया खर्च करके एक सीढ़ी बनवा दी है।

क्रमशः गाड़ी आकर सीढ़ी के पास खड़ी हुई। देवगण एक-दूसरे का हाथ पकड़कर ऊपर चढ़ने लगे। अन्त में आकर वे मन्दिर के पास पहुँच गये। आस-पास बैठकर पण्डित लोग पाठ कर रहे थे।

ब्रह्मा ने कहा—इस मूर्त्ति की स्थापना किसने की है?

वरुण ने कहा—जिस समय श्रीकृष्ण ने देवकी के आठवें गर्भ से जन्म ग्रहण किया था, ठीक उसी समय महामाया भी यशोदा के गर्भ से उत्पन्न हुई थीं। श्रीकृष्ण के अवतार ग्रहण करते ही वसुदेव को यह आकाशवाणी सुनाई पड़ी कि तुम इस रात्रि के समय में ही अपने पुत्र को यशोदा के सूतिकागृह में रखकर उनकी कन्या उठा ले आओ। आकाशवाणी सुनते ही वसुदेव कारागार से निकल पड़े और उपर्युक्त प्रकार सन्तान-विनिमय करके लौट आये। कारागार में आते ही महामाया ने चिल्ला-चिल्लाकर रोना आरम्भ किया। रोने का शब्द सुनकर पहरेदारों ने कंस को सूचना दी कि देवकी को सन्तान हुई है। कंस ने आकर देखा कि इस बार देवकी को पुत्र न होकर कन्या हुई है। इससे वे सोचने लगे—देवर्षि नारद ने तो यह कहा था कि देवकी के आठवें गर्भ से जो पुत्र उत्पन्न होगा, वही मेरा अन्त करेगा। परन्तु इस बार तो पुत्र न होकर कन्या हुई है। निरर्थक इसका वध करने से क्या लाभ होगा? परन्तु क्षण भर में उसके मन में फिर यह बात आई कि चाहे कुछ भी हो, यह उपेक्षा का काम नहीं है। इसका अन्त कर डालना ही उचित है। यह सोचकर कारागार में प्रवेश करके उसने तत्काल ही उत्पन्न हुई कन्या को उठा लिया और जोर से पत्थर पर पटककर मार

समाधि की ओर संकेत करके वरुण ने कहा—नाथ जी यहीं बैठकर तपस्या किया करते थे। यहाँ कोई दूसरा आदमी नहीं तपस्या कर सकता। जिस किसी ने प्रयत्न किया है, उसी के सामने भयंकर बाधा उपस्थित हुई है और वह इस योग्य नहीं रह गया कि तपस्या कर सके। अस्तु, उसके बाद उन लोगों ने विन्ध्याचल से प्रस्थान किया। मुग़लसराय से होते हुए वे लोग सिकरौल पहुँचे।

काशी

सिकरौल स्टेशन पर उतरने के बाद देवगण ने किराये की एक गाड़ी की और गोदौलिया से होते हुए वे सीधे चौक पहुँचे। वहाँ गाड़ी से उतरकर पतली-पतली गलियों में चक्कर काटते हुए वे मणिकर्णिका घाट पर पहुँचे। वृद्ध पितामह का हाथ पकड़े हुए नारायण उन्हें जल के समीप ले गये। चिल्लू में थोड़ा-सा गङ्गाजल लेकर पितामह ने मस्तक से लगाया और विह्वल-भाव से कहने लगे—आह! कृतार्थ हो गया। गङ्गे, आओ बेटी, इस कमण्डलु में आ जाओ। इतना कहकर पितामह रोने लगे। उस समय ममता ने उन्हें इतना अभिभूत कर रक्खा था कि उनके आँसू किसी प्रकार बन्द ही नहीं होते थे।

पितामह की यह अवस्था देखकर वरुण ने कहा—आप यह क्या कर रहे हैं? मृत्युलोक में आकर आप पागल तो नहीं हो गये हैं?

ब्रह्मा ने किसी प्रकार अपने को सँभालकर कहा—वरुण, सच सच बतलाओ भैया, बेटी गङ्गा को इतना पुकारता हूँ, परन्तु वह मुझे दिखाई नहीं पड़ती। उसका किसी प्रकार का अनिष्ट तो नहीं हुआ है?

सदाशिव के लिए सिंहासन खाली नहीं किया। अब सदाशिव ने सोचा कि जब तक दिवोदास के किसी प्रकार के पाप-कर्म का पता न लगाया जा सके तब तक काशी से उसे हटाना सम्भव नहीं है। इससे बहुत सोच-विचार करने के बाद उन्होंने चौंसठ योगिनियों को आज्ञा दी कि तुम लोग कुमारी के वेश में काशी जाओ और वहाँ गुप्त रीति से दिवोदास के पाप-कर्मों का पता लगाओ।

सदाशिव की आज्ञा के अनुसार वे कुमारी-रूपधारिणी योगिनियाँ काशी में पहुँच गईं और घर-घर घूमकर पता लगाने लगीं। परन्तु कहीं किसी प्रकार के भी पाप का पता न चल सका। इस प्रकार काशी में रहते-रहते अधिक समय बीत जाने पर योगिनियों को उस स्थान से ममता हो गई और वे वहीं बस गईं। अन्त में सदाशिव ने अपना स्थान प्राप्त करने के लिए और भी कई प्रकार के उपाय किये और उनके द्वारा सफलता प्राप्त करके जब काशी में आये तब योगिनियाँ लज्जा से मस्तक झुकाये हुए आकर उनका चरण पकड़कर रोने लगीं। सदाशिव ने हँसकर कहा—तुम्हें भय नहीं है। मेरे कार्य में असफल होने पर भी जब तुम लोग भागकर कहीं अन्यत्र नहीं गई हो, मेरे प्रिय स्थान काशी में ही वास कर रही हो, तब मैं सन्तोष-पूर्वक यह वर दे रहा हूँ कि आज से जो कोई भी यात्री काशी आवेगा, वह पहले तुम्हारे नाम पर कुमारी-भोजन करावेगा। कुमारी-भोजन कराये बिना मैं उसकी पूजा न ग्रहण करूँगा।

[illegible] की [illegible] से कैलाश को कुछ कुमारियाँ [illegible] और उन्होंने वहाँ कुछ [illegible] कराया। यहाँ यह [illegible] आवश्यक न होगा कि [illegible] के कुमारियों [illegible] के कारण [illegible] कई कुमारी [illegible] किया था, किन्तु [illegible] नहीं [illegible]।

लोग ढुढिराज गणेश की पूजा कर आवें। उनकी पूजा किये बिना विश्वेश्वर का दर्शन करना उचित नहीं है।

इन्द्र—पितामह, विश्वनाथ का दर्शन करने से पहले ढुण्ढिराज की पूजा करना क्यो आवश्यक है?

ब्रह्मा—दिवोदास के पाप का अनुसन्धान करने के लिए सदाशिव ने गणेश को भी घर-घर का भेद लेने के लिए नियुक्त किया था। वे भी पाप का कोई अनुसन्धान नही कर सके। अधिक समय तक काशी में निवास करते-करते उन्हें भी इस स्थान से ममता हो गई और वे वास्तविक कार्य भूलकर वही पर बस गये। अन्त में काशी में फिर से प्रवेश करने का अधिकार प्राप्त कर लेने के बाद सदाशिव ने जब आकर देखा तब गणेश गृहस्थी जमाकर बैठे लड्डू खा रहे थे। यह देखकर हँसते हुए सदाशिव ने कहा—देखो गणेश, मेरा कार्य न कर सकने पर भी भागकर तुम कही दूसरी जगह नहीं गये और मेरी इस अत्यन्त प्रिय काशीपुरी में ही निवास करते रहे, इससे मैं तुम्हें वर देता हूँ कि आज से जो भी यात्री काशीपुरी में आवेंगे, वे तिल का लड्डू चढाकर तुम्हारी पूजा करेंगे। तुम्हारी पूजा किये बिना यदि कोई मेरी पूजा करेगा तो वह पूजा निष्फल होगी।

एक गली के द्वार पर ही देवगण को ढुण्ढिराज का दर्शन मिल गया। उनकी पूजा करके बम हर-हर की ध्वनि करते हुए विश्वनाथ के मन्दिर में वे लोग पहुँच गये। उस समय सदाशिव साधु के वेश में थे और साधुओ के एक दल में सम्मिलित होकर गाँजा पी रहे थे। देवगण को देखते ही आदरपूर्वक उठकर वे खडे हो गये और आगे बढ़कर उन्होने इनका स्वागत किया। अन्त में ब्रह्मा का हाथ पकडे हुए देवगण के सहित वे उन्हें मन्दिर में ले गये। बाद को एक सुरंग के मार्ग से इन सबको वे एक अद्भुत ढग की बैठक में ले गये। इधर गङ्गापुत्र लोग इन सबको खोज-खोजकर परेशान होने लगे।

नारायण—भैया, तुम तो कह रहे थे कि मैं मृत्युलोक में न चलूँगा, परन्तु अब कैसे आगये हो?

शिव—काशी क्या भाई मृत्युलोक है? आठो पहर यहीं तो मैं डटा रहता हूँ। मामला-तामला, जगह-जमीन और धन-सम्पत्ति आदि मेरे सब कुछ तो काशी में ही हैं। काशी ही तो मेरे राज्य में ऐसा एक स्थान है, जहाँ हर प्रकार की सुख-सामग्रियाँ मुझे उपलब्ध होती हैं। इसे छोड़कर क्या एक क्षण भी मुझसे रहा जाता है?

ब्रह्मा—ऊपर तुम्हारा मन्दिर और मूर्ति है, परन्तु रहने का स्थान तुमने धरती में इतने नीचे बना रक्खा है, इसका क्या कारण है?

शिव—जानते तो हो भैया कि आजकल कोई लाल, कोई काला, अर्थात् रंग-रंग के राजा हो रहे हैं। पता नहीं, कब कौन उपद्रवी राजा चढ़ाई कर बैठे और तोप से मन्दिर उड़ा दे। अन्त में ऐसी अवस्था में क्या मैं अकाल-मृत्यु से मरूँ? एक बार ज्ञानवापी के रास्ते से भागकर मैंने एक मुसलमान बादशाह* से अपने आपको बचाया था। उसके बाद बहुत-कुछ आगा-पीछा सोचकर मन्दिर के नीचे यह मकान बनवाया है। अब इसी में हम पति-पत्नी निवास कर रहे हैं, ऊपर हमारा केवल कृत्रिम रूप है। अब रह-रहकर सोचा करता हूँ, हाय, पहले से अगर मैंने इस प्रकार की सावधानी की होती तो सोमनाथ को इतनी चोट भी न खानी पड़ती और निरपेक्ष शंकर को भी इतना धक्का न देना पड़ता। यहाँ तो मेरा घर भी गया और शरीर की भी दुर्दशा हो गई॥

आप लोग बैठिए, मैं जरा भीतर जाकर कुछ भोजन का प्रबन्ध करने को कह आऊँ। साग रखे ही हैं, खाना तैयार है, पूड़ियाँ बनाने में कितना समय लगेगा?

नहीं कि चम्पत हो गये। तुम्हारे भैया समाचार-पत्रों में प्राय पढ़ा करते हैं—'मेरा छोटा भाई अमुक तिथि से लापता है। कद उसका नाटा, बदन एकहरा और रंग साँवला है। अवस्था अठारह उन्नीस वर्ष की होगी। जो सज्जन उसका पता बताने की कृपा करेंगे, उन्हें पचास रुपया पुरस्कार दिया जायगा।' मैं तो भाई सुनकर हँसते-हँसते लोट-पोट हो जाती हूँ। अच्छा, यह तो बतलाओ कि बहुओं को क्यों नहीं ले आये ?

नारायण—स्वयं आने में ही नाकों चने चबाने पड़े, ट्रेन में क्या स्त्रियों का ठिकाना लग सकता है ? बाप रे, कितनी भीड़ थी !

अन्नपूर्णा—तुम दोनों ही भाइयों के मुँह से यही एक बात निकलती है। इस ओर तो कोई भीड़ होती नहीं। भीड़ अधिक होती है कलकत्ता की ओर। परन्तु भीड़ से हानि ही क्या है ? देखो न, कलकत्ते से कितने आदमी पूर्ण युवती स्त्रियों को साथ में लेकर आया करते हैं। ऐसे ही आना पड़ता है। भला यह बतलाओ कि कलकत्ता में यदि तुम नौकरी करते होते तो बहू को छोड़कर कैसे रहते ?

नारायण—उस अवस्था में मैं क्या करता, यह कैसे कहूँ ? परन्तु कलकत्तावालों का जो यह हाल बतला रही हो तुम, उससे मालूम होता है कि उनकी स्त्रियाँ देहातियों की अपेक्षा भी अधिक बहादुर हैं। इसी से ट्रेन में स्त्री-बच्चों को लेकर चलने का साहस उन्हें होता है। अच्छा, तुम क्या कभी रेलगाड़ी पर सवार हुई हो ?

अन्नपूर्णा—तुम्हारे भैया का स्वभाव ऐसा है, यह क्या तुम्हें बतलाने की जरूरत है ? भला मैं किसी प्रकार रेलगाड़ी पर सवार हो कैसे सकती ? अर्धकुम्भ पर दिल बड़ा इच्छुक हुआ कि जाकर प्रयाग स्नान कर आऊँ। परन्तु बहुत-कुछ कहने-सुनने पर भी ले जाने के लिए वे तैयार नहीं हुए।

नारायण—क्या तुमने कभी रेलगाड़ी देखी भी नहीं ?

बनाना पड़ता है। अकेले मुझसे होता नहीं। तुम भी रहोगी तो कभी तुम बना लोगी, कभी मैं बना लूँगी। परन्तु भाई, इस बात पर तो उसने जरा भी कान किया नहीं, अहङ्कार के मारे उत्तरवाहिनी होकर चली गई।* परन्तु उसी का फल अब वह भोग रही है। अँगरेज लोग जहाज और स्टीमर खिंचवा-खिंचवाकर उसकी कमर तोड़े डाल रहे हैं।

"तुम बैठो, मैं जरा एक बार बाहर हो आऊँ, क्योंकि बड़े भैया आदि वहाँ बैठे हैं।"

इतना कहकर नारायण बाहर चले गये। इतने में जया ने आकर कहा—ये बाबू कौन थे मालकिन?

अन्नपूर्णा ने डाँटकर कहा—सब भूल गई तू? ये मेरे देवर नारायण हैं।

जया ने कहा—इतनी अवस्था हो गई है मेरी। अब न तो आँखों से दिखाई पड़ता है और न कानों से सुन पड़ता है।

बैठक में पहुँचकर नारायण ने देखा तो ब्रह्मा तकिया की टेक लगाये बैठे हुए थे। देवराज हुक्के की नली में मुँह लगाये हुए तम्बाकू पी रहे थे। सदाशिव भाँग फाँककर चहलकदमी कर रहे थे। वे कह रहे थे कि मैंने काशीपुरी का निर्माण यह समझकर किया था कि यह एक बहुत ही उत्कृष्ट पुरी होगी। परन्तु दुर्भाग्यवश यह हो गई बहुत ही निकृष्ट। पहले मैंने सोचा था कि काशी ही मृत्युलोक में एक ऐसा स्थान होगा जहाँ कि कोई पापी न रहेगा। चाहे कोई कैसा भी घोर पाप करके यहाँ आवेगा, उसका उद्धार होकर ही रहेगा। परन्तु अब मैं देखता हूँ कि काशी में ही संसार भर के पापियों का अड्डा बन गया है। कितने अत्याचारी यहाँ स्वनामधन्य बनकर तैयार हो गए हैं इस पुरी में। रात-दिन में किसी भी समय यह विश्राम भी नहीं लेती। अका- नर-नराधम करके दुनिया भर के पापियों को यह उकसाकर

घर में चिराग जलानेवाला तक कोई न रह जाता, इस कारण मैं उन्हें ले नहीं आया। मैंने यह निश्चय कर लिया है कि इस बार गङ्गा को ले आऊँगा।

अन्नपूर्णा—यह तो उचित ही है। पूर्ण युवती है वह अब। गली-गली घूमती फिरती है, यह अच्छा नहीं मालूम पड़ता।

जरा देर तक इसी प्रकार की बातचीत होती रही, अन्त में अन्नपूर्णा भीतर चली गई। ब्रह्मा भी बैठक में चले आये। तरह-तरह की बातों में रात्रि अधिक व्यतीत हो गई, इससे देवगण ने शय्या ग्रहण की। सदाशिव भीतर चले गये।

प्रातःकाल शय्या का परित्याग करने के बाद ही अन्नपूर्णा ने नारायण को बुलाया और कहने लगीं—कल तुम्हारा व्रत था, इसलिए आज स्नान के निमित्त गङ्गातट पर जाने की आवश्यकता नहीं है। यहीं नौकरानी कुएँ से जल भर देगी, उसी से सब लोग स्नान कर लेना। मैं शीघ्र ही भोजन तयार किये देती हूँ।

ब्रह्मा और नारायण इस बात पर सहमत हो गये। परन्तु मदन और इन्द्र को घर में स्नान करना अच्छा नहीं मालूम पड़ा। तेल की मालिश करके कन्धे पर अँगोछा रखते हुए वे राजराजेश्वरी घाट की ओर चले।

चलते-चलते इन्द्र ने कहा—इस मन्दिर में किसकी मूर्ति है मदन? सुवर्णमय मूर्ति पर पड़ी हुई धूप किस प्रकार सुशोभित हो रही है। देखने में यह डरावना-सा मालूम पड़ता है।

मदन—कालभैरव हैं ये, काशी के कोतवाल।

इन्द्र—कालभैरव की उत्पत्ति का कारण क्या है?

मदन—एक बार ब्रह्मा और नारायण में इस विषय पर विवाद छिड़ा कि निर्विकार कौन है? जिस स्थान पर वह विवाद था, [illegible] भारी तेज प्रज्वलित होकर बोले—महादेव निर्विकार हैं। परन्तु इतने पर भी उस विवाद का अन्त न हुआ। तब [illegible] से एक [illegible]

ब्रह्मा—नारायण, तुम्हारी बुद्धि कैसी हो गई है? इस तरह की भी बात कोई कहता है? आहा, ऐसा तीर्थ संसार में दूसरा नहीं है।

ज्ञानवापी से चलकर देवगण अन्नपूर्णा के मन्दिर में उपस्थित हुए। वहाँ लाल और काले पत्थर से बने हुए फर्श तथा पीतल से आच्छादित घर की शोभा चकित भाव से देखने लगे। दालान में बैठे हुए अगणित गृहस्थ और विरक्त पाठ कर रहे थे। भीतर कमरे में विराजमान द्विभुजा अन्नपूर्णा का दर्शन उन लोगों ने किया। देवगण ने देखा कि भगवती के समस्त अङ्ग वस्त्र से आच्छादित हैं, केवल उनका सुवर्णमय मुख खुला है। उनके एक हाथ में कलछुल और दूसरे हाथ में थाली है। कमरे के भीतर रात-दिन घी का एक दीपक जलता रहता है। द्वार पर एक परदा टँगा रहता है।

इन्द्र—यह देखकर मैं बहुत ही सन्तुष्ट हुआ हूँ कि अन्नपूर्णा को आदर के साथ रक्खा गया है। मेरे विचार से तो इतना और कर देना उचित था कि जहाँ उनका सारा शरीर वस्त्र से आच्छादित किया गया है, वहीं घूँघट भी खींच दिया जाता। हिन्दुओं की देवी ठहरीं, ज़रा-सी लज्जा का प्रदर्शन न होना अनुचित है। अच्छा वरुण, अन्नपूर्णा ने एक हाथ में थाली और दूसरे हाथ में कलछुल क्यों धारण कर रक्खा है?

वरुण—बहुत-से लोगों का कहना है कि एक दिन शिव जी के पास कुछ खाने को नहीं था। इससे भिक्षा के लिए वे निकले। दिन भर भटकने के बाद भी जब उन्हें कुछ न मिला तब साँझ को लौटकर वे भगवती के सामने भूख से व्याकुल होकर रोने लगे। स्वामी का कष्ट देखकर देवी बहुत दुःखी हुईं। उसी समय उन्होंने प्रतिज्ञा की कि अन्नपूर्णा के रूप में अवतार ग्रहण करके मैं प्रत्येक क्षुधा से पीड़ित व्यक्ति को अन्नदान करने की व्यवस्था करूँगी। इसी लिए वे ऐसा रूप धारण किये हुए विराजमान हैं।

वहाँ से देवगण विश्वेश्वर की ओर चले। ये सोने के एक पात्र से ढके हुए कुण्ड के मध्य में विराजमान हैं। मन्दिर के चारों ओर

गङ्गा जब यहाँ से जा रही थी, तब तुम्हारे भैया को देखकर आह्लाद से वह गद्गद हो गई और कल-कल शब्द से मैं करती हुई आईं। तुम्हारे भैया भी उसे देखते ही दौड़ पड़े। उन्होंने कहा—खबरदार, तुम इस ओर मत बढ़ना। तुम्हारे कारण मेरी सोने की काशी कटकर नष्ट हो जायगी। यह मुझसे सहा न जायगा। तब गङ्गा ने यह प्रतिज्ञा की कि एक बार तुम्हें देखकर मैं यहाँ से चलती बनूंगी। मेरे कारण काशी को किसी प्रकार की भी हानि न पहुँचने पायेगी। अच्छा नारायण, जाते समय मेरी देवरानियों के लिए यहाँ से थोड़ी-सी साड़ियाँ खरीदते आना। उत्सव आदि के समय काशी की साड़ियाँ पहनकर वे बहुत ही प्रसन्न होंगी। बहुत ही उत्कृष्ट होती हैं यहाँ की साड़ियाँ।

नारायण—दो-एक से तो काम चलने का है नहीं। गरुड़ की गड्डी खरीदकर ले जाऊँ, तब वहाँ सबको एक-एक करके दी जा सके। अच्छा भाभी, तुम बैठो, मैं ज़रा बाहर हो आऊँ।

बैठक से बाहर नारायण ने देखा तो [illegible] तकिया की टेक लगाये हुए बैठे-बैठे बातें कर रहे थे। नारायण को देखते ही उन्होंने कहा कि तुम इस प्रकार सर्दी में क्या घूम रहे हो? भीतर आकर बैठो। जरा टोक से हाथ आदि ढक लो। [illegible] है, बहुत सावधानी के साथ रहना चाहिए। बाद को [illegible] की और [illegible] करते व बातें करते—[illegible] बड़े भैया, देखो इस काशी के लोग भी काशी में, अब यह ही क्या बना है? जिस काशी ने देखकर [illegible] किया था, जिस काशी में [illegible] में [illegible] किया था, [illegible] के [illegible] से [illegible] जो काशी [illegible] के [illegible] थे, उसी काशी में आज [illegible] हो गई है, [illegible] के [illegible] का [illegible] अब [illegible] हैं, परन्तु आज [illegible] प्रकार की [illegible] हो गई है, [illegible] के [illegible] हुए हैं।

हूँ, इसे तुम ग्रहण करो और अहङ्कारी आदमियों को इससे पीटकर भगाया करना, साथ ही ज्ञानियों को आदरपूर्वक काशी में रखना। जो कोई पहले तुम्हारी पूजा न करेगा उसकी पूजा मैं न ग्रहण करूँगा। तुम्हारे स्थापित किये हुए शिव का नाम आज से दण्डपाणीश्वर हुआ।

इन्द्र—परन्तु क्या हो गया उन दण्डपाणि का डण्डा? पापियों को वे भगा तो नहीं पाते हैं?

वरुण—कलि के प्रभाव के सामने आजकल क्या किसी की कुछ चल पाती है? जिस प्रकार अँगरेजी शासन के विरुद्ध राजा-महाराजा लोग चूँ तक करने का साहस नहीं करते, उसी प्रकार कलि के सामने सीधा होकर ताकने की शक्ति किसी देवता में नहीं रह गई है।

नारायण—वाह रे, जहाँ देखो वहीं शिव! काशी में और किसी देवता को खड़ा होने तक को ठाँव नहीं है।

वरुण—तुम्हारी यह बात ठीक नहीं है। वृन्दावन के सम्बन्ध में यह बात कही जा सकती है। परन्तु काशी के विषय में तुम ऐसा नहीं कह सकते हो। काशी में दुर्गा, गणेश, केदारनाथ आदि [illegible] आदि तैंतीस कोटि देवताओं की मूर्तियाँ हैं।

देवगण को लिये हुए वरुण सीधे आदिकेशव के मन्दिर के पास पहुँचे। वहाँ पहुँचकर उन्होंने नारायण से कहा—देवा, इस मन्दिर में तुम्हीं विराजमान हो।

इन्द्र—क्यों वरुण, नारायण यहाँ क्या खड़े हुए हैं?

वरुण—गणेश आदि देवता जब दिवोदास को काशी से हटाकर भगाने में असमर्थ हो गये तब शिव नारायण के पास गये। काशी के विरह से उस समय वे इतने व्याकुल थे कि नारायण का [illegible] [illegible] पड़े। तब नारायण [illegible] की [illegible] [illegible] [illegible] को लिये हुए काशी आये। इस मन्दिर में [illegible] और [illegible]

जब उसने आँख खोली तब यह देखकर विस्मित हो गया कि खिचड़ी जमकर पत्थर होती जा रही है। तब "हाय, यह क्या हुआ ?" कहकर उसने चिल्लाना आरम्भ किया। उस समय आकाशवाणी हुई कि मैं तुम्हारी खिचड़ी में आकर प्रकट हुआ हूँ, इससे यह जमकर पत्थर होती जा रही है। आज से तुम्हें केदार-क्षेत्र जाने की आवश्यकता न होगी। मैं इस पत्थर में ही निवास करता हूँ।

यहाँ से बाजार में विभिन्न प्रकार की उत्तमोत्तम वस्तुएँ देखते हुए देवगण ज्येष्ठेश्वर शिव और ज्येष्ठा गौरी की मूर्ति के समीप पहुँचे। उनका परिचय देते हुए वरुण ने कहा—दिवोदास को काशी से खदेड़ भगाने के बाद नारायण इसी स्थान पर खड़े-खड़े शिव की प्रतीक्षा कर रहे थे। अन्त में यहीं पर नारायण और शिव की एक-दूसरे से मुलाकात हुई थी। उस घटना की स्मृति के लिए नारायण ने स्वयं महादेव और भगवती की इन मूर्तियों की स्थापना की थी।

काशी की और भी चीजें देखने के लिए वरुण देवगण को ले जाना चाहते थे किन्तु ब्रह्मा कलकत्ता चलने के लिए जल्दी मचा रहे थे। उन्होंने कहा—अजी भाई, किसी प्रकार कलकत्ता से चलो मिलूँ। वहाँ और गङ्गा से मुलाकात हो जाती तो मेरा सारा परिश्रम सार्थक हो जाता। अब तो मैंने सुना है कि उन बेचारी को हावड़ा के पास खूब जकड़कर बाँध रक्खा है अँगरेजों ने, [illegible] किसी प्रकार भी नहीं रोक पाता है।

वरुण ने कहा—अच्छी बात है, [illegible] रामनगर [illegible] होकर वहाँ से किला हो आवें और स्टेशन की ओर चलें। [illegible] वरुण ने कहा—देखो देवराज, [illegible] है। [illegible] राजकुमार का जन्म [illegible] हुआ था। [illegible] राजा [illegible] दिया। [illegible] आदि [illegible] राजकुमार का [illegible] किया। [illegible] कुमार [illegible] हुआ [illegible]

बाबू शिवप्रसाद गुप्त का बनवाया हुआ भारत-माता का मन्दिर नहीं देख सके हो, संस्कृत-कालेज तथा सरस्वती-भवन-पुस्तकालय नहीं देख सके हो। नागरी-प्रचारिणी-सभा तथा कलाभवन भी यहाँ की दर्शनीय वस्तुएँ हैं। इसके सिवा तुम लोग किसी दिन न तो ज़रा-सा विश्राम कर सके हो, और न किसी दिन ठिकाने से तुम्हारे भोजन की ही व्यवस्था की जा सकी है। अभी हम जाने न देंगे।

यह सुनकर ब्रह्मा ने कहा—नहीं भाई, अब यहाँ हम न रुक सकेंगे। किसी दिन कैलास में आवेंगे, वहीं तुम जो-जो इच्छा हो, खिला देना। घर से निकले काफ़ी दिन हो गये, अब जल्दी से जल्दी घूम-फिरकर लौटना चाहता हूँ।

सदाशिव ने कहा—अच्छा, तो इस समय भोजन करके आप विश्राम कीजिए, साँझ को चलकर मैं आप लोगों को गाड़ी पर बैठा आऊँगा। यहाँ से कलकत्ता के लिए कई गाड़ियाँ जाती हैं। बाद को नौकर से उन्होंने कहा—देखो, दीवान जी से जाकर कहो—फ़ोन करके इन्क्वायरी-आफिस से ट्रेन का करेक्ट टाइम तो मालूम कर लें।

नारायण—आपके मुँह से अभी जितने शब्द निकले हैं, वे अधिकांश अँगरेज़ी के हैं। इसका अर्थ यह है कि आपने अब अँगरेज़ी भी पढ़ ली है।

सदाशिव—क्या करूँ भाई, हिन्दी भाषा आजकल अँगरेज़ी भाषा के शब्दों से इस प्रकार भरती होकर बढ़ती जा रही है कि किसी-किसी वाक्य में तो क्रियाओं और विभक्तियों को छोड़कर हिन्दी का शायद एक भी शब्द नहीं आ पाता।

नारायण—परन्तु अँगरेज़ी तुम कैसे सीख गये हो?

सदाशिव—मुझे क्या हिन्दी के शब्द सोचने के लिए जाना पड़ता है भाई? शुरू-शुरू में ही मैंने अँगरेज़ी सीखी है। आजकल हिन्दी एक तो अँगरेज़ी आफिसर हूँ। दफ्तर में ही अँगरेज़ी बोलना पड़ता है, जिसका [illegible] दिमाग़ [illegible] ज्यों के त्यों [illegible]

स्त्यकुण्ड, अगस्त्येश्वर महादेव तथा पिशाचमोचन तीर्थ आदि का
न कराते हुए चले।

घाट पर जाकर देवगण ने किराये पर एक नौका की। उस पर
कर काशी की अपूर्व शोभा देखते हुए ये सब जाकर राजघाट पहुँचे।
वरुण ने देवराज से कहा कि इस पुल से पार होकर व्यास काशी
ना होता है। शिव से अप्रसन्न होकर व्यास ने इस काशी का निर्माण
या था, परन्तु उनका उद्देश्य सिद्ध नहीं हुआ।

इन्द्र—व्यास ने किस उद्देश्य से इस काशी का निर्माण किया था
र उनका उद्देश्य सिद्ध क्यों नहीं हो पाया?

वरुण ने कहा—शिव की काशी में आकर पापी लोग यदि बस
ते हैं और यहाँ आकर फिर पाप नहीं करते तब मृत्यु होने पर
को मुक्ति होती है। परन्तु काशी में आकर वे यदि पाप करते हैं, तब
का किसी प्रकार भी उद्धार नहीं हो पाता। यह देखकर व्यास ने
ऐसी काशी का निर्माण करने की प्रतिज्ञा की जहाँ आकर बस
ने पर भी यदि पापी लोग बराबर पाप करते रहें तो भी उनका
र हो जायगा। व्यास की इस प्रकार की प्रतिज्ञा का हाल सुनकर
पूर्णा ने सोचा—झमेला तो इन्होंने साधारण नहीं खड़ा किया।
इन्होंने वास्तव में एक ऐसी काशी का निर्माण कर लिया तब
की यह सोने की काशी उजड़ जायगी। अन्त में बहुत सोच-
र करने के बाद वे बुढ़िया का रूप धारण करके एक लकड़ी के
रे धीरे-धीरे आकर व्यास के सम्मुख उपस्थित हुईं और कहने
ी—क्यों बाबा, क्या कर रहे हो तुम? व्यास ने उत्तर दिया—
या, मैं एक ऐसी काशी का निर्माण कर रहा हूँ जिसमें आकर
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

पड़ीं और बोलीं—यहां मरने पर क्या होगा बाबा ? कान से मुझे जरा कम सुनाई पड़ता है, एक बार फिर बतला दो। अब व्यास ने चिल्लाकर कहा—यहां कोई भी पापी आकर निवास करे या यहाँ निवास करके कोई कैसा भी पाप करे, मृत्यु होने पर उसकी मुक्ति होगी। व्यास की यह बात समाप्त होते ही अन्नपूर्णा आगे बढ़ीं। परन्तु कुछ ही पग चलकर वे फिर पीछे की ओर लौट पड़ीं और पहले की ही तरह बोलीं—बाबा, मैं ठीक-ठीक नहीं समझ पाई हूँ। यहां मरने पर क्या होगा ? इस बार व्यास क्रोध में आगये। उन्होंने ऊँचे स्वर से कहा—गधा होगा। यहां मरने पर आदमी गधा होगा। तब भगवती ने मुसकराकर कहा—तथास्तु। उसके बाद वे अन्तर्हित हो गई।

वरुण के मुख से यह कथा सुनकर नारायण ने कहा—तब तो भैया की अपेक्षा भाभी बहुत चतुर हैं। या यों कहिए कि वे ही इन्हें निभा रही हैं।

इन्द्र—यह तो कहावत ही है भाई कि स्वामी यदि सीधा-सादा होता है तो स्त्री चण्ट होती है। महेश्वरी ने महेश्वर को बहुत कुछ सिखा-पढ़ाकर होशियार कर लिया है। पहले का-सा भोलापन अब इनमें भी नहीं रह गया।

राजघाट से ही वरुण ने देवगण को रामनगर दिखलाया। उन्होंने कहा—काशी-नरेश रामनगर में ही रहा करते हैं। रामनगर की रामलीला विश्वविख्यात है।

ये बातें हो ही रही थीं, इतने में स्टेशन पर गाड़ी आने की घंटी सुनाई पड़ी। इससे वे लोग प्लेटफार्म की ओर बढ़े। वरुण ने दौड़कर टिकट खरीद लिया। यथासमय गाड़ी आकर खड़ी हुई। एक डिब्बे में सबके बैठ जाने पर महादेव वहां से रवाना हुए।

बक्सर

काशी से होती हुई गाड़ी बक्सर पहुँची। उस स्थान का परिचय देते हुए वरुण ने कहा कि विश्वामित्र का यहीं पर तपोवन था। मिथिला के धनुर्यज्ञ में सम्मिलित होने के लिए जाने से पहले रामचन्द्र यहाँ आये थे। ताड़का नामक राक्षसी का वन भी यहाँ से बहुत समीप ही था। उसका वध करके श्री रामचन्द्र जी ने उसका शव जिस नाले में फेंका था, वह आज भी वर्त्तमान है और ताड़कानाला के नाम से ही विख्यात है। ताड़का-वध के बाद भागीरथी में स्नान करके श्री रामचन्द्र जी ने जिन शिव की पूजा की थी, वे भी वर्त्तमान हैं और रामेश्वर के नाम से प्रसिद्ध हैं। लोगों का विश्वास है कि जो स्त्री भक्तिपूर्वक इन शिव को स्नान कराती है, उसे सीता, सती के समान पति प्राप्त होता है। बक्सर का किला भी बहुत ही प्रसिद्ध है। यहाँ कई युद्ध हुए हैं। विशेषतः बक्सर के द्वितीय युद्ध के बाद जो सन्धि हुई है, भारतीय इतिहास पर उसका बहुत ही महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है।

दस-बारह मिनट के विराम के बाद गाड़ी फिर चल पड़ी। बक्सर के बाद कई स्टेशन जाने के बाद एकाएक गाड़ी एक ऐसे स्थान पर रुकी जहाँ कोई स्टेशन नहीं था। सुनने में आया कि इंजन खराब हो गया है। अब दूसरा इंजन जब तक न आ जायगा, तब तक यहीं रुका रहना पड़ेगा। यह सुनकर वरुण के आग्रह से मृणाल आदि गाड़ी पर से उतर पड़े और समीप ही [illegible] [illegible] का पुल देखने के लिए चले। [illegible] हो [illegible] [illegible] किये हुए [illegible] [illegible] और [illegible] के [illegible] के समीप [illegible]। [illegible] के पूछने पर [illegible] इस प्रकार सुनाई—

प्रो. [illegible] का [illegible] है [illegible]। इस [illegible] का [illegible] [illegible] [illegible]

के अधीश्वर देवराज वीनवेश में यहां खड़े हैं। तुम्हारा अधीश्वर स्वयं मैं हूँ। नारायण को तुम पहचान ही रहे हो। भारत में कहां हमारी वह प्रभुता थी कि एक पल में क्या से क्या कर सकते थे, वहां आज हम पासिंजर ट्रेन के थर्ड क्लास में धक्के खाते फिर रहे हैं। अभी हम इतने दरिद्र भी नहीं हो गये हैं कि फर्स्ट क्लास का टिकट न खरीद सकें, परन्तु आशङ्का तो इस बात की है कि कहीं फर्स्ट क्लास में बैठने का प्रयत्न करने पर अंगरेज लोग ठोकर न मार दें।

पवन की यह बात समाप्त ही हो रही थी कि वायु के वेग से दौड़ता हुआ इंजन आकर गाड़ी में लग गया और अन्य यात्रियों के समान ही देवगण भी उतावली के साथ अपने डिब्बे में आकर बैठ गये। सीटी देकर गाड़ी रवाना हो गई। अब थोड़ी देर के बाद देवगण पटना जंक्शन पर पहुँच गये। तब पवन ने कहा—पितामह, पटना का मुख्य स्टेशन यही है। लोग इस स्थान को बाँकीपुर कहा करते हैं। यह एक दर्शनीय स्थान है। इससे यहां अवश्य उतरना चाहिए।

देवगण जिस समय पटना स्टेशन पर उतरे, उसी समय गया के लिए गाड़ी तैयार थी और प्लेटफार्म पर घूम-घूमकर पण्डों के गुमाश्ते यात्री संग्रह करने के लिए असाध्य साधना कर रहे थे। एकाएक एक गुमाश्ता ब्रह्मा से भी पूछ बैठा—क्या चलोगे बाबा? इस बात का सुनना था कि ब्रह्मा विक्षुब्ध हो उठे। उन्होंने इन्द्र से कहा, चलो पहले गया हो आवें, तब यह नगर देखें। गया से उत्तम कोई और तीर्थ नहीं है। अन्य तीर्थों में जाकर मनुष्य स्वयं अपना उद्धार करता है किन्तु जो व्यक्ति गया आता है उसके द्वारा कोटि पितरों का उद्धार हो जाता है। अस्तु, पितामह के आदेश से सब लोग जाकर गया की गाड़ी में बैठ गये।

ब्रह्मा—तब मैं स्वर्ग में जाकर चान्द्रायण करूंगा।

वरुण—यही अच्छा है।

दूसरे दिन सवेरा होते ही उठकर देवगण स्नान के निमित्त फल्गु नदी की ओर चले। घाट पर उतरते ही उन लोगों ने देखा कि यहां पर नाइयो का एक काफी अच्छा जमघट लगा हुआ है। वहां पके हुए नारियल, तुलसी, तिल और जव के सत्तू आदि की कतार की कतार दूकानें थी। अगणित शूकर फल्गु के तट पर घूम रहे थे। यह सब देखकर इन्द्र ने कहा—क्यो वरुण? फल्गु नदी अन्त सलिला क्यों है?

वरुण ने कहा—वनवास के समय श्री रामचन्द्र गया आये थे। नदी के उस पार सीताकुण्ड नामक जो स्थान है, वहां सीता जी को बैठाल कर वे स्वय लक्ष्मण के साथ फल लेने के लिए चले गये थे। उन दोनों भाइयो की अनुपस्थिति में राजा दशरथ ने आकर सीता जी को पिण्डदान करने का आदेश किया। घर में किसी प्रकार की सामग्री तो थी नहीं, वे पिण्ड देतीं तो किस चीज का देती। इससे वे बहुत चिन्तित थीं। परन्तु मृत राजा ने कहा कि तुम बालू का पिण्ड दे दो, उसी से मुझे तृप्ति हो जायगी। अन्त में श्वशुर की आज्ञा से पिण्ड बनाने के लिए सीता जी ने जिस स्थान से बालू निकाली थी, वह सीताकुण्ड के नाम से प्रसिद्ध हुआ। कुण्ड में राम-लक्ष्मण और सीता की मूर्त्तियां आज भी वर्तमान हैं। अस्तु, राम-लक्ष्मण के लौटकर आने पर सीता जी ने उक्त घटना का हाल बतलाया। परन्तु उन्हें इस बात का विश्वास नहीं हुआ, इससे उन्होंने फल्गु नदी की गवाही ली। गवाही में फल्गु ने बिलकुल झूठी बात कही इससे वह अत.सलिला हो गई है।*

* कहा जाता है कि सीता जी ने वट-वृक्ष, फल्गु नदी, ब्राह्मण और तुलसी-वृक्ष को साक्षी माना था। परन्तु वट-वृक्ष के अतिरिक्त झूठ बोल गये थे। इससे सीता जी के शाप से ब्राह्मण कलि में

अब देवगण फल्गु में स्नान करके श्राद्ध-तर्पण करने लगे। बालू खोदकर नारायण ने निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण किया और उन्होंने गङ्गा जी में डुबकी लगाई।

फल्गुतीर्थे विष्णुजले करोमि स्नानमादृत ।
पितृणां विष्णुलोकाय भुक्ति-मुक्ति-प्रसिद्धये ॥

स्नान से निवृत्त होकर देवगण तट पर आये और गीली ही धोती पहने हुए उन्होंने पितरों के निमित्त श्राद्ध-तर्पण किया। उसके बाद गया-वालों को एक-एक रुपया और एक-एक नारियल भेंट करके पत्थर से बंधे हुए घाट से होते हुए गदाधर के स्थान पर पहुँचे। उस स्थान का दृश्य बहुत ही करुण था। गया आने पर माता को स्मरण हो आया कि पुत्र को पिण्डदान करना है, इससे वह शोकाकुल होकर चीखने और विलाप करने लगी। कहीं किसी स्त्री को पिण्डदान करते समय स्वामी का स्मरण हो आया, उससे वह मूर्छित होकर वहीं भूमि पर गिर पड़ी। इस प्रकार के इतने दृश्य वहाँ थे, मानो गदाधर के स्थान पर शोक का फव्वारा छूट रहा था।

दुःखित होकर देवगण ने विष्णु-मन्दिर में प्रवेश किया और गदाधर के चरण-चिह्न को चारों ओर से घेरकर तीर्थ-पुरोहित के आदेश के अनुसार पिण्डदान करने लगे। पुरोहित ने कहा—अब आप लोग अपनी इच्छा के अनुसार किसी को भी पिण्डदान कर सकते हैं। तब नारायण निम्नलिखित आशय के वाक्य पढ़-पढ़कर पिण्डदान करने लगे—

"मेरे कुल में जितने स्वजन, बान्धव अथवा [illegible] या [illegible], नौकर, चाकर या पशु आदि ऐसे मर चुके हों, [illegible] जिनकी सद्गति नहीं हुई, उन सबके निमित्त मैं पिण्डदान कर रहा हूँ। मेरे जिन-

---

[illegible] पर [illegible]
[illegible]
[illegible] कर रहा हूँ।

भिन्न अवतारों के मित्रों के वंश में, मेरे घर में, मातामह के वंश में, पड़ोसियों अथवा ग्रामवासियों के वंश में जितने ऐसे जीव हुए हैं, जिन्होंने माता के गर्भ में ही प्राण-त्याग कर दिया है, उन सबके सिवा मैं उक्त कुलों के उन सब जीवों के निमित्त पिण्ड अर्पण करता हूँ, जिनकी मृत्यु सर्प काटने, चोर-डाकुओं के प्रहार करने, जल में डूब जाने या घर गिरने पर मलबे के नीचे दब जाने के कारण हुई है। जिन्हें व्याघ्र आदि हिंसक जन्तुओं अथवा सींग से मारनेवाले पशुओं ने मार डाला है, जो वृक्ष से गिरकर मरे हैं, अथवा कुत्ता या सियार काट लेने, अफीम या कोई और प्रकार का विष खा लेने के कारण जिनकी मृत्यु हुई है, उन सबके निमित्त मैं पिण्डदान कर रहा हूँ। इनके सिवा मैं उन लोगों के निमित्त पिण्डदान कर रहा हूँ जिन्होंने गले में छुरी मारकर या फाँसी लगाकर आत्महत्या की है, अथवा जिन्होंने अकाल में बुभुक्षा से पीडित होकर या युद्ध में जाकर प्राण-त्याग किया है। मेरे वंश की यदि किसी स्त्री ने एकादशी व्रत के अवसर पर क्षुधा और पिपासा से पीड़ित होकर, प्रसववेदना के कारण अथवा स्वामी का वियोग सहन करने में असमर्थ होकर चिता पर बैठकर प्राण-त्याग किया हो, उसके निमित्त मैं पिण्डदान कर रहा हूँ। मेरे वंश के यदि कोई नरक में हों, पशुयोनि को प्राप्त हों अथवा भूत-प्रेत होकर पृथ्वी पर भ्रमण कर रहे हों, उन सबके निमित्त मैं पिण्डदान कर रहा हूँ। मेरे श्वशुर, गुरु या पुरोहित पास-पड़ोस के लोगों या नौकर-नौकरानियों के कुल का यदि कोई आदमी नरक में हो तो उसे मैं पिण्डदान कर रहा हूँ। स्वयं मेरे, मेरे गाँव के या मेरे सम्पर्क में रहनेवाले अन्य सब व्यक्तियों के सम्बन्धियों के कुल में से यदि कोई नरक में हो तो उसके निमित्त मैं पिण्डदान कर रहा हूँ। मेरे जिन भाई-बहनों ने सूतिकागार में कंस के प्रहार से प्राण-त्याग किया है उन सबके निमित्त मैं पिण्डदान कर रहा हूँ। उनके अतिरिक्त वृन्दावन के मैदान में चरनेवाली अपनी समस्त गौओं, लङ्का के युद्ध में राक्षसों से लड़कर प्राण-त्याग करनेवाले वानरों तथा कुरुक्षेत्र के

भयङ्कर युद्ध-क्षेत्र में काम आनेवाले वीरों के निमित्त मैं पिण्डदान कर रहा हूँ।

मेरे भिन्न-भिन्न अवतारों की माताओ, मुझे गर्भ में धारण करने के कारण तुम्हें बहुत क्लेश सहन करने पड़े हैं। दस मास तक स्वास्थ्य-वर्द्धक खाद्य सामग्रियों का परित्याग करके केवल जली हुई मिट्टी खाती रही हो तुम लोग। सूतिकागार में प्रसववेदना के कारण कितना क्लेश सहन किया है तुम लोगों ने। प्रसव के बाद तीन दिन तक निराहार रहकर तीव्र अग्नि से शरीर को झुलसाने के बाद कटु द्रव्यों का पान और भोजन किया है तुम लोगों ने। अन्तु इसी प्रकार के और भी उनके कितने क्लेशों का उल्लेख करके नारायण ने कहा—तुम्हारे गुण असीम हैं, तुम्हारे स्नेह का अन्त नहीं है। पुत्र होकर तुम्हारे ऋण से छुटकारा प्राप्त करने का कोई उपाय नहीं है। आज मैं गया-धाम में आकर तुम लोगों के निमित्त पिण्डदान कर रहा हूँ। भाग्यहीन पुत्र के द्वारा दिया गया पिण्ड ग्रहण करो।

माताओं के निमित्त पिण्डदान करने के बाद नारायण ने [illegible] के निमित्त पिण्डदान किया। उसके बाद व हाथ जोड़ [illegible] ने [illegible] ने कहा—और [illegible] पिण्ड तुम्हें निवेदन करना पड़ेगा।

नारायण—किसके निमित्त?

[illegible]—नारायण [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

निराकारवादियो तुम लोग ईश्वर को चाहे निराकार समझो या नीराकार समझो, तुम्हारी गति के लिए मैं खीर के तीन कसोरे उत्सर्ग करता हूँ। ये भूत, वर्त्तमान और भविष्य, इन तीनो ही कालो में तुम्हारी तृप्ति का साधन करेंगे। सब लोग बाँट-चोटकर भ्रातृ-भाव से खाना। देखना, पिण्ड के विभाग में भी दलबन्दी, मारपीट और लडाई-झगडा न हो। हे हिन्दू-धर्म का परित्याग करके ईसाई-धर्म ग्रहण करनेवाले महानुभावो, मैं तीन कसोरे खीर तुम्हारे निमित्त भी उत्सर्ग कर रहा हूँ। इसके बल पर उजाले का मुँह देखकर प्रेत-योनि या जिस किसी भी योनि में भ्रमण करते होओगे, उससे मुक्त हो जाओगे। हे विलायत से लौटकर आये हुए साहब रूपधारी हिन्दुओ, तुम्हें यह खूब मालूम है कि अँगरेजो के स्वर्ग में तुम्हारे लिए स्थान नहीं है। काली जाति अर्थात् हिन्दुओ का इतना आदर है कि अँगरेजो के नरक में भी तुम्हे स्थान मिलेगा या नहीं, इसमें सन्देह है। तुम्हारी सद्गति के निमित्त भी मैं तीन कसोरे पिण्ड रख छोडता हूँ। तुम चाहे होटल में मरो या अस्पताल में मरो, इन पिण्डो की बदौलत तुम्हे हिन्दुओ का स्वर्ग मिल जायगा। इतना कहकर नारायण ने हाथ धोया और निम्न-लिखित मन्त्र का उच्चारण किया—

एष पिण्डो मया दत्तस्तव हस्ते जनार्दन।
गयाशीर्षे त्वया देयो मह्य पिण्डो मृते मयि॥

ब्रह्मा ने कहा—वरुण, इस मन्दिर का निर्माण किसने करवाया है?

वरुण—इन्दौर की महारानी अहल्याबाई ने इस मन्दिर का निर्माण करवाया है। इस मन्दिर के निर्माण में बहुत ही उत्कृष्ट श्रेणी के पत्थर लगाये गये हैं। विष्णुमन्दिर के उस ओर जो मन्दिर दिखाई पड रहा है, उसमें अहल्याबाई की ही संगमरमर की बनी हुई एक मूर्त्ति स्थापित है। इस सती-साध्वी महिलारत्न को भी लोग देवी के रूप में पूजा किया करते हैं। इस स्थान को ही लोग बुद्धगया कहा

करते हैं। बौद्ध-धर्म के प्रवर्तक गौतम बुद्ध ने इसी स्थान पर तपस्या करके सिद्धि प्राप्त की थी।

इन्द्र—क्या विष्णुमन्दिर में और भी कोई मूर्ति स्थापित है?

वरुण—नहीं, केवल पत्थर पर अङ्कित किया हुआ विष्णु का चिह्न भर यहाँ है। लोग उसी पद-चिह्न के ऊपर पिण्डदान किया करते हैं। मन्दिर के उस ओर गदाधर की मूर्ति है।

इसके बाद देवगण राम-शिला, ब्रह्मयोनि आदि कई छोटे-छोटे पहाड़ों पर पिण्डदान करने के बाद प्रेत-शिला की ओर चले। रास्ते में उन्हें एक वेश्या भी दो लम्पटों के साथ प्रेत-शिला की ओर जाती हुई दिखाई पड़ी। दोनों लम्पटों में से एक के ऊपर मदिरा का अधिक प्रभाव था। लड़खड़ा-लड़खड़ाकर चलते-चलते वेश्या को संबोधित करके उसने कहा—प्राण गुलाब, (वेश्या का नाम) तू मुझे कितना चाहती है? मैं तो तुझे इतना चाहता हूँ जितना कि फल्गु के तट के शूकर लोग विष्ठा को चाहते हैं। यह सुनकर वेश्या ने कहा—ऐ पुलिस अफिसरजी, हटो! तुम्हारे ही उपद्रव के कारण तो मैं प्रेत-शिला जा रही हूँ।

इन्द्र—वरुण, यह क्या है? इस स्त्री को यह पुरुष क्या कह रहा है और क्यों उसे पुलिस अफिसर कह रही है।

वरुण—शराबी नशा में किसी को भी क्या कह देते हैं।

नारायण—मैंने क्या अपराध किया है जो बार-बार यहाँ ही भेज जाते हो प्रभु!

वरुण—इस लड़के का उत्तर न मालूम कर सकता हूँ क्या नारायण भगवन्?

वेश्या चली गई। प्रेत-शिला के समीप पहुँचकर इन लोगों ने देखा कि बहुत से मनुष्य—जो पिण्डदान करने आये थे—प्रेत-शिला पर चढ़कर उतर हो जाते हैं।

उस समय कई बगालिनें भी वहा आ पहुँचीं। उनमें से एक ने कहा—दीदी मेरे ससुर के ममेरे भाई के जो फुफेरे ससुर थे, उनके भाजे का क्या नाम था, क्या तुम्हें याद है? उन बेचारों को बड़े लडके ने जूते से मार दिया था, इससे अफीम खाकर उन्होंने आत्महत्या कर ली थी। सुनने में आता है कि मरने के बाद वे प्रेत हुए हैं और बडा उपद्रव कर रहे हैं। लडके भी उनके एक-से एक बढकर हैं। कोई उपाय नही करना चाहते वे लोग उनके उद्धार के लिए। इसी से सोचती थी कि एक पिण्ड देकर उनकी भी गति कर देती, किन्तु नाम ही नहीं मालूम है।

एक दूसरी स्त्री ने कहा—ओ मा, याद आने पर शरीर थरा उठता है। इतना भयङ्कर स्वप्न देखा है रात्रि में! मानो मेरा मंझली ननद आई है। वे सौभाग्य के सभी प्रकार के चिह्न धारन किये हैं और मुझसे बहुत विनीतभाव से कह रही हैं—भाभी, आई हो तो मेरा भी उद्धार किये जाना। मेरे नाम से एक पिण्ड देना न भूलना। जानती तो हो, सोहँड में मरकर मैं चुड़ैल हुई हूँ। तुम्हारे बाग में रहती हूँ।

आँखें पोछती हुई एक दूसरी स्त्री रुद्ध कण्ठ से बोली—दीदी, मैंने कल स्वप्न में देखा है, मालिक मानो आकर मेरे सिरहाने बैठे हैं और मुझसे कह रहे हैं—अपनी सालाना बिदाई लेने के लिए जब मैं शान्तिपुर जा रहा था, तब रास्ते में डाकुओ ने मारकर मेरा सारा सामान छीन लिया था। कैसे अशुभ मुहूर्त में मैं शान्तिपुर के लिए तुमसे बिदा हुआ था कि फिर हमारी-तुम्हारी मुलाक़ात नहीं हुई। मृत्यु के बाद से वहीं सेमर के एक वृक्ष पर भूत होकर रहता हूँ। यदि दैवयोग से गया आगई हो तो मेरा उद्धार करने को न भूलना। मुझे एक पिण्ड देना जरूर। इतना कहकर वह स्त्री रोने लगी। बाद को किसी प्रकार अपने को सँभालकर उसने कहा—व्यर्थ ही मैं गया आई हूँ दीदी! कितना कहा उन्होंने, परन्तु मैं कुछ कर नहीं सकती।

पास में पैसे तो हैं नहीं ! मुझे क्या करना है बहन ! यदि [illegible] प्रकार एक पिण्ड उन्हें देने पाती तो वे जाकर सुखपूर्वक स्वर्ग में निवास करते, मेरे भाग्य में जो लिखा है वह मैं भोगती रहती। दूसरों के यहाँ रोटियाँ ठोकते-ठोकते किसी प्रकार जीवन व्यतीत हो कर दूँगी।

ये सब बातें सुनकर देवगण बहुत ही दुःखी हुए। वे वहाँ और न ठहरकर सीधे स्थान पर गये। सब को गया में तीन दिन तक स्नान करने के पश्चात सब लोग मुक्ति लेने के लिए अक्षयवट की ओर चले। वहाँ पहुँचकर उन लोगों ने देखा तो मुक्ति की कामना से बैठे हुए लोगों की अपार भीड़ थी। गयावालों में कोई पालकी पर बैठे थे, कोई तम्बू में बैठे थे और कोई-कोई सजे-सजाये कमरे में विराजमान थे। गया श्राद्ध करने के निमित्त गई हुई दल की दल स्त्रियाँ हाथ जोड़े हुए विनीतभाव से खड़ी थीं। किसी के हाथ में पाव अशर्फियाँ थीं, किसी के हाथ में नव अशर्फियाँ थीं और कोई-कोई [illegible] ही अशर्फियों के बल पर मुक्ति लेने का प्रयत्न कर रही थीं। गयावालों ने [illegible] किया कि पाँच रुपये से कम में मुक्ति न मिलेगा। अन्त में उन्होंने अपने-अपने कर्मचारियों को आदेश दिया कि हर एक यात्री के [illegible] की एक माला से बाँध दो। यात्रियों में से दर कम करवाने के लिए किसी-किसी ने अपनी अवस्था का विस्तारपूर्वक वर्णन किया। किसी-किसी ने पण्डा जी के पैर पकड़कर या [illegible] किया, परन्तु [illegible] को क्या [illegible] सकती हूँ ? [illegible] सन्तुष्ट हो सकते थे ?

भरत ने कहा—[illegible]

[illegible]

[illegible]

वरुण—वे ही लोग गयावाल हैं।

इन्द्र—गयावालों की उत्पत्ति कैसे हुई ?

वरुण—एक बार पितामह ब्रह्मा गया धाम में पिण्डदान करने के निमित्त आये थे। पार्वण श्राद्ध के निमित्त उन्होंने उस समय सात ब्राह्मणों की सृष्टि की थी। अन्त में जब वे लौटने लगे तब उन सबने हाथ जोड़कर कहा—विधाता, तुमने हमारी सृष्टि तो कर दी परन्तु हमारी जीविका का कोई विधान नहीं किया। यह सुनकर प्रजापति ने कहा—आज से तुम लोग इस गया-तीर्थ के ब्राह्मण हुए। जो यात्री फूल-चन्दन से तुम्हारे पाद-पद्म की पूजा नहीं करेगा और तुम्हें सन्तुष्ट करने में सफल नहीं हो सकेगा, उसकी गया-यात्रा सफल न होगी। बाद को ही वे सातों ब्राह्मण गयावाल के नाम से प्रसिद्ध हुए। ये सब कुलाङ्गार उन्हीं गयावालों के वंशधर हैं।

वरुण की यह बात समाप्त भी न हो पाई थी कि एक अल्पवयस्का विधवा आई और गयावाल महाशय के चरणों की पूजा करने के बाद उसने चौदह आने पैसे उनके हाथ पर रक्खे और सुफल देने की प्रार्थना की। परन्तु बड़ी रुखाई के साथ उसे उत्तर मिला कि चौदह रुपयों से कम में तुम्हारे माता-पिता को स्वर्ग नहीं भेजा जा सकता। वह बेचारी कितना रोई, चरण पकड़कर कितनी अनुनय-विनय की, परन्तु कुछ लाभ नहीं हुआ।

गयावाल की इस प्रकार की हृदयहीनता के कारण ब्रह्मा झुंझला उठे। उन्होंने कहा—वरुण, यह बेचारी बालिका रोती क्यों है ? सुफल लिये बिना ही क्यों नहीं चली जाती ?

वरुण—जी नहीं, इन लोगों को इस बात का दृढ़ विश्वास है कि गयावाल के सुफल बोले बिना गया आना ही निरर्थक हो जायगा, माता-पिता को स्वर्ग नहीं भेजा जा सकेगा। यह सुनकर नारायण ने कहा—पितामह ने भी अद्भुत जीवों की सृष्टि कर दी है! मुझे

तो आशङ्का हो रही है कि कहीं इस बार के श्राद्ध के कुश आग न उठें और उपद्रव मचाना आरम्भ कर दें।

इधर देवगण बातें कर रहे थे, उधर बालिका बेचारी गयावाल महोदय का चरण पकड़े रो रही थी। अन्त में अन्य यात्रियों, विशेषत उस बालिका के ग्राम में निवास करनेवाले यात्रियों ने बहुत अनुनय-विनय की और उसकी अवस्था का हाल विस्तारपूर्वक बतलाया, तब बड़ी रियायत के साथ उसे पांच रुपयों में सुफल मिला।

ज़रा ही देर के बाद उक्त शराबियों के साथ गुलाबबाई भी आकर उपस्थित हुईं। गुलाबबाई ने पण्डा जी के चरणों की पूजा की। बस, फूल की एक माला से तुरन्त ही उनके हाथ बाँध दिये गये। बाई जी के शरीर पर सोने के अलङ्कारों की अधिकता देखकर पण्डा जी ने कहा—पांच सौ रुपये लाओ, तब सुफल मिलेगा तुम्हें।

"इतने रुपये कहाँ पाऊं महाराज," यह कहकर गुलाब पण्डा जी का पैर पकड़कर रोने लगी। वेश्या को रोती देखकर लम्पट लोग बहुत ही दुःखी हुए। उनमें से एक तो फफक-फफककर रो पड़ा। दूसरा कहने लगा—छोड़ गुलाब, पैर तुम छोड़ दो मेरी रानी, पैर छोड़ दो। तुमने किस युग में किसका पैर पकड़ा है। दूसरे ही लोग तुम्हारा पैर पकड़ा करते हैं।

शराबियों ने परस्पर परामर्श किया कि आओ गुलाब को हटाकर हम लोग पण्डा जी के पैर पकड़ें और उनसे सुफल प्राप्त कर लें। यह अधिक अच्छा होगा, क्योंकि हमें पैर पकड़ने का अभ्यास है। इस निश्चय को कार्य-रूप देने में विलम्ब नहीं हुआ। [illegible] दूर हटाकर दोनों शराबियों ने पण्डा जी के दोनों पैरों को [illegible] और उनको [illegible] पैरों पर [illegible] दोनों को [illegible] [illegible] कि हम लोग [illegible] [illegible] महाराज।

शराबियों के मुंह से मदिरा की इतनी तीव्र गन्ध निकल रही थी कि उसके कारण पण्डा जी का अन्नप्राशन तक का अन्न निकल आना चाहता था। दुर्भाग्यवश उनके शरीर में इतना अधिक बल भी नहीं था कि दो-दो आदमियों को ठेलकर वे भाग सकें। नाक में कपड़ा ठूसते-ठूसते उन्होंने वेश्या से कहा—माई जी, तुम अपने इन गणों को बुला लो बाद को स्वेच्छा से जो कुछ दे दोगी वही लेकर मैं सतोष कर लूगा और तुम्हे सुफल दे दूगा।

पण्डा जी के मुह से यह बात सुनते ही वेश्या प्रसन्न हो गई। हँसती हुई जाकर उसने दो रुपये पण्डा जी के हवाले किये और प्रसन्न-भाव से सुफल प्राप्त करके शराबियों से बोली—मुझे सुफल मिल गया है, अब तुम लोग पण्डा जी को परेशान मत करो। परन्तु शराबी लोग इस तरह माननेवाले तो थे नहीं। उन्होंने कहा—कहा मिला सुफल तुम्हें? तुम्हारे हाथ में तो कुछ दिखाई नहीं पड रहा है। झूठी बात है यह।

शराबी लोग पण्डा जी की पोली पर बराबर माथा पटकते ही रहे, यहा तक कि एक ने उनके चरण-कमल पर ही वमन भी कर दिया। उन दोनो से अपने आपको छुडाकर भागना तो पण्डा जी के लिए सम्भव था नहीं, इससे छुटकारा प्राप्त करने के लिए उन्हें विवश होकर पुलिस की शरण लेनी पडी।

देवगण अभी तक ध्यानपूर्वक यही दृश्य देख रहे थे। किन्तु ब्रह्मा किस समय एकाएक वहां से चलते बने, इस बात का उनके साथियों को पता तक न चल सका। अन्त में उन्होंने जब देखा कि पितामह साथ में नहीं हैं, तब तेजी से पैर बढाते हुए सब लोग आगे की ओर चले। एक वृद्ध को पकड़ने में विलम्ब ही कितना लग सकता था! जरा ही दूर बढ़ने पर उनसे मुलाकात हो गई। इन सबको देखते ही ब्रह्मा ने कहा—भाई, यहां तो वेश्या का दान ग्रहण करके सुफल दिया जाता है, इसमें एक क्षण भी अब यहां रहना उचित नहीं

है। स्थान पर आकर देवगण ने तुरन्त ही सामान उठाया और स्टेशन की ओर रवाना हुए। रास्ते में उन सबने एक-एक पथरी ख़रीदी।

स्टेशन पर पहुँचकर वरुण ने कहा—देवराज, गया जिस प्रकार हिन्दुओं का सर्वश्रेष्ठ तीर्थ है, उसी प्रकार बौद्धों की दृष्टि में भी एक बहुत ही महत्त्व का स्थान है। एक मन्दिर में महात्मा बुद्ध की एक बहुत ही विशाल मूर्ति भी है। इसके सिवा एक पर्वत में एक बहुत बड़ी खोह है, जिसके सम्बन्ध में लोगों की धारणा है कि श्राद्ध करते समय सीताजी अपनी दाईं जांघ मोड़कर बैठे थे, उसी से यह खोह हो गई है। परन्तु [illegible] की उतावली के कारण वे दोनों ही स्थान हम लोग न देख सके।

पटना

पटना नगर का भ्रमण करने के बाद देवगण यदि गया जाते तो वहाँ से [illegible] आ सकते थे, [illegible] आवश्यकता न पड़ती और उन्हें [illegible] भी पड़ता। परन्तु [illegible] के कारण [illegible] न कर सके। [illegible] पटना [illegible] नगर का [illegible] [illegible] यहाँ पहुँचने पर [illegible] बिहार, [illegible], बांकीपुर [illegible] पटना [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible]

जैसे प्रतापशाली राजाओ की यही पर राजधानी थी और नीति-कुशल चाणक्य ने यही पर अपनी असाधारण राजनीतिज्ञता तथा परिमित अध्यवसाय का परिचय दिया था।

आवश्यकतानुसार जलपान तथा विश्राम आदि करने के बाद देवगण नगर में भ्रमण करने के लिए निकले। परन्तु जैसे-जैसे दिन अधिक बीत रहे थे, वैसे ही वैसे ब्रह्मा की व्यग्रता भी बढ़ती जा रही थी। घर लौटने के लिए वे बहुत ही अधीर थे। इसलिए उन्होंने आरम्भ में ही कह दिया कि भाई, केवल मुख्य-मुख्य स्थानो को देखकर ही यहां से रवाना हो जाना चाहिए, क्योंकि अब विलम्ब ठीक नहीं है।

वरुण पटना के कितने ही स्थानो को देखते हुए वहां की प्रायः सबसे ऊंची इमारत गोलघर के पास पहुंचे। उन्होंने कहा कि इस गोलघर का एक दूसरा नाम है 'गार्टिन्स फाली' अर्थात् गार्टिन्स साहब की मूर्खता। बिहार प्रदेश में एक बार बहुत बडा अकाल पड़ा था। इससे गार्टिन्स साहब ने सन् १८८४ ई० में बहुत-से रुपये खर्च करके यह इतनी बडी इमारत इसलिए बनवाई थी कि इसमें बहुत-सा अन्न सुरक्षित रक्खा जा सकेगा। परन्तु यह बिलकुल खाली पड़ा रहता है, किसी काम में नहीं आता। उंचाई इसकी एक सौ दस फुट है। इस पर चढ़कर बहुत-से लोग नगर की शोभा देखा करते हैं।

देवगण पटना-विश्वविद्यालय के भिन्न-भिन्न विभागो को देखने के बाद वहां के आयुर्वेदिक स्कूल में पहुंचे। देवगण विशेषतः ब्रह्मा को इस बात से बहुत ही संतोष हुआ कि बिहार की राजधानी पटना में सरकार की ओर से अंगरेजी चिकित्सा-विज्ञान के साथ ही आयुर्वेद की शिक्षा की भी व्यवस्था है। ब्रह्मा ने कहा—अंगरेजी चिकित्सा-पद्धति का इतना अधिक आदर होने के ही कारण हमारी सृष्टि के कितने मनुष्य अकाल में ही काल के गाल में जा रहे हैं। इसलिए इस

प्रकार की व्यवस्था यदि प्रत्येक प्रान्त में हो जाती तो आयुर्वेद-शास्त्र विस्मृति के गर्भ में जाने से बच जाता।

पटना देवी के मन्दिर के पास पहुँचकर वरुण ने कहा कि इन्हीं के नाम के आधार पर इस नगर का नाम पटना हुआ है। काली की मूर्ति इसमें स्थापित है। बेतिया के महाराज ने इस मन्दिर का निर्माण करवाया है। उसके बाद वे लोग महाराज रणजीतसिंह के बनवाये हुए हरमन्दिर के पास पहुँचे। वरुण ने बतलाया कि इस मन्दिर में गुरु गोविन्दसिंह की पादुका और उनका ग्रन्थ है। देवगण। पटना में जितने अधिक इमामबाड़े देखे, उतने उन्हें और कहीं नहीं देखने में आये।

वैद्यनाथ धाम

पटना में गाड़ी पर सवार होने के बाद ब्रह्मा ने वरुण [illegible] प्रकट की कि भाई, अब [illegible] चलो, और [illegible] कुछ नहीं है। परन्तु मुंगेर, [illegible] तथा भागलपुर आदि बड़े-बड़े नगरों को पार करने के बाद ट्रेन जब जसीडीह में पहुँची, तब वरुण ने आग्रह किया कि वैद्यनाथ धाम में हम लोगों को अवश्य चलना चाहिए। शिव का यह बहुत ही महत्त्वपूर्ण स्थान है।

वरुण की इस बात का समर्थन देवराज तथा धर्मराज ने भी किया। यह सुनकर पितामह ने कहा—अच्छी बात है। यहाँ हम लोगों ने इतने दिन व्यतीत किये, यहाँ एक दिन और सही। अन्त में वे जसीडीह में ही उतर गये। वहाँ ब्रांच लाइन की गाड़ी पर बैठकर थोड़ी ही मिनटों में वैद्यनाथ धाम जा पहुँचे।

[illegible] में वरुण ने कहा—[illegible] निर्माण के [illegible] हुआ [illegible] का [illegible]

हैं। बहुत सोच-विचार करने के बाद वह इस परिणाम पर पहुँचा कि महादेव को ही लाकर द्वार-रक्षक के रूप में लङ्का में स्थापित करना चाहिए। एक तो वे सब देवताओं में श्रेष्ठ हैं, दूसरे सीधे भी वे इतने हैं कि आसानी से डेली म लाये जा सकते हैं। यह सोचकर उसने तपस्या के द्वारा शिव को प्रसन्न करने तथा उनसे वर प्राप्त करने का निश्चय किया। परन्तु बाद को उसके मन में आया कि तपस्या करने की क्या आवश्यकता है? मैं कैलास पर्वत को ही उखाडकर क्यों न उठा लाऊँ और लङ्का म रख दू? मन में यह निश्चय करके लङ्केश्वर कैलास-पर्वत के समीप पहुच गया और वह उसे खींच-खींचकर उखाड़ने का प्रयत्न करने लगा। परन्तु उसका वह प्रयत्न सफल नहीं हो सका। अन्त में तपस्या के द्वारा शिव को प्रसन्न करके उसने वर प्राप्त कर लिया। शिव ने कहा—तुम मुझे उठाकर लङ्का ले चल सकते हो, परन्तु रास्ते में यदि कहीं रक्खोगे तब फिर मैं उठ न सकूँगा। यह शर्त स्वीकार करके रावण जब शिव को लेकर चला तब मैंने उसके पेट में प्रवेश करके उसे लघु-शङ्का से पीडित कर दिया। इधर वृद्ध ब्राह्मण के रूप में नारायण भी यहाँ आ पहुँचे। रावण की प्रार्थना से ब्राह्मणरूपधारी नारायण ने शिव को अपने हाथों में ले लिया और जब वह लघुशङ्का करने लगा तब उन्होंने उन्हें यहीं स्थापित कर दिया। वे ही शिव वैद्यनाथ के नाम से प्रसिद्ध हैं।

वैद्यनाथ जी का मन्दिर स्टेशन से अधिक दूर नहीं है। इसलिए बातें करते-करते वे जरा ही देर में पहुँच गये। पण्डों का दल उन्हें जसीडीह से ही परेशान कर रहा था। उनसे किसी प्रकार पिण्ड छुडाकर वे पहले शिव-गङ्गा के तट पर पहुँचे और स्नान तथा सन्ध्या-तर्पण आदि किया। बाद को वे मन्दिर में गये। वैद्यनाथ को स्नान कराने के लिए गङ्गाजल ले जाने का स्मरण देवगण को था नहीं, इससे मन्दिर के प्राङ्गण के कूप से जल खींचकर उन्होंने पूजन किया।

पवन ने कहा—जिस कूप से जल भरकर हम लोगों ने शिव जी को स्नान कराया है, उसके सम्बन्ध में कहा जाता है कि रावण ने उसे बाण से खोदा था और भिन्न-भिन्न तीर्थ-स्थानों के जल से उसे पवित्र किया था। इसी प्रकार शिव-गङ्गा तालाब के सम्बन्ध में भी कहा जाता है कि लघुशङ्का से निवृत्त होने पर पवित्र होने के लिए चरण के आघात से उसने यह तालाब खोदा था। पहले यह एक कुण्ड के रूप में था, किन्तु उसे सुधारकर अब स्नान के लिए पक्के घाट बनवा दिये गये हैं। वहाँ स्त्रियों के लिए पृथक घाट है।

दर्शन-पूजन से निवृत्त होने पर वेंकटेश ने वहाँ का गोवर्द्धन-मारवाड़ी-विद्यालय, आनन्द-संस्कृत कालेज तथा रामकृष्ण-विद्यापीठ देखा। बाद को वहाँ से रवाना हो गये।

तारकेश्वर

वैद्यनाथ धाम से चलकर वेंकटेश जब [illegible] ... वेंकटेश ने कहा—[illegible] ... श्री वैद्यनाथ जी के दर्शन कर लिये। [illegible] ... किन्तु [illegible] ... [illegible]

[illegible]

[illegible]

मिल रहा था। वाद्य नामप्रियो तथा अन्यान्य वस्तुओं की दुकानें तो काफी अधिक सख्या में थीं। यात्रियो में से किसी की गोद में बच्चा टें टें करके चिल्ला रहा था, किसी-का जेब कट गया तो किसी के अञ्चल के छोर से किसी ने पैसे खोल लिये। पूरी-मिठाई की दूकानो के पास दल के दल आदमी दोने में खाद्य सामग्री लिये हुए जल-पान कर रहे थे। स्त्रियां कहीं चूडी पहन रही थीं, कहीं शृंगार की चीजें या बच्चो के लिए खिलौने खरीद रही थीं। भिखारी लोग खंजडी की ताल पर गा-गाकर भिक्षा मांग रहे थे।

एक उपयुक्त स्थान ग्रहण करने के बाद पितामह ने कहा—वरुण, तारकेश्वर का वृत्तान्त बतलाओ।

पितामह की आज्ञा से वरुण ने कहा—तारकेश्वर पहले वन में एक साधारण पत्थर के रूप में पडे रहते थे। मुकुन्द घोष नामक एक व्यक्ति की गौ प्रतिदिन आकर उन पर अपने स्तनो से दूध की धारा चढा जाया करती थी। बाद को घर में जाने पर गौ दूध नहीं दे पाती थी। इससे मुकुन्द बहुत चिन्तित होता। बहुत कुछ अनुसन्धान करने के बाद जब एक दिन उसने वास्तविक घटना देख ली तब प्रत्यक्ष होकर तारकेश्वर ने उसे आदेश किया कि तुम सन्यासी होकर मेरा पूजन करो। मुकुन्द ने यथाशीघ्र उनकी आज्ञा का पालन किया। बाद को स्वप्न में महाराज वर्द्धमान को दर्शन देकर तारकेश्वर ने मन्दिर बनवाने का आदेश किया। इस प्रकार मन्दिर भी बन गया और मन्दिर के नाम काफी सम्पत्ति भी लग गई।

दूसरे दिन सवेरा होते ही एक ब्राह्मण ने आकर पूछा कि आप लोग कितने मूल्य की डाली बाबा को लगावेंगे? ब्रह्मा ने कहा—दो आनेकी।

यह सुनकर ब्राह्मण ने कहा कि दो आना दस पना में डाली नहीं लगती। इसके लिए कम से कम आठ आने खर्च करने होगे। ब्रह्मा ने कहा—अच्छी बात है, आठ ही आने दूंगा। तब उसने कहा—... जी की गद्दी के पास चलिए, पूजा के पैसे वहीं नकद देने होंगे।

ब्राह्मण के साथ जाकर देवगण ने देखा तो महन्त जी अपने कचहरी-घर में एक ऊँची गद्दी पर विराजमान थे। समीप ही उनके दीवान तथा अन्य कर्मचारी बैठे हुए थे। यात्रियों में से पूजा के निमित्त कोई रुपया, कोई अधेली, कोई सोने का टुकड़ा, कोई चाँदी का टुकड़ा दीवान के हाथ पर रख देता और चलता बनता। उसी समय पहुँचकर ब्रह्मा ने भी कहा—मेरे भी चार पैसे जमा कर लीजिए।

दीवान जी ठहाका मारकर हँस पड़े। महन्त जी महाराज की ओर सङ्केत करके उन्होंने कहा—महाराज, ये चार पैसे जमाकर रहे हैं पूजा के लिए।

महन्त जी ने कहा—नहीं, नहीं, फेंक दो इनके पैसे। चार को देवगण की ओर जरा कुछ क्रुद्ध-भाव से ताकते हुए उन्होंने कहा—भाई, तुम लोग भी क्या दिमाग चाटने के लिए आये हो? परन्तु ब्रह्मा के आग्रह तथा दीवान की सिफारिश के बाद उन्होंने कहा—अच्छा चार आने ले लो इनसे।

महन्त जी के पास से देवगण ब्राह्मण के साथ-साथ दूकान पर दालों के लिए चले। चलते-चलते ब्राह्मण ने कहा—हाँ, तो आपको कितने की दालें चाहिए?

"चार आने की।"

"वाह! चार आने की भी कहीं दालें मिलती हैं? किस देश के रहनेवाले हो आप लोग? क्या आप लोग यहाँ नये हैं जो चार आने का पेट भर भोजन खाना चाहते हैं? यहाँ दस रुपये से [illegible] [illegible] दालें मिलती हैं।

[illegible]

[illegible]

उनकी ओर डाली बढाई गई तब उन्होंने देखा कि डाली में कुल एक ओला*, एक केला, पांच चावल और दो-चार बिल्वपत्र हैं।

वरुण ने डाली हाथो में ले ली। तब ब्राह्मण ने उन्हें दूर से ही मन्दिर दिखा दिया और स्वय वही रह गया। उनके चले जाने पर उसने दूकानदार से अपने हिस्से के छ आने पैसे ले लिये। मन्दिर में प्रवेश करने के लिए भी द्वार पर दक्षिणा देनी पड़ी। अन्त में बडी कठिनाई से पूजा करके वे लोग चले। तारकेश्वर से देवगण सीधे कलकत्ता की ओर रवाना हुए।

कलकत्ता

हावडा स्टेशन पर देवगण की गाडी आ पहुँची। डिब्बे से झांककर देखने पर उन लोगों को ऐसा जान पडा कि मानो रेलवे लाइनों का यहां एक बडा-सा जाल बिछा हुआ है। जिस ओर वे देखते उस ओर लाइन ही लाइन दिखाई पडती। गाडियों की भी यहां सख्या नहीं की जा सकती थी। किसी लाइन पर मालगाडी खड़ी थी, किसी लाइन पर सवारी गाड़ी खड़ी थी, किसी लाइन पर माल या सवारी गाडी के कुछ डिब्बे खडे थे और किसी-किसी लाइन पर केवल इजन ही खडे-खडे धूम्रोद्गिरण कर रहे थे। किसी ओर से मालगाडी आ रही थी तो किसी ओर से कोई डाक या पासिंजर दौडी चली आ रही थी। किसी-किसी लाइन पर केवल इजन ही भों-भों करते हुए दौड रहे थे। प्लेटफार्म से चलकर कुछ गाडियां अपनी अभीष्ट दिशा की ओर बढ रही थीं और कुछ चलने को तैयार थीं।

* एक विशेष प्रकार का लड्डू जो तारकेश्वर और बर्द्धवान में ... है।

प्लेट-फार्म पर बहुत-से साहब, मेम तथा बंगाली बाबू टहल रहे थे। गाड़ी खड़ी भी न हो पाई कि कुली लोग डिब्बे-डिब्बे पर टिड्डी-दल की तरह टूट पड़े। पान-बीड़ी, चाय-मिठाई तथा फलवाले अलग अपनी सुरीली आवाज से यात्रियों को आकर्षित करने का प्रयत्न कर रहे थे। यात्रीगण भी अपना-अपना सामान स्वयं लेकर या कुली के मस्तक पर लादकर डिब्बे में से निकलने लगे। कितने ऐसे भी लोग थे, जिन्हें तीन-तीन, चार-चार दिन से स्नान-आहार करने का अवसर नहीं मिल सका था। उन लोगों की एक अपूर्व प्रकार की मुखश्री थी। जिन पर कोयले के कणों से वस्त्र भी काले हो गये थे। देखने में ऐसा जान पड़ रहा था, मानो ये लोग सीधे प्रेतपुरी से लौटे चले आ रहे हैं।

यात्रियों के साथ स्टेशन से बाहर आकर देवगण ने देखा तो कतार की कतार घोड़ा-गाड़ियाँ खड़ी थीं। वरुण ने कहा—पितामह, यहाँ गाड़ीवालों से मोल-तोल करने की आवश्यकता नहीं होती। प्रत्येक स्थान के लिए किराया निश्चित कर दिया गया है, वहाँ पहुँचकर चुपचाप पैसे दे दीजिए और अपना रास्ता लीजिए। अच्छा, तो अब कहाँ घूमने चलना होगा?

ब्रह्मा ने कहा—हाँ भाई, पहले गङ्गा से मेरी मुलाकात कराओ, बाद को और कहीं चलना होगा। देखो वरुण, यहाँ आने पर तो कुछ विचित्र ही प्रकार का भाव मेरे हृदय में उत्पन्न हो रहा है। जिस किसी ओर भी मेरी दृष्टि जाती है, उसी ओर ऐसा जान पड़ता है कि मानो यहाँ मेरा [illegible] है। [illegible]

[illegible]

लगा, मानो ऊँची-ऊँची अट्टालिकाओं की माला गूंथकर यह कलकत्ता नगरी बनाई गई है। उन अट्टालिकाओं के बीच-बीच में कितनी ही बडी-बडी चिमनियां भी दिखाई पड रही थीं, जिनमें से धुआं निकल रहा था।

गङ्गा जी के तट पर खडे होकर ब्रह्मा 'गङ्गा गङ्गा' कहकर फिर रोने लगे। यह देखकर वरुण ने कहा—भाई, आओ हम लोग पितामह को घेरकर खडे हो जायें। अन्यथा देश यह बहुत बुरा है। लोग देखेंगे तो खिल्लियां उडाने लगेंगे और पागल समझकर इनके ऊपर धूल या पानी के छींटे भी फेंकने लगें तो कोई आश्चर्य नहीं।

आखें मूंदकर ब्रह्मा गङ्गा की स्तुति करने लगे, जिसका आशय इस प्रकार है—हे गङ्गे, तुम समस्त संसार की जननी हो। मनोहर पुष्पमाला के समान तुम शिव के मस्तक पर सुशोभित हुआ करती हो। परन्तु आज मृत्युलोक में तुम्हारी यह कैसी अवस्था देखने में आ रही है? तुम्हारे प्रति लोगों में श्रद्धा-भक्ति नहीं रह गई है! तुम्हारे जल में लोग मल-मूत्र तथा श्लेष्मा का परित्याग करने लगे हैं! ऐसी दशा को प्राप्त होकर भी तुम भला किस सुख की कामना से यहां पडी हो? देवि, समस्त नदियों में अग्रगण्य होकर भी तुम कलकत्ता में कुछ कर नहीं सकी हो, यह देखकर मैं आश्चर्य में पड़ गया हूं। तुम समस्त गुणों की आधार हो। क्या इसी कारण से तुमने अंगरेजों की अधीनता स्वीकार की है? तुम्हारा चरण-कमल संसार-रूपी महासमुद्र की तरणी के समान है। तुम्हारे जल के एक कण का स्पर्श करके भी मनुष्य देवलोक से भी अधिक दुर्लभ स्थान प्राप्त करने में समर्थ होता है। परन्तु यह जानकर भी जब लोग तुम्हारी उपेक्षा करते हैं, तब तुम किस आशा से इस भूमण्डल में पड़ी हो? वत्से, मैं तुम्हारे सलिल का स्पर्श करके रो रहा हूँ। और मत रुलाओ मुझे। तुम्हें देख नहीं पाया, इसलिए रास्ते भर मैं रोते ही रोते आया और यदि तुम्हें मैं आज भी नहीं देख पाता हूँ, तो तुम्हारे जल में

जीवन का परित्याग कर दूंगा। तुम जानती नहीं हो कि किसलिए मैं यह जीर्ण शरीर लेकर भी स्वर्ग छोड़कर इस नरक में आया हूं। अंगरेजी सरकार ने तुम्हें ऐसा कौन-सा सुख दे रखा है कि तुम अपने वृद्ध पिता को भूल जाओगी ? जल में अंगरेजों की सैकड़ों तर-णियां तैर रही हैं, तट पर उनका बसाया हुआ मुख्य नगर कलकत्ता विराजमान है, क्या इसी सुख से मुझसे स्नेह, ममता का परित्याग कर दिया है तुमने ? क्या इसी सुख से यहां स्थायीभाव से जम गई हो ?

भागीरथी ने अपनी तरङ्गमाला से कहा—लहरियो, जरा आंख उठाकर देखो तो, तट पर खड़े-खड़े मेरे वृद्ध पिता रो रहे हैं। देखो, देवराज, जल के अधीश्वर, जिनके चरण से मेरी उत्पत्ति हुई है, वे जगत्पति नारायण, ये सब कुण्ठितभाव से मेरे तट पर खड़े हैं। उनका कष्ट देखकर मुझे भी बड़ा दुःख हो रहा है। भारतवर्ष में इन देवगण का इतना माहात्म्य है कि इन्हें स्मरण किये बिना कोई किसी कार्य का श्रीगणेश ही नहीं किया करता। यहां के एक-एक आदमी का यह कर्तव्य है कि वह प्रतिदिन प्रातः, सायं तथा मध्याह्न काल में इन देवगण का स्मरण किया करे। आज वही भारत है और वे ही ये देवगण हैं। पर उपेक्षित भाव से नगरवासियों की ओर ताक रहे हैं। इनकी यह अवस्था देखकर मेरा हृदय विदीर्ण हुआ जा रहा है। [illegible], तुम्हें मालूम है कि [illegible] मेरे ही [illegible] कहे हैं! [illegible] तुम्हें मालूम है कि [illegible] किन्तु आज इनके इस कष्ट के कारण [illegible] मैं ही उनके कारण! [illegible] देखा और भी बढ़ गई है। [illegible], यदि [illegible] सुख का परित्याग [illegible] कलकत्ता में जितने भी बड़े-बड़े आदमी हैं, [illegible] वे सभी [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible]

समारोह देखने के लिए आते। अब तक उनके प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए तोपें दगने लगती। जाने दो, कलि के कुलाङ्गार कुछ करें या न करें, इससे हमारा मतलब नहीं है। हम लोगों को तो अपने कर्त्तव्य का पालन करना है। इसलिए तुम सब मिलकर शीघ्रतापूर्वक उनके चरण धो दो।

तरङ्गमाला ने तट पर धड़ाम-धड़ाम टक्कर मारा, परन्तु देवगण के चरणों में पद-त्राण देखकर चरण धोये बिना ही वह लौट गई। तब कलकल शब्द से रोते-रोते जाकर गङ्गा ने पितामह के चरणों में प्रणाम किया।

गङ्गा को देखते ही ब्रह्मा प्रेम से विह्वल हो उठे। उन्होंने कहा—आ बेटी, आ। रास्ते भर रोते-रोते आया हूँ मैं तेरे लिए। परन्तु तू इतनी निष्ठुर हो गई है कि जरा-सा दिखाई तक नहीं पड़ी! तेरा शरीर इतना मलिन क्यों है? शरीर तेरा इस प्रकार कान्तिहीन और आभरणशून्य क्यों हो गया है?

गङ्गा ने कहा—हे पिता, जरा मेरी दशा तो देखो। कितनी दृढ़ता के साथ बाँधी गई हूँ मैं! इस बन्धन से मुक्त होकर एक पग भी चलना तो सम्भव है नहीं मेरे लिए।

विधाता ने एक बार पुल की ओर देखा। देखते ही आतङ्क से उनका हृदय पूर्ण हो गया। विस्मय से अभिभूत होने के कारण उनकी दृष्टि उसी ओर लगी रह गई।

वरुण ने कहा—पहले-पहल जब यह पुल बना है तब इसे तोड़ने का प्रयत्न शक्ति भर किया था हमने। साइक्लोन (समुद्री तूफ़ान) को भी नियुक्ति की गई थी। उसने भी बहुत थोड़े समय तक युद्ध किया था। कहीं सारा बंगाल नष्ट न हो जाय, इसी आशङ्का से अधिक बल का प्रयोग नहीं कर सका वह। नदी के वक्ष पर तैरनेवाला इस प्रकार का पुल कोई और नहीं है। अठारह लाख रुपये खर्च हुए हैं इसके बनने में। १५३० फ़ुट लम्बा है यह और ४८ फ़ुट चौड़ा।

१८७४ ई० के अक्टूबर मास में पहले-पहल खुला है यह। इस पुल के द्वारा हावड़ा और कलकत्ता को मिला दिया गया है।

गङ्गा ने कहा—पिता जी, तुम विधाता हो। तुम्हारा काम है सब लोगों के भाग्य का विधान करना। भला तुम्हारे चरणों में मैंने ऐसा कौन-सा अपराध किया था जो तुमने मेरे भाग्य में इस तरह का दु:ख, इस तरह का क्लेश लिख दिया है! देव-कुल, असुर-कुल और नर-कुल में क्या और भी कोई मेरे समान दुखिया है, जिसे निरन्तर दुःख के अगाध सागर में ही डुबकियाँ लगानी पड़ती हों? राजा जो कुछ करता है, इस मतलब से करता है कि लोगों का दुःख दूर हो। परन्तु वही राजा मुझ अबला पर अत्याचार करने में शक्ति भर कुछ उठा नहीं रखता है। स्थान-स्थान पर मुझे बाँध रक्खा गया। बाँदी के समान मुझसे जहाज और स्टीमर खिंचवाने-खिंचवाते वह मेरी कमर तोड़े डाल रहा है! परन्तु इतने से भी उसकी इच्छा पूरी नहीं हुई। एक सपत्नी भी लाकर बैठा दी है उसने मेरा दाँत खट्टा करने के लिए!

"यह क्या कहती हो पुत्री! कोई तुम्हारी सपत्नी भी है यहाँ?"

"हाँ पिता जी, यह रेलगाड़ी एक प्रकार से मेरी सपत्नी हो गई है। [illegible] धर्म, धन और [illegible] के [illegible] और [illegible] हूँ, [illegible] हूँ [illegible] गोद में स्थान [illegible] रही हूँ। [illegible] रहे हैं। [illegible] नौकाओं [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

भक्ति किया करते थे। परन्तु उनके मन से वह भाव भी क्रमशः दूर हटता जा रहा है। बात यह है कि वह जान-बूझकर जीवों को ढो-ढोकर वाराणसी आदि स्थानों में, जो स्वर्ग के द्वार-स्वरूप हैं, बात की बात में रख आती है। इसके ये सुख के दिन देखकर मेरे सारे मगर घड़ियाल तथा कछुए आदि निकल भागे हैं और स्टेशन-मास्टर आदि के रूप में वहां विराजमान हो रहे हैं। मेरे अधिकार से मछली मेंढक तक निकल गये हैं और वे सब रेलवे के आफिसों में छोटे-मोटे क्लर्क बन बैठे हैं। धीवर भी उन आफिसों में पहुंचकर ऊंचे-ऊंचे पदों पर विराजमान हो गये हैं और वहां भी समय-समय पर कटिया लगाकर वे लोग उन मछलियों का शिकार कर ही बैठते हैं। पिता जी मेरे सारे सुखों का अन्त हो चुका है अब। निरर्थक दुःख भोगने के लिए आपने मुझे क्यों छोड रक्खा है यहाँ ? एक तो मैं यों ही दुःख से कातर हूँ, दूसरे कितने ही वृद्ध पिता और मातायें आ-आकर अपनी प्राणों से अधिक प्रिय सन्तान के शव का प्रवाह करके आर्तभाव से रोती हैं मेरे तट पर। पति आकर पत्नी को चिता पर रखकर विलाप करता है और धैर्य्य का अवलम्बन करने में असमर्थ होकर—उस जलती हुई चिता पर कूद पडने का उद्योग करता है। कितनी ही सती-साध्वी तरुणियाँ पति की अन्त्येष्टि क्रिया के सम्पादन के लिए आया करती हैं हमारे तट पर। वे भी रो-रोकर व इतना रोती हैं पिता जी! मेरा जब सभी कुछ जा चुका है तब ये ही हृदय-विदारक दृश्य मुझे क्यों देखने पड़ते हैं।

गङ्गा उस समय बहुत ही अधीर थीं। उनकी दुःख-गाथा किसी प्रकार समाप्त ही नहीं हो पाती थी। कुछ क्षण तक सिसकती रहने के बाद उन्होंने फिर कहना आरम्भ किया—आजकल देश की ही ऐसी दशा हो गई है? पहले तो वृद्ध माता-पिता को छोडकर उपयुक्त पुत्र भागता नहीं था। पहले तो पति पत्नी को असहाय करके भरे यौवन में ही संसार से चला नहीं जाया करता था! पहले तो पत्नी

पति से विमुख होकर उसे इस प्रकार का मनस्ताप दिया नहीं करती थी ! देश की ऐसी अवस्था क्यों हो गई पिता जी ? कालचक्र के हेर-फेर के कारण क्या आपके हाथ का लिखा हुआ भी उलटा हो गया है ?

ब्रह्मा ने कहा—नहीं बेटी, मेरे हाथ का लिखा हुआ ठीक ज्यों का त्यों बना हुआ है । परन्तु लोगों ने शारीरिक नियमों का उल्लंघन करते-करते इस प्रकार की दुरवस्था उत्पन्न कर दी है । जो भी हो, भागीरथी, तुम्हारे दुःख का हाल सुनकर मैं भी बहुत दुःखी हुआ हूँ । यह सब भाग्य का फेर है । भाग्य पर निर्भर रहकर तुम अपने मन का दुःख दूर करो ।

गङ्गा ने कहा—भाग्य का फेर है अवश्य पिता जी, किन्तु मेरे समान भाग्यहीन और कौन है ? देखते तो हो कि कैसा खूब कस-कसकर मुझे बाँधकर ही नहीं सन्तोष कर लिया उन लोगों ने । कितना भार लादे रहते हैं रात-दिन । घोड़ागाड़ियों का तो बराबर तांता बँधा रहता है मेरे ऊपर । हजारों आदमी इस पार से उस पार और उस पार से इस पार मेरे ऊपर से होकर आते-जाते रहते हैं । सभी के भाग्य में कम से कम इतना सुख तो अवश्य ही लिखा होता है कि यह जरा देर सुख विश्राम कर लें । परन्तु मेरे भाग्य में वह भी नहीं लिखा है । मुझे तो निमेषमात्र का भी समय नहीं मिल पाता । रात्रि के समय रह रहकर दूर हो जाने पर जब मैं जरा-सा दम लेने का विचार करती हूँ, उसी दम धक्‌धकाती हुई गाड़ी मेरे वक्ष पर से होकर निकल जाती है और उसके कारण मेरी निद्रा भङ्ग हो जाती है । इसके सिवा [illegible] [illegible] के कारण [illegible] होता है ।

[illegible]

ा नाम क्या है ? प्रश्न उसने अंगरेजी में किया था इसलिए उसका ाज कुलियो की समझ में न आया। परन्तु अनुमान उनका यह हुआ कि साहब इस पेड के कटने का समय जानना चाहता है। इससे एक कुली झट बोल उठा—कल कटा। बस, उसी समय से इस स्थान का नाम पड गया कलकटा (Calcutta)। बाद को इसे सुधार कर लोग कलकत्ता कहने लगे।

वरुण ने ब्रह्मा का हाथ पकड लिया। उन्होंने कहा—यहां सडक पर बडी भीड होती है। बहुत सावधानी के साथ चलना होगा। अन्यथा एक बार यदि साथ छूटा, तब फिर मुलाकात होनी असम्भव हो जायगी। यह कहकर आगे आगे वे बडा बाजार की ओर चले। देवराज तथा नारायण ने भी उनका अनुसरण किया। सडक पर अंगरेज, बंगाली, यहूदी, मुसलमान, काफ्री, चीनी, काबुली आदि प्रायः सभी देशों के लोग चल रहे थे। ट्राम, मोटर तथा घोडा-गाडी आदि के कारण रास्ता मिलना कठिन हो रहा था। एक ओर बैलगाडियों का अलग तांता था। इन सबके कारण पैदल चलनेवालों के लिए रास्ता मिलना कठिन था। सडक की बगल में आमने-सामने कतार की कतार ऊंची-ऊंची अट्टालिकायें थीं। उनके नीचे क्रम-बद्ध भाव से दूकानें सजी हुई थीं। उन सबकी शोभा देखकर देवगण चकित हो गये। ब्रह्मा ने कहा—वरुण, ऐसा नगर तो मैंने कभी देखा ही नहीं।

नारायण ने सड़क पर चलनेवालों की इस प्रकार की व्यग्रता का कारण जानने की इच्छा प्रकट की। तब वरुण ने कहा—ये सभी लोग पैसे की खोज में दौड़ रहे हैं। इस कलकत्ता नगरी में लक्ष्मी की अधिकता है। यहां वे भिन्न-भिन्न रूपों में विराजमान हैं। जो लोग चतुर हैं, वे यहां राह चलते पैसा पैदा कर रहे हैं और जो लोग हम लोगों की तरह के हैं, उन्हें पेट के लिए भी लाला पड़ा रहता है।

बडा बाजार में पहुंचकर देवगण ने एक दोमंजिले पर स्थान ग्रहण किया। वहां सामान आदि रखकर उन्होंने कुछ भोजन किया,

खड़ा रहता है और तनख्वाह के रुपये हाथ में आते ही साफ हो जाते हैं। इन बाबुओं में से कितने तो ऐसे होंगे जो पहुँचकर देखेंगे कि घर में तेल नहीं है, नमक नहीं है या ये सब चीजें हैं तो कोयले के ही बिना चूल्हा नहीं जल सका है। इससे फिर उलटे पाँव इन्हें बाजार दौड़ना पड़ेगा। इधर गृहिणी की माँगें अलग पेश होती रहती हैं। वे रोज किसी न किसी चीज के लिए मचलती रहती हैं और कभी-कभी माँग न पूरी होने पर आत्महत्या तक करने की धमकी देती रहती हैं। ये बेचारे सबेरे आधा पेट खाकर दौड़ते हुए आफिस जाते हैं, वहाँ दिन भर अफसरों की घुड़कियाँ सहते रहते हैं, और लौटकर जब घर जाते हैं तब अन्त गृहिणी की डाँट खानी पड़ती है।

विधाता ने कहा—देखो वत्स, मैं अपने मनुष्यों के भाग्य में दुःख लिखता अवश्य हूँ, परन्तु किस व्यक्ति को कितना दुःख मिलेगा और किस व्यक्ति को कितना सुख मिलेगा यह सब विस्तारपूर्वक मैं नहीं लिखता हूँ। यह सब लिखने के लिए मुझे न तो समय होता है और न मनुष्य के मस्तक में स्थान इतना ही होता है। लोगों को जो इतने क्लेश मिलते हैं, उनके कारण वे स्वयं होते हैं। लोगों की मूर्खता के कारण वे नाना प्रकार के अभावों तथा दुःखों की सृष्टि करते रहते हैं। मैं तुम्हें विश्वास दिलाकर कहता हूँ कि ये बाबू लोग बाबूगिरी को छोड़ कर यदि स्वाधीन रूप से खेती-बारी करें, अथवा किसी रोजगार या व्यापार में लग जायें तो अवश्य सुखी हो सकते हैं। [illegible]

[illegible]

को और कहा कि ऐसा ही एक क़िला यदि हमारे पास भी होता तो समय-समय पर भागकर हमें क्षीर-सागर में क्यों [illegible] पड़ती।

फोर्ट विलियम को देख लेने के बाद वरुण अक्टरलोनी मनुमेंट के पास पहुँचे। उन्होंने कहा कि यह जनरल अक्टरलोनी की स्मृति-रक्षा के निमित्त बनाया गया है और इस पर चढ़कर शहर का दृश्य देखा जा सकता है। अन्त में सब लोग उस मनुमेंट के ऊपर गये। [illegible] ब्रह्मा तक वरुण के सहारे से ऊपर चढ़कर देखने का लाभ नहीं [illegible] कर सके। वहाँ से चलकर प्रेसिडेंसी जेल के पास से होते हुए वे स्थान पर आगये।

दूसरे दिन निद्रा भंग होते ही ब्रह्मा धोती उठाकर गंगा-स्नान के लिए चल पड़े। नारायण आदि ने भी उनका अनुसरण किया। [illegible]-घाट पर ये लोग पहुँचे। घाट पर स्नानार्थियों का अच्छा जमाव था। परन्तु बंगाली उनमें प्रायः नहीं के बराबर थे। अधिकांश बिहार और संयुक्त प्रान्त के निवासी थे, जो जीविका-वश यहाँ पड़े हुए थे। भक्तिपूर्वक स्नान करके वे सब गंगा जी की स्तुति कर रहे थे। नौकाओं की भी वहाँ अधिकता थी।

एक बार चारों ओर ताककर पितामह ने [illegible] किया। [illegible] और [illegible] का ही उन्होंने [illegible] था। [illegible] कहकर [illegible] किया। [illegible] कहा—[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

आफिस आदि देखते तथा वरुण से उनके सम्बन्ध की आवश्यक जानकारी प्राप्त करते हुए [illegible] आफिस में पहुँचे। वरुण ने बतलाया कि यही आफिस एक प्रकार से कलकत्ते के सारे व्यापार का द्वार है, क्योंकि इसी आफिस के द्वारा यहाँ का माल बाहर भेजा जाता है और बाहर का माल यहाँ लाया जाता है। इधर इन लोगों में ये बातें हो ही रही थीं कि इतने में एक बड़े दल ने आकर उन्हें घेर लिया और तरह-तरह के [illegible] लगाने लगा। ब्रह्मा ने बड़ी कठिनाई से यह कहकर कि हमें व्यापार से प्रयोजन नहीं है, उनसे पिंड छुड़ाया।

[illegible] तथा चाँदनीबाजार, पुराना चीनाबाजार आदि कितने ही स्थानों को देखते हुए स्थान की ओर लौटे जा रहे थे, इतने में एक स्थान पर खड़ा हुआ एक व्यक्ति पानी के कल को बार-बार छेड़ रहा था। पितामह ने देखा तो वे यम थे। यम ने भी दौड़कर पितामह को प्रणाम किया। साधारण कुशल-प्रश्न के बाद यम ने बतलाया कि मैं तो शहर, काँचड़ापाड़ा, मदनपुर, चाकदा आदि स्थानों से होकर आनन्द से कलकत्ता आया हूँ। कलकत्ता में मेरा मन जम गया है। अवश्य परन्तु रह न सकूँगा। यहाँ पानी का कल खराब कर रहा हूँ मैं। अच्छा आप लोग ठहरे कहाँ हैं?

नारायण ने कहा—बड़ा बाजार में। चलो न हमारे स्थान पर। उनकी यह बात समाप्त भी न हो पाई कि ब्रह्मा बोल उठे। उन्होंने कहा—नहीं भाई, वहाँ चलने का काम नहीं है। वहाँ गृहस्थों के घर हैं। उन गृहस्थों के छोटे-छोटे बच्चे हैं। उन पर यदि कहीं तुम्हारी दृष्टि पड़ गई तो मामला गड़बड़ होगा।

यम ने कहा—सबके ऊपर तो मेरी दृष्टि लगती नहीं। जिनके बाल-बच्चे [illegible] होते हैं, उनके घर की ओर मैं दृष्टिपात नहीं करता। मेरी दृष्टि जाती है उन भाग्यहीनों के घर की ओर जो [illegible] गृहस्थों के सुख का अनुभव करते

ब्रह्मा ने कहा—चुप रहो यम, तुम बड़े [illegible] हो। [illegible] मुझे कितनी बातें सुननी पड़ती हैं। उपद्रव तुम [illegible] लोग दोषी मुझे ठहराते हैं। तुम्हारा तो यह [illegible]

यम ने अपने को निरपराध प्रमाणित करने के लिए [illegible] युक्तियाँ उपस्थित कीं। अन्त में उन्होंने कहा—इस समय आप [illegible] आज्ञा दीजिए, ज़रा एक बार [illegible] है। [illegible] वहाँ कैदियों के खाने-पीने का [illegible] प्रबन्ध है [illegible] है। इसलिए मैं दिन में जाने का साहस नहीं कर सका।

यम के विदा होने पर देवगण अपने स्थान पर गए। [illegible] व्यतीत करने के बाद सवेरा होने पर ब्रह्मा जी [illegible]-स्नान को [illegible] चले। नारायण आदि ने स्वभावतः उनका अनुसरण करना [illegible]। इस बार वे लोग [illegible] के घाट पर गए। [illegible] ने विधाता के सामने अपनी दुःख-गाथा छेड़ दी। उन्होंने बड़ी अधीरता प्रकट की। विधाता ने बड़ी कठिनाई से उन्हें शान्त किया। अन्त में स्नान-सन्ध्या-तर्पण आदि से निवृत्त होकर वे सब स्थान को और लौटने जा रहे थे, इतने में [illegible] चिल्ला उठा—मेरा पेपर कौन ले गया? मेरा पेपर कौन ले गया?

[illegible] के साथ कहा—[illegible] हुआ। [illegible]

[illegible]

दूसरे दिन ब्रह्मा की तबीअत कुछ खराब थी। इसलिए शाम के चार बजे से पहले देवगण घूमने के लिए नहीं निकले। आज वे मिर्जापुर स्ट्रीट से चलकर अलबर्ट कालेज, रिपन कालेज, चाँपातल्ला आदि होते हुए शियालदह स्टेशन पर पहुँचे। वरुण ने देवगण को बतलाया कि कलकत्ता के उस ओर जैसे हावड़ा स्टेशन है, वैसे ही इस ओर शियालदह स्टेशन है। यहाँ रेलवे के कई महत्त्वपूर्ण आफिस हैं। ईस्टर्न बंगाल रेलवे यहीं से आरम्भ हुई है और यह पद्मा नदी के तट पर गोयालन्द नामक स्थान तक गई हुई है।

शियालदह स्टेशन से चलकर देवगण चौबीस परगना की मुंसिफी अदालत, कैनिंग बाजार आदि से होते हुए चितपुर रोड के दक्षिणी अंश के एक बाजार में पहुँचे। वरुण ने कहा—टिरेटा नामक एक अँगरेज का लगवाया हुआ यह बाजार है। इसी लिए लोग इसे टिरेटा बाजार कहते हैं। आजकल यह बाजार बर्दवान के महाराज के अधिकार में है। विभिन्न प्रकार की खाद्य सामग्रियों के अतिरिक्त पक्षियों की भी इस बाजार में अच्छी बिक्री होती है।

कुछ दूर आगे बढ़ने के बाद विधाता कुछ थकावट के कारण इन्द्रादि के साथ स्थान पर चले गये। इधर नारायण, देवराज तथा वरुण बहूबाजार आदि कई स्थानों को घूम फिरकर बैठकों के बाद वहाँ रात को पहुँचे।

दूसरे दिन भी विधाता की तबीअत कुछ ठीक नहीं मालूम पड़ रही थी। उन्होंने कहा—वत्स, मुझे आज भी [illegible]

पेट ही नहीं भरने में आता। खटमल की तरह ये सब [illegible] रक्त चूस रहे हैं। किस्सा-चोट के लिए [illegible] आपस में [illegible] झगड़ते रहते हैं। चोरी की [illegible] पड़ी रहने के लिए [illegible] उनको भी कम दुकाना नहीं [illegible]। [illegible] दुकानदार [illegible] यहाँ से मेरे यहाँ और मेरे यहाँ से दूकानदार [illegible] यहाँ नाचते [illegible] पड़ता है। जितने चोर डाकू और ठग मेरे मन्दिर में [illegible] दूसरों का सर्वनाश करने का प्रयत्न करने [illegible]।

काली जी को सान्त्वना देकर देवगण [illegible]।

स्वर्ग

कलकत्ता से चलकर देवगण [illegible] बंगाल [illegible] के मुख्य केन्द्र नवद्वीप में भी दो-एक दिन व्यतीत करने की [illegible] बड़ी इच्छा थी, परन्तु मृत्युलोक में अब [illegible] किसी प्रकार भी नहीं लग पाता था। इसलिए वे और कहीं [illegible] सके। दार्जिलिंग [illegible] एक छोटी गाड़ी पर सवार होकर जाना पड़ा था। [illegible] [illegible] ऊपर [illegible] थी। [illegible], जितने [illegible] दिखाई पड़ रहे थे। इस [illegible] बुद्धि की प्रशंसा किये बिना नहीं रह सके। [illegible] करते हुए [illegible] [illegible] [illegible] किये बिना [illegible]।

दार्जिलिंग [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हुई [illegible] [illegible] [illegible] हुए हैं [illegible]।

[illegible]

ज्ञा मय । आदर-सहित पूजा प्राप्त किया करते थे । आचार-भ्रष्ट, जातिच्युत तथा पतित व्यक्ति उनकी व्यवस्था के अनुसार प्रायश्चित्त करके फिर समाज में अपना पूर्व स्थान प्राप्त करने के अधिकारी हुआ करते थे। परन्तु आजकल ब्राह्मण लोग स्वयं पतित हो गये हैं। उनमें वह शक्ति नहीं रह गई है कि अब वे दूसरों के प्रायश्चित्त का विधान कर सकें। अब तो वे उदरपूर्ति के लिए नीच से नीच सेवावृत्ति का [illegible] करने में ज़रा-सी सङ्कोच का अनुभव नहीं करते। सुखाद्य-कुखाद्य का ध्यान उन्हें नहीं है।

देवगण ब्राह्मणों के ही समान अन्यान्य वर्णों के लोग भी कर्म-च्युत हो गये हैं। शूद्रों की जितनी जातियां हैं, उन सबने अपने जातिगत व्यवसाय का परित्याग कर दिया है। लोहार-कुम्हार आदि क्रमशः लोहे और मिट्टी का काम छोड़कर बाबूगिरी के चक्कर में पड़े हुए हैं। अपने समवयस्क ब्राह्मणों को प्रणाम न करके वे लोग अब उनसे हाथ मिलाकर [illegible] करते हैं। खाने-पीने में अब किसी को जाति-भेद का [illegible] नहीं। कितने कुलीन से कुलीन ब्राह्मण आजकल निम्न [illegible] होकर शूद्रों के साथ खान-पान हैं। स्त्रियां भी उत्तरोत्तर सदाचार की मर्यादा का उल्लंघन करती जा रही हैं। स्त्रियों तथा पुरुषों [illegible] में भी आजकल आकाश-पाताल का अन्तर हो गया है। [illegible] स्त्री-समाज में इतनी अधिक आगई है कि आजकल [illegible] प्रसव करती हैं उस उतनी नौकरानियों की आवश्यकता [illegible] क्योंकि वह स्वयं बच्चों का पालन-पोषण नहीं कर पाती।

पु[illegible] युवक युवतियों की अवहेलना की भावना का उल्लेख [illegible] न कहा—आजकल के युवक स्त्री के बाल [illegible] में ही अपने जीवन की सार्थकता [illegible] न करेंगे, माता-पिता [illegible] जीवन-[illegible] किन्तु स्त्री की मनस्तुष्टि [illegible]

अवश्य खरीदेंगे। युवतियाँ [illegible] पति तथा परिवार के अन्य लोगों की सुविधा या असुविधा की ओर ध्यान न देकर प्रतिदिन नई नई आवश्यकताओं की [illegible] करती हैं और [illegible] यदि सब वस्तुएँ न मिलीं तो [illegible]। [illegible] हीन हो गये हैं। प्रजा के सुख दुःख की ओर ध्यान न देकर वे [illegible] रात-दिन अपना कोष भरने के फ़िकर में पड़े हैं। [illegible] परम पूज्य माता-पिता को अब [illegible] स्थान में न रखकर नीचे के अस्वास्थ्यकर कमरों में रखा जाता है [illegible] के कमरों में निवास होता है पति-पत्नी का। [illegible] ब्राह्मणों को भोजन न कराकर [illegible]। देवी-देवताओं की पूजा [illegible] साधन भर रह गया है [illegible] में मनुष्य में अब [illegible] हो उठा है। इसलिए, पृथ्वी का ध्वंस कर डालना चाहता हूँ मैं।

"साधु, साधु" कहकर चारों ओर सभासद् [illegible] करने लगे। अन्त में सभापति के आसन से भाषण करते हुए पितामह ने कहा—पृथ्वी का एक साथ ध्वंस न करके मैं क्रम से उसका ध्वंस करना चाहता हूँ। इसलिए उपस्थित महानुभावों में से इस विषय में कौन क्या कार्य कर सकेगा, यह जान लेना आवश्यक है।

पितामह की यह बात सुनकर सबसे पहले [illegible] खड़ा हुआ। उसने कहा—मैं अकेला ही सारे [illegible] बाद को और-और [illegible] [illegible]